नवस्मरणादिसंग्रह

卐

संग्राहिका

साध्वीजी महाराज

श्रीविचारश्रीजी तथा श्रीदमयन्तीश्रीजी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥णमोत्थु णं समणस्स भगवओ महइमहावीरवद्धमाणसामिस्स॥

नवस्मरणादिसंग्रह

卐

संग्राहिका

साध्वीजी महाराज

श्रीविचारश्रीजी तथा श्रीदमयन्तीश्रीजी

卐

स्वर्गस्थ पूज्यपाद साध्वीजी श्री १००८

श्रीवसन्तश्रीजी महाराजकी

पुण्य स्मृतिमें—

नागोर-बीकानेरादिनगरवास्तव्य श्रावक-श्राविकाओंकी ओरसे

भेट

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशक
नागोरादिगृहस्थवर्गकी ओर से
पं. नगीनदास केवळशी शाह
भाटवाडो : अहमदाबाद

वि. सं. २०२०] वीरनि. सं. २४९० [ई. स. १९६४

: मुद्रक :
जयंति दलाल
वसंत प्रि. प्रेस
घीकांटा अहमदाबाद

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान श्री पार्श्वनाथ स्वामि

भांडुकतीर्थ

(श्री साराभाई नवाबका सौजन्यसे)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न्यायाम्भोनिधि युगप्रधानाचार्य श्री १००८

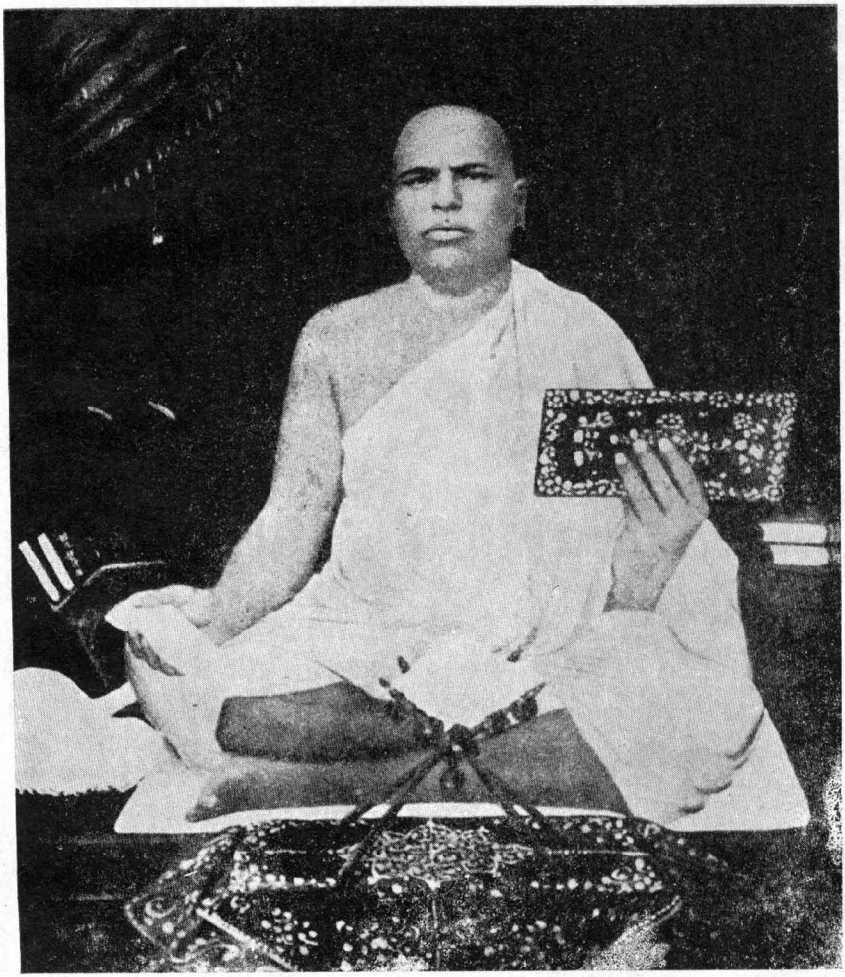

श्रीमद्विजयानन्दसूरीश्वरजी महाराज

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूज्यपाद आचार्य भगवान् श्री १००८

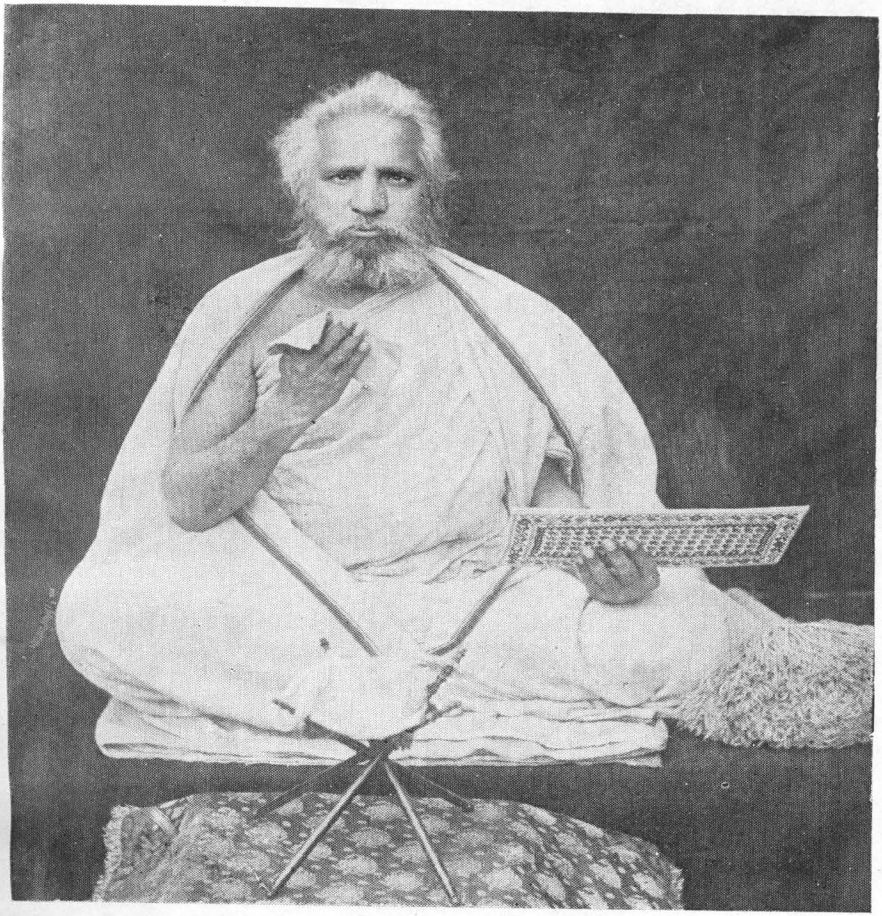

श्री विजयकमलसूरिजी महाराज

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंजाबदेशोद्धारक शासनप्रभावक आचार्य
भगवान् श्री १००८

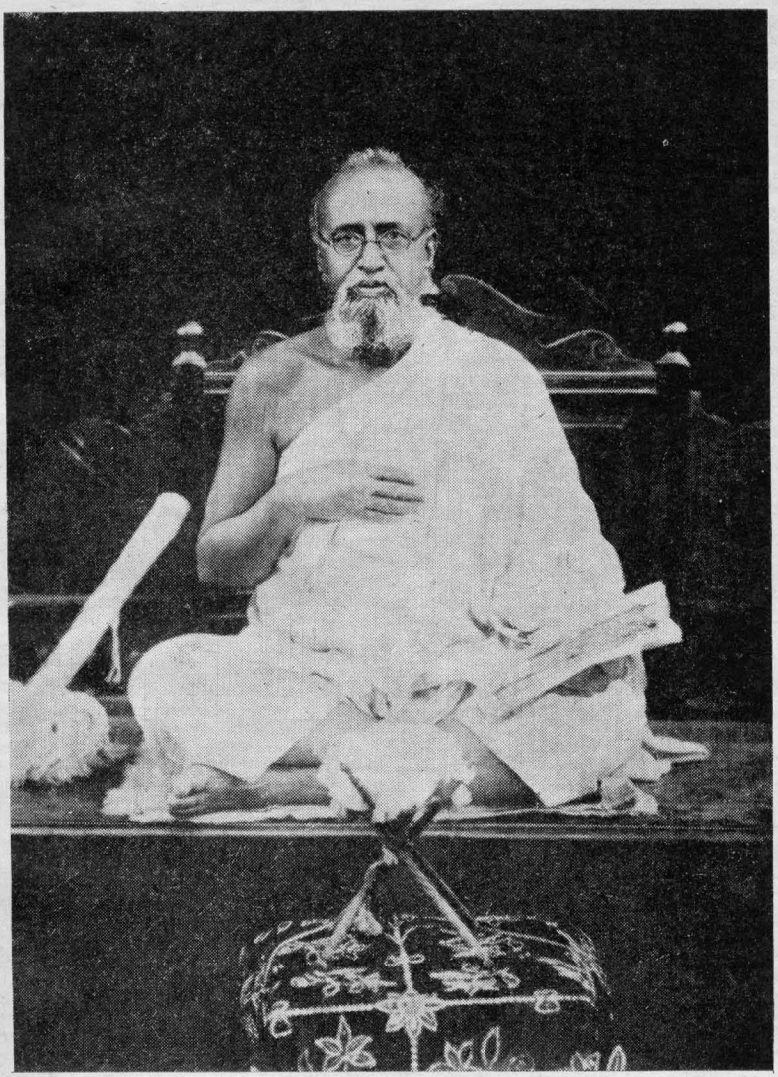

विजयवल्लभसूरीश्वरजी महाराज

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूज्यपाद पंन्यासजी श्री १००८

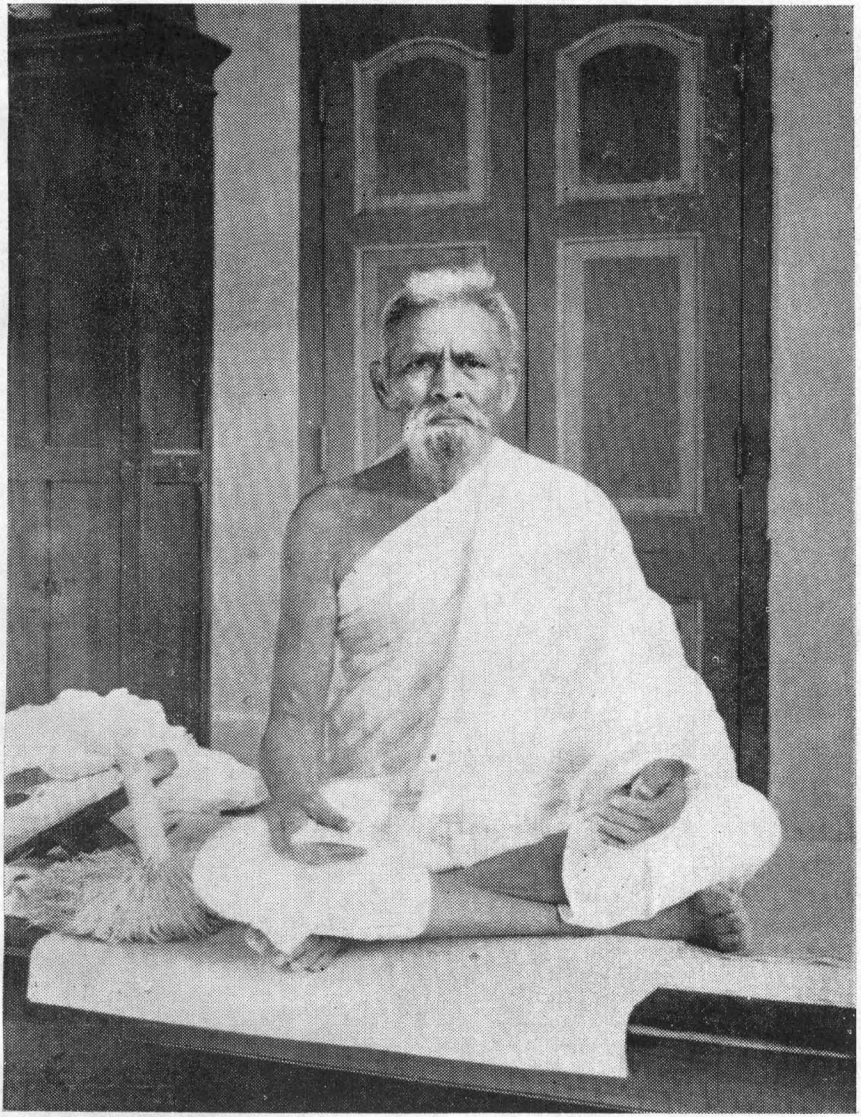

श्री नेमविजयजी महाराज

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूज्यपाद ज्ञानयोगी आगमप्रभाकरजी श्री १००८

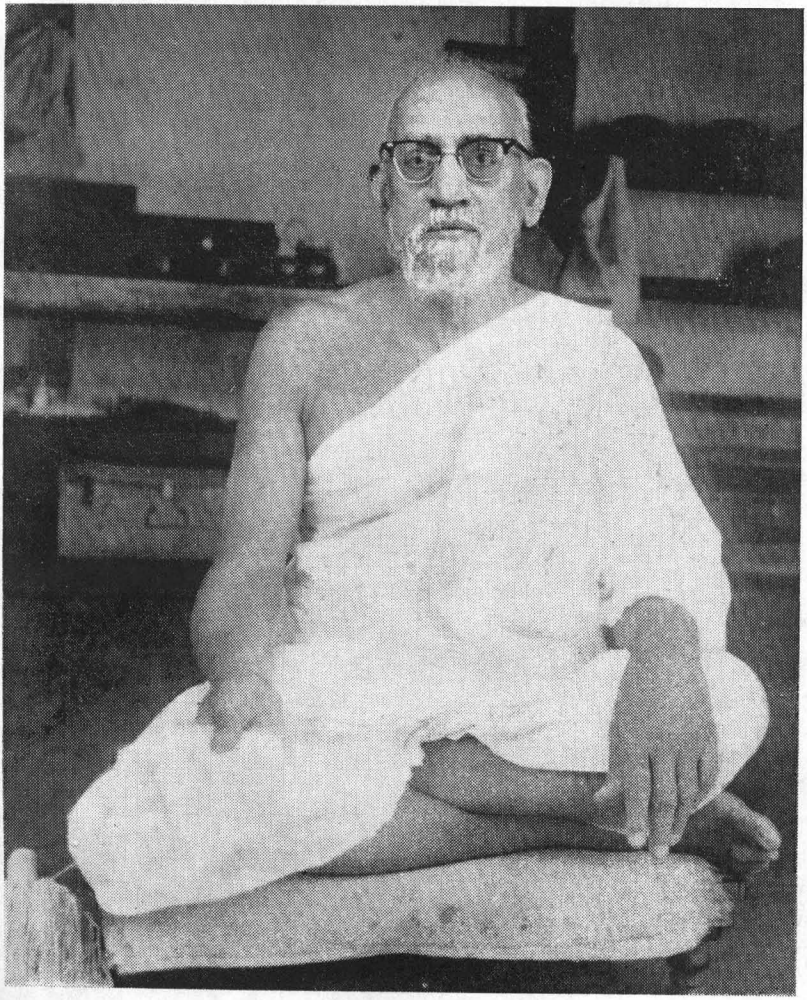

श्री पुण्यविजयजी महाराज

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परमपूज्य वयोवृद्ध प्रवर्तिनी श्री १००८

श्रीदानश्रीजी महाराज

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परमपूज्य साध्वीजी महाराज श्री १००८

श्री वसन्तश्रीजी महाराज

जन्म सं. १९४८] दीक्षा सं. १९६७ [स्वर्गवास सं. २०१९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समर्पण

जिनका जीवन दान, संयम, तप, तीर्थयात्रा, तीर्थोद्धार,
विनय, वैयावृत्य, सहधार्मिकोद्धार आदिमें व्यतीत हुआ;

अतः

जो हमारे लिए एक अनुपम अमर प्रेरणामूर्ति हुए,

उन

पूज्यपाद, दीर्घसंयमी, तपस्वी गुरुणीजी महाराज श्री १००८

श्रीवसन्तश्रीजी महाराजको

उनके उपकारोंके स्मरणार्थ

सादर समर्पण

चरणसेविका—

विचारश्री (शिष्या)

तथा

दमयन्तीश्री (गुरुभगिनी)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निवेदन

प्रत्येक समझदार मनुष्यको अपने सांसारिक कार्यों के अतिरिक्त पूजन-यजनादि कर्तव्य भी आवश्यक होता है। उस समय अपने आराध्य देवोंके गुणग्रामादिख्यापक स्तोत्र—स्तवनादिका पाठ भी यथासमय यथामति करना ही होता है। अतः स्तवन-स्तोत्र-स्तुति आदिके संग्रहरूप पुस्तकोंकी आवश्यकता भी रहती है, फलतः आज अनेक सज्जनों द्वारा प्रकाशित एतद्विषयक विविध ग्रंथ उपलब्ध है।

प्रस्तुत प्रयास भी तद्योग्य महानुभावोंकी सुविधाके लिए किया है। इस पुस्तकमें अनेक विद्वान् मुनिओंने जिन स्तोत्रोंका महत्त्वपूर्ण प्रभाव दिखलाया है और अनेक महानुभावोंने जिनका प्रभावका साक्षात्कार किया है एसे नवस्मरण तथा अन्य भी महाप्राभाविक स्तोत्रादि दिएं है। इनमें निबद्ध महाप्राभाविक मंत्राक्षरोंके प्रभावसे पाठकको अपनी योग्यतानुसार विविध लाभ होता है, यह बात तो एक आनुषंगिक फलात्मक है, मुख्यतया तो इन स्तुतिपाठोंसे अपने आराध्यपाद तीर्थाधिपति भगवंतोकी निष्काम स्तवना करके अपने आपको धन्य मानना वही है।

तथाप्रकारके अभ्यासिवर्गका ख्याल रख कर प्रस्तुत प्रकाशनमें अति उपयोगी छोटे छोटे प्राचीन प्रकरण भी दिएं है, जिनका प्रकाशन कई वर्षपूर्व श्रीआत्मानन्द जैनसभा—भावनगरसे हुआ था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुवलयमालाकथागत पंचपरमेष्ठिनमस्कार तथा प्रवचनमंगलसार और चतुःशरण-आतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णक आदि प्राकृत रचनाओंके अतिरिक्त बहुतसी उपकारक भाषारचनाएं भी प्रस्तुत प्रकाशनमें दी है, जिनका परिचय ग्रंथकी अनुक्रमणिका देखनेसे होगा।

हमारे श्रद्धेय स्वर्गस्थ पूज्यपाद साध्वीजी महाराज श्री १००८ **श्रीवसन्तश्रीजी** महाराजकी पुण्यस्मृतिमें प्रकाशित यह ग्रंथमें इस निवेदनकी साथ ही उनका संक्षिप्त परिचय दिया है, उसे पाठकगण अवश्य पढें, जिसे अनुमोदना आदिका महान् लाभ हो।

मुद्रणशुद्धिमें बराबर ध्यान रखने पर भी अनवधान और दृष्टि-दोषादिसे जो क्षतियां रह गई हो उनको सुधार कर पढनेके लिए पाठकगणको "मिच्छा मि दुक्कडं" पुरस्सर प्रार्थना है।

निवेदिका—

विचारश्री

तथा

दमयन्तीश्री

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वनामधन्य परमपूज्य साध्वीजी श्री १००८
श्रीवसन्तश्रीजी महाराजका संक्षिप्त परिचय

प्रातःस्मरणीय परमपूज्य श्रीवसन्तश्रीजी महाराजका शुभ जन्म सं. १९४८ का मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशी (मौनएकादशी) के दिन बीकानेरमें हुआ था। आपके पिताजी और माताजीका शुभनाम क्रमशः **श्रीभैरुदानजी** तथा **श्रीचांदाबाई** था।

आपकी शादी केवल आठ सालकी उम्रमें हुई। "पुण्यात्माओंको भववैराग्यके निमित्तोंका योग भी सहज होता ही है" आपको भी यह बातका स्वानुभव शादीके बाद केवल चार मास में ही आपके पतिका देहान्तसे हुआ।

इस प्रकार संसारकी असारताको प्रत्यक्ष देखकर आपका मन इसी समयसे उदासीन होता रहा। उत्तरोत्तर प्रवर्द्धमान धर्मभावनासे बारह सालकी उम्रके बादसे ही आप धर्माराधनमें मग्न हुई और दीक्षा-ग्रहणकी दृढ़ इच्छा बराबर जागृत होती रही। दीक्षाग्रहणकी भावना दृढ होनेके बाद ही आपने अपनी सभी संपत्ति जो करीब रु. ४००००) (चालीस हजार)की थी, पिंजरापोल—बीकानेर— में जीवदयार्थ दे दी। इस प्रकार इस नश्वर संपत्तिका मूक जीवोंके कल्याणार्थ सद्व्यय करके आप शाश्वतसुख के मार्ग में दिन प्रतिदिन विशेष उद्युक्त होती रही।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दीक्षाग्रहणके विषयमें बीकानेरमें घरवालोंकी सम्मति न होनेके कारण बीस वर्षकी उम्रमें सं. १९६७ की अक्षयतृतीयाको अहमदाबादमें शान्तमूर्ति पूज्यपाद मुनिप्रवरश्रीहंसविजयजी महाराजके पुण्य करकमलोंसे दीक्षा लेकर पुण्यनामधेय साध्वीजी श्रीदानश्रीजी महाराजकी शिष्या बनी और सं. १९६८ की वसन्तपंचमीके रोज पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीविजयदानसूरीजीके पवित्र करकमलोंसे आपकी बडी दीक्षा हुई।

आपका दीक्षाकाल बावन वर्षका रहा। इस सुदीर्घ दीक्षा-पर्यायमें आपने मासक्षमण, बीसस्थानकतप, सिद्धितप, अष्टापदतप, सोलह उपवास, पन्द्रह उपवास, ग्यारह उपवास, नव उपवास, आठ उपवास, पांच उपवास, चार उपवास, छक्कैया आदि विभिन्न तपोंकी आराधना यथाशक्ति की। तपस्या पर आपका ध्यान विशेषरूपसे था।

आपने अपने साध्वीजीवनमें छोटे बडे अनेक तीर्थोंकी यात्रा, जैसे आबूजी, शत्रुंजयजी, गिरनारजी, तारंगाजी—करके जीवन सफल किया शत्रुंजयकी निन्याणवे यात्रा नव की, जिसमें पांच दादाकी और चार तलहटीकी यात्रा की। अपने गृहस्थकालमें भी कई तीर्थोंके दर्शन किये। कई तीर्थोंका पुनरुद्धार करनेके लिए जगह २ उपदेश दे कर आर्थिक सहायता भी दिलाई।

और भी आपने जीवनमें कई महान् कार्य किए—

१. बीकानेरमें आपके उपदेशसे दादावाडी बनी, उसमें गुरुमन्दिर भी आपके उपदेशानुसार ही बनवाया गया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. आपके ही परिश्रमसे नागोरमें तपागच्छीय उपाश्रयका कार्य पूर्णरूपसे निर्मित हुआ जिसे श्राविकाओंको आराधनाके लिए कायमी धर्मस्थान मिला।

३. नागोरमें जैनसमाजकी ओरसे प्रस्थापित पाठशालाके संकट-कालमें समय २ पर आर्थिक सहयोग दिलाया। और पढनेवालोंका उत्साह बढानेके लिए समय २ पर विविध प्रेरणा दी।

४. तद्योग्य सहधर्मि भाइ-बहिनोंकी आर्थिक कठिनाइयां के विषयमें सम्पन्न धनिकोंको उपदेश एवं प्रेरणा-सूचन आदि दे के उनकी विषम स्थितिमें उचित सहारा दिलाया।

मुख्यतया पंजाब, राजस्थान, गुजरात-सौराष्ट्र में विहार करके आपने धर्मका प्रसार किया और जैनसमाजका शक्य उपकार करके अनेकोंको धर्माराधनमें लगाकर धार्मिकक्षेत्रमें नये वसन्तकी शोभा बहलाई।

साधु-साध्वीयोंको आवश्यक साधन आदिका कोई भी कार्य जान कर आप तुरन्त इसका प्रबंध कराती थी। अपने गुरुवर्गकी सविनय सेवा-भक्तिमें अप्रमत्त रही। आपने अपने साध्वीसमुदायमें छोटे बडे के साथ यथोचित व्यवहार किया जिसके कारण सर्व साध्वीगण आपके जीवनकी भूरि भूरि प्रशंसा करता है तथा अपना भी जीवन इसी आदर्शमय बनानेके लिए प्रयत्नशील रहता है।

दीक्षाकालके बावनवर्ष पर्यन्त छोटी बडी बीमारीमें कभी भी विलायती एवं अभक्ष्य औषधका सेवन नहीं किया, तथा बीमारीके

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समयमें भी सर्वथा डाक्टर आदि पुरुषवर्गसे अपनेको निरपवादरूपसे अस्पृष्ट रखा।

इस प्रकार अपनी ७१॥ वर्षकी उम्रमें ५२ वर्ष पर्यन्त चारित्रका पालन करके नागोरमें सं. २०१९ का जेठ सुदि त्रीजकी रात्रिको कलाक–१२ उपर ५ मिन्ट के समय पंचपरमेष्ठिका ध्यानमें मग्न अवस्थामें नमस्कारमंत्रका जाप सुनते हुए आपका समाधिपूर्वक स्वर्गवास हुआ। स्मशानयात्रा बडी भव्य रही।

शुभम्। शिवम्। मंगलम्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ग्रन्थानुक्रमणिका ।

	पत्र
१. नमस्कारमहामन्त्रस्मरणम् ।	१
२. उवसग्गहरस्मरणम् ।	१–२
३. संतिकरस्मरणम् ।	२–३
४. तिजयपहुत्तस्मरणम् ।	४–५
५. नमिऊणस्मरणम् ।	५–७
६. अजितशान्तिस्मरणम् ।	८–१४
७. भक्तामरस्मरणम् ।	१४–२२
८. कल्याणमन्दिर-स्मरणम् ।	२२–३०
९. बृहच्छान्तिस्मरणम् ।	३०–३४
१०. जयतिहुअणस्तोत्रम् ।	३४–३९
११. श्रीपार्श्वनाथमन्त्राधिराजस्तोत्रम् ।	४०–४३
१२. ग्रहशान्तिस्तोत्रम् ।	४३–४४
१३. वज्रपञ्जरस्तोत्रम् ।	४५
१४. जिनपञ्जरस्तोत्रम् ।	४६–४८
१५. श्रीगौतमस्वाम्यष्टकम् ।	४९–५०
१६. शत्रुञ्जयतीर्थस्तोत्रम् ।	५०–५२
१७. पञ्चषष्टियन्त्रगर्भित-चतुर्विंशतिजिनस्तोत्रम् ।	५२–५३
१८. ,,	५३–५४
१९. बृहद् ऋषिमण्डल-स्तोत्रम् ।	५५–६४
२०. रत्नाकरपञ्चविंशिका ।	६५–६९
२१. श्रीशत्रुञ्जयलघुकल्पः ।	६९–७१
२२. समवसरणस्तवः ।	७२–७४
२३. अम्नायउंछकुलकम् ।	७४–७७
२४. अल्पबहुत्वगर्भित श्रीमहावीरस्तवनम् ।	७७–७८
२५. लघ्वल्पबहुत्वम् ।	७८–७९
२६. परमाणुखण्डषट्-त्रिंशिका ।	७९–८०
२७. पुद्गलषट्त्रिंशिका ।	८०–८३
२८. निगोदषट्त्रिंशिका ।	८४–८७
२९. बन्धषट्त्रिंशिका ।	८७–९०
३०. पुद्गलपरावर्तस्तोत्रम् ।	९०–९१
३१. श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम् ।	९२–९५
३२. गाङ्गेयभङ्गप्रकरणम् ।	९६–९८
३३. सिद्धपञ्चाशिका ।	९८–१०४
३४. सिद्धदण्डिकास्तवः ।	१०४–१०६
३५. भावप्रकरणम् ।	१०६–१०९
३६. योनिस्तवः ।	१०९–११०
३७. विचारसप्ततिका ।	११०–११८
३८. विचारपञ्चाशिका ।	११८–१२३
३९. कालसप्ततिका ।	१२३–१३०
४०. क्षुल्लकभवावलि-प्रकरणम् ।	१३०–१३२
४१. देहस्थितिस्तवः ।	१३२–१३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	पत्र
४२. कायस्थिति-स्तोत्रम् ।	१३४-१३६
४३. लोकनालि-द्वात्रिंशिका ।	१३६-१४०
४४. श्रीगौतम-गणधरस्तोत्रम् ।	१४०
४५. नन्दीसूत्र-मङ्गलगाथाः ।	१४१-१४४
४६. पञ्चपरमेष्ठि-नमस्कारः । (कुवलयमालागतः)	१४५-१५२
४७. प्रवचनमङ्गलसारः। (कुवलयमालागतः)	१५२-१५४
४८. चतुःशरणप्रकीर्णकम् ।	१५४-१६०
४९. आतुरप्रत्याख्यान-प्रकीर्णकम्	१६०-१६८
५०. प्रभुस्तुति ।	१६८-१६९
५१. गौडीपार्श्वजिन-वृद्धस्तवन ।	१६९-१७५
५२. सीताजीनी सज्झाय ।	१७५-१८०
५३. प्रभातमां भाववानी भावना ।	१८०-१८३
५४. सीमंधरजिन-आलोयणस्तवन।	१८४-१८५
५५ खामणांसज्झाय।	१८५-१८६
५६. चार शरणां ।	१८७-१८८
५७. पद्मावती आराधना ।	१८८-१९१
५८. पुण्यप्रकाशनुं स्तवन ।	१९१-२०१
५९. गौतमस्वामिनो रास ।	२०२-२१०
६०. मंगलपचीशी ।	२१०-२१२
६१. पच्चक्खाणनो कोठो।	२१३-२२४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्तुत प्रकाशनमें आर्थिक सहयोग दाताओंकी शुभनामावली

रु.	दाताका शुभनाम
५०१)	शेठ श्री सरदारमलजी कानमलजी समदडीया
२५०)	शेठ माणेकचंदजी बेताला
१०१)	,,मगनमलजी धनराज साचर
५१)	श्रीरतनबाई समदडीया
५१)	शेठ श्री अमोलकचंदजी हस्तिमलजी बोथरा
५१)	,, जेठमलजी बंगाणी
५१)	,, ताराचंदजी चांदमलजी कोचर
२५)	,, रैवतमलजी सिंघी
२५)	,, नथमलजी गेनचंदजी
२५)	,,नथमलजी झेनचंदजी कोठारी
२१)	, केवलचन्दजी समदडीया
२१)	,, नेमिचन्दजी चोधरी
२१)	श्री समतबाई चोधरी
१४)	शेठश्री जीतमलजी बांगाणी
१३)	,, श्रीमलजी ओस्तवाल
१२)	,, भीखमचंदजी कोठारी
११)	,, बस्तीमलजी बोथरा
११)	,, उदयचन्दजी बोथरा
११)	,, हीराचन्दजी चोरडीया
११)	, पुखराजजी बांठीया
११)	,, मांगीमलजी दुगड
११)	,, हीरालालजी छल्लाणी
११)	,, उदयचन्दजी छल्लाणी
११)	,, कस्तूरचन्दजी बंगाणी
११)	,, कस्तूरचन्दजी वागण
११)	,, भँवरलालजी कपूरचन्दजी
११)	,, दीपचन्दजी सुराणा
११)	,, मंगलचन्दजी भँवरलाल कोचर
११)	,, मगनमलजी पारेख
११)	,, छगनमलजी सुराणा
११)	,, जतनमलजी दफ्तरी
११)	शेठश्री कालूरामजी बोथरा
११)	,, भँवरलालजी विजयलालजी नाहर
११)	,, भँवरलालजी साणसुखा
११)	,, नन्दकिशोरजी कोचर
११)	,, झवरीलालजी निहालचन्दजी कोचर
११)	,, मोवनलालजी सेठिया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रु.	दाताका शुभनाम
११)	,, ससकरणजी सुराणा
११)	,, रूपचन्दजी गोलेच्छा
११)	,, माणकचन्दजी डांगर
११)	,, परसनमलजी
११)	,, सिवबकसजी मगरज कोचर
११)	,, सीबकजी कोचरकी वहु
११)	श्रीआशाबाई
११)	श्रीफताबाई बीकानेरवाला
११)	श्रीवस्तांबाई कोचर
१०)	शेठश्री गणेशमलजी काकरीया
७)	,, चम्पालालजी सुराणा
७)	,, तोलारामजी बछावत
७)	,, टिकमचन्दजी भँवरलालजी कोचर
७)	श्रीछतीबाईके उपाश्रयकी बाईयां
५)	शेठश्री भँवरीमलजी कटारीया
५)	,, वस्तीमलजी दुगड
५)	,, जवरीमलजी बांठीया
५)	,, ताराचन्दजी समदडीया
५)	,, फुसालालजी दूगड
५)	,, जवरचन्दजी बेताला
५)	,, नीलमचन्दजी पीचा
५)	,, आसकरणजी सुराणा

रु.	दाताका शुभनाम
५)	,, गिरधरलालजी छगनलालजी कोचर
५)	,, भँवरलालजी बुलाकचन्दजी कोचर
५)	,, फागजी कोचर
५)	,, गणपतमलजी बंगाणी
५)	शेठश्री गुनचन्दजी कोचर
५)	,, सतीदानजी कोचर
५)	,, नीलमचन्दजी पीचा
५)	,, शीखरचन्दजी नाहटा
५)	,, माणेकचन्दजी छाजेड
५)	,, भँवरलालजी ढड्ढा
५)	,, छगनमलजी कोचरकी वहु
५)	श्रीसूरजवाई
५)	श्रीफिनाबाई पुगलीया
५)	श्रीपामबाई सीरोया
४)	श्रीभँवरीबाई
४)	श्रीछोटाबाई सुराणा
४)	शेठश्री प्रेमचन्दजी मोजीलालजी कोचर
२)	,, भँवरीमलजी दुगड
२)	,, पन्नालालजी दुगड
२)	,, हंसराजजी दूगड
२)	मगराजजी सुराणा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रु.	दाताका शुभनाम
२)	समरतमलजी झवरीलालजी कोचर
२)	इंदरनी माँ
२)	श्रीज्ञानबाई
२)	श्रीसायरबाई
२)	श्रीरतनबाई कोचर
२)	श्रीइन्दरबाई कोचर
२)	श्रीकेसरबाई बिकानेर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्यश्रीविजयवल्लभसूरिभ्यो नमः ॥

नवस्मरणानि ।

प्रथमं नमुक्कारमन्त्रस्मरणम् ॥

नमो अरिहंताणं ॥ १ ॥
नमो सिद्धाणं ॥ २ ॥
नमो आयरियाणं ॥ ३ ॥
नमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥
नमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥
एसो पंचनमुक्कारो ॥ ६ ॥
सव्वपावप्पणासणो ॥ ७ ॥
मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥
पढमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥

द्वितीयं उवसग्गहरस्मरणम् ।

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।
विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥
विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्स गह रोग मारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ।
नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥ ३ ॥
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥
इअ संथुओ महायस !, भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण।
ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास ! जिणचंद ! ॥५॥

तृतीयं संतिकरस्मरणम् ।

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीइ दायारं ।
समरामि भत्तपालग-निव्वाणीगरुडकयसेवं ॥ १ ॥
ॐ सनमो विप्पोसहि-पत्ताणं संतिसामिपायाणं ।
ह्रौँ स्वाहामंतेणं, सव्वासिवदुरिअहरणाणं ॥ २ ॥
ॐ संतिनमुक्कारो, खेलोसहिमाइलद्धिपत्ताणं ।
सौँ ह्रौँ नमो सव्वोसहिपत्ताणं च देइ सिरिं ॥ ३ ॥
वाणीतिहुअणसामिणि-सिरिदेवीजक्खरायगणिपिडगा।
गहदिसिपालसुरिंदा, सया वि रक्खंतु जिणभत्ते ॥४॥
१ २ ३
रक्खंतु मम रोहिणि, पन्नत्ती वज्जसिंखला य सया ।
४ ५ ६ ७ ८
वज्जंकुसि चक्केसरि, नरदत्ता कालि महकाली ॥ ५ ॥
९ १० ११ १२ १३
गोरी तह गंधारी, महजाला माणवी अ वइरुट्टा ।
१४ १५ १६
अच्छुत्ता माणसिआ महमाणसिआओ देवीओ ॥ ६ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१ २ ३ ४ ५ ६
जक्खा गोमुह महजक्ख तिमुह जक्खेस तुंबरू कुसुमो।
७ ८ ९ १० ११ १२
मायंगो विजयाऽजिअ, बंभो मणुओ सुरकुमारो ॥ ७ ॥
१३ १४ १५ १६ १७ १८
छम्मुह पयाल किन्नर, गरुडो गंधव्व तह य जक्खिंदो।
१९ २० २१ २२ २३ २४
कूबर वरुणो भिउडी गोमेहो पास मायंगो ॥ ८ ॥

१ २ ३ ४ ५
देवीओ चक्केसरि, अजिआ दुरिआरि कालि महकाली।
६ ७ ८ ९ १० ११
अच्चुअ संता जाला, सुतारयाऽसोअ सिरिवच्छा ॥ ९ ॥
१२ १३ १४ १५ १६ १७ १८
चंडा विजयंकुसि पन्नइत्ति निव्वाणि अच्चुआ धरणी।
१९ २० २१ २२ २३ २४
वइरुट्ट दत्त गंधारि, अंब पउमावई सिद्धा ॥ १० ॥

इअ तित्थरक्खणरया, अन्ने वि सुरा सुरी य चउहा वि।
वंतरजोइणीपमुहा, कुणंतु रक्खं सया अम्हं ॥ ११ ॥

एवं सुदिट्ठिसुरगण-सहिओ संघस्स संतिजिणचंदो।
मज्झ वि करेउ रक्खं, मुणिसुंदरसूरिथुअमहिमा ॥१२॥

इअ संतिनाहसम्मद्दिट्ठियरक्खं सरइ तिकालं जो।
सव्वोवद्दवरहिओ, स लहइ सुहसंपयं परमं ॥ १३ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुर्थं तिजयपहुत्तस्मरणम् ।

तिजयपहुत्तपयासयअट्ठमहापाडिहेरजुत्ताणं ।
समयक्खित्तठिआणं, सरेमि चक्कं जिणिंदाणं ॥ १ ॥

२५ ८० १५ ५०
पणवीसा य असीआ, पनरस पन्नास जिणवरसमूहो ।
नासेउ सयलदुरिअं, भविआणं भत्तिजुत्ताणं ॥ २ ॥

२० ४५ ३० ७५
वीसा पणयाला वि य, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा ।
गहभूअरक्खसाइणिघोरुवसग्गं पणासंतु ॥ ३ ॥

७० ३५ ६० ५
सत्तरि पणतीसा वि य, सट्ठी पंचेव जिणगणो एसो ।
वाहिजलजलणहरिकरिचोरारिमहाभयं हरउ ॥ ४ ॥

५५ १० ६५ ४०
पणपन्ना य दसेव य, पन्नट्ठी तह य चेव चालीसा ।
रक्खंतु मे सरीरं, देवासुरपणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥
ॐ हरहुंहः सरसुंसः, हरहुंहः तह य चेव सरसुंसः ।
आलिहियनामगब्भं, चक्कं किर सव्वओभद्दं ॥ ६ ॥

ॐ १ रोहिणि २ पन्नत्ती ३ वज्जसिंखला तह य ४ वज्जअंकुसिआ ।
५ ६ ७ ८ ९
चक्केसरि नरदत्ता, कालि महाकालि तह गोरी ॥ ७ ॥
१० ११ १२ १३ १४
गंधारी महजाला, माणवि वइरुट्ट तह य अच्छुत्ता ।
१५ १६
माणसि महमाणसिआ, विज्जादेवीओ रक्खंतु ॥ ८ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचदसकम्मभूमिसु, उप्पन्नं सत्तरी जिणाण सयं ।
विविहरयणाइवन्नो–वसोहिअं हरउ दुरिआइं ॥ ९ ॥
चउतीसअइसयजुआ, अट्ठमहापाडिहेरकयसोहा ।
तित्थयरा गयमोहा, झाएअव्वा पयत्तेणं ॥ १० ॥
ॐ वरकणयसंखविद्दुममरगयघणसन्निहं विगयमोहं ।
सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइअं वंदे ॥ स्वाहा ॥११॥
ॐ भवणवइवाणवंतरजोइसवासी विमाणवासी अ ।
जे के वि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु ममं ॥ स्वाहा ॥१२॥
चंदणकप्पूरेणं, फलए लिहिऊण खालिअं पीअं ।
एगंतराइगहभूअसाइणिमुग्गं पणासेइ ॥ १३ ॥
इअ सत्तरिसयजंतं, सम्मं मंतं दुवारि पडिलिहिअं ।
दुरिआरिविजयवंतं, निब्भंतं निच्चमच्चेह ॥ १४ ॥

पञ्चमं नमिऊणस्मरणम् ।

नमिऊण पणयसुरगणचूडामणिकिरणरंजिअं मुणिणो ।
चलणजुअलं महाभयपणासणं संथवं वुच्छं ॥ १ ॥
सडियकरचरणनहमुह-निवुड्डनासा विवन्नलायन्ना ।
कुट्ठमहारोगानलफुलिंगनिद्दड्ढसव्वंगा ॥ २ ॥
ते तुह चलणाराहणसलिलंजलिसेयवड्ढिउच्छाहा ।
वणदवदड्ढा गिरिपायव व्व पत्ता पुणो लच्छिं ॥ ३ ॥
दुव्वायखुभियजलनिहि-उब्भडकल्लोलभीसणारावे
संभंतभयविसंठुलनिज्जामयमुक्कवावारे ॥ ४ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अविदलिअजाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं ।
पासजिणचलणजुअलं, निच्चं चिअ जे नमंति नरा ॥५॥
खरपवणुद्धुयवणदव-जालावलिमिलियसयलदुमगहणे ।
डज्झंतमुद्धमयवहु-भीसणरवभीसणम्मि वणे ॥ ६ ॥
जगगुरुणो कमजुअलं, निव्वाविअसयलतिहुअणाभोअं ।
जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥ ७ ॥
विलसंतभोगभीसण-फुरिआरुणनयणतरलजीहालं ।
उग्गभुअंगं नवजलयसच्छहं भीसणायारं ॥ ८ ॥
मन्नंति कीडसरिसं, दूरपरिच्छूढविसमविसवेगा ।
तुह नामक्खरफुडसिद्धमंतगुरुआ नरा लोए ॥ ९ ॥
अडवीसु भिल्ल-तक्कर-पुलिंद-सद्दूलसद्दभीमासु ।
भयविहुरवुन्नकायर-उल्लूरिअपहिअसत्थासु ॥ १० ॥
अविलुत्तविहवसारा, तुह नाह ! पणाममत्तवावारा ।
ववगयविग्घा सिग्घं, पत्ता हियइच्छियं ठाणं ॥ ११ ॥
पज्जलिआनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ।
नहकुलिसघायविअलिअ-गइंदकुंभत्थलाभोअं ॥ १२ ॥
पणयससंभमपत्थिव-नहमणिमाणिक्कपडिअपडिमस्स ।
तुह वयणपहरणधरा, सीहं कुद्धं पि न गणंति ॥१३॥
ससिधवलदंतमुसलं, दीहकरुल्लालवड्ढिउच्छाहं ।
महुपिंगनयणजुअलं, ससलिलनवजलहरारावं ॥ १४ ॥
भीमं महागइंदं, अचासन्नं पि ते न वि गणंति ।
जे तुम्ह चलणजुअलं, मुणिवइ ! तुंगं समल्लीणा ॥१५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समरम्मि तिक्खखग्गा-भिघायपब्बिद्धउद्धुयकबंधे ।
कुंतविणिभिन्नकरिकलहमुक्कसिक्कारपउरम्मि ॥ १६ ॥
निज्जियदप्पुद्धुररिउ-नरिंदनिवहा भडा जसं धवलं ।
पावंति पावपसमिण !, पासजिण ! तुह प्पभावेण ॥१७॥
रोगजलजलणविसहर-चोरारिमइंदगयरणभयाइं ।
पासजिणनामसंकित्तणेण पसमंति सव्वाइं ॥ १८ ॥
एवं महाभयहरं, पासजिणिंदस्स संथवमुआरं ।
भवियजणाणंदयरं, कल्लाणपरंपरनिहाणं ॥ १९ ॥
रायभय-जक्ख-रक्खस-कुसुमिण-दुस्सउण-
रिक्खपीडासु ।
संझासु दोसु पंथे, उवसग्गे तह य रयणीसु ॥ २० ॥
जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स ।
पासो पावं पसमेउ सयलभुवणच्चियचलणो ॥ २१ ॥
उवसग्गंते कमठासुरम्मि झाणाओ जो न संचलिओ ।
सुर-नर-किन्नरजुवईहिं संथुओ जयउ पासजिणो ॥२२॥
एअस्स मज्झयारे, अट्ठारसअक्खरेहिं जो मंतो ।
जो जाणइ सो झायइ, परमपयत्थं फुडं पासं ॥ २३ ॥
पासह समरण जो कुणइ, संतुट्ठे हियएण ।
अट्ठुत्तरसयवाहिभय, नासइ तस्स दूरेण ॥ २४ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

षष्ठं अजितशान्तिस्मरणम् ।

अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसंतसव्वगयपावं ।
जयगुरु संतिगुणकरे, दो वि जिणवरे पणिवयामि ॥
॥ १ ॥ गाहा ॥

ववगयमंगुलभावे, ते हं विउलतवनिम्मलसहावे ।
निरुवममहप्पभावे, थोसामि सुदिट्ठसब्भावे ॥२॥ गाहा
सव्वदुक्खप्पसंतीणं, सव्वपावप्पसंतिणं । सया अजिय-
संतीणं, णमो अजिअसंतिणं ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥
अजियजिण ! सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम ! नाम-
कित्तणं । तह य धिइमइप्पवत्तणं, तव य जिणुत्तम !
संति ! कित्तणं ॥ ४ ॥ मागहिआ ॥
किरिआविहिसंचिअकम्मकिलेसविमुक्खयरं, अजिअं
निचिअं च गुणेहिं महामुणिसिद्धिगयं । अजिअस्स य
संतिमहामुणिणो वि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइ-
कारणयं च नमंसणयं ॥ ५ ॥ आलिंगणयं ॥
पुरिसा ! जइ दुक्खवारणं, जइ अ विमग्गह सुक्ख-
कारणं । अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं
पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥
अरइ-रइतिमिरविरहिअमुवरयजरमरणं, सुर-असुर-
गरुल-भुयगवइपययपणिवइअं । अजिअमहमवि अ
सुनयनयनिउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुवि-दिवि-
जमहिअं सययमुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं च जिणुत्तममुत्तमनित्तमसत्तधरं, अज्जव-मद्दव-खंति-विमुत्ति-समाहिनिहिं । संतिकरं पणमामि दमुत्तम-तित्थयरं, संतिमुणी मम संतिसमाहिवरं दिसउ ॥ ८ ॥

॥ सोवाणयं ॥

सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थिमत्थयपसत्थवित्थिन्न-संथिअं थिरसरिच्छवच्छं, मयगललीलायमाणवरगंध-हत्थिपत्थाणपत्थियं संथवारिहं । हत्थिहत्थबाहुं धंतक-णगरुअगनिरुवहयपिंजरं पवरलक्खणोवचिअसोम-चारुरूवं, सुइसुहमणाभिरामपरमरमणिज्जवरदेवदुंदुहि-निनायमहुरयरसुहगिरं ॥ ९ ॥ वेड्ढओ ॥

अजिअं जिआरिगणं, जिअसव्वभयं भवोहरिउं । पण-मामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं ! ॥ १० ॥

॥ रासालुद्धओ ॥

कुरुजणवयहत्थिणाउरनरीसरो पढमं तओ महाचक्कव-ट्टिभोए महप्पभावो, जो बावत्तरिपुरवरसहस्सवरनगर-निगमजणवयवई बत्तीसारायवरसहस्साणुयायमग्गो । चउदसवररयण-नवमहानिहि-चउसट्ठिसहस्सपवरजुव-ईण सुंदरवई, चुलसीहय-गय-रहसयसहस्ससामी छण्णवइगामकोडिसामी आसी जो भारहम्मि भयवं ॥ ११ ॥ वेड्ढओ ॥

तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया । संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे ॥ १२ ॥ रासानंदिययं ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इक्खाग ! विदेहनरीसर ! नरवसहा ! मुणिवसहा !, नवसारयससिसकलाणण ! विगयतमा ! विहुअरया !। अजिउत्तम ! तेयगुणेहिं महामुणिअमिअबला ! विउलकुला !, पणमामि ते भवभयमूरण ! जगसरणा ! मम सरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥

देव-दाणविंद-चंद-सूरवंद ! हट्ठ-तुट्ठ ! जिट्ठपरम ! लट्ठरूव ! धंतरुप्प-पट्ट-सेअ-सुद्ध-निद्ध-धवल !-दंतपंति ! संति ! सत्ति-कित्ति-मुत्ति-जुत्ति-गुत्ति-पवर !, दित्ततेअ !, वंद ! धेअ ! सव्वलोअभाविअप्पभाव ! णेअ ! पइस मे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायओ ॥

विमलससिकलाइरेअसोमं, वितिमिरसूरकराइरेअतेअं। तिअसवइगणाइरेअरूवं, धरणिधरप्पवराइरेअसारं ॥ ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥

सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अ बले अजिअं। तवसंजमे अ अजिअं, एस थुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ ॥ भुअगपरिरिंगिअं ॥

सोमगुणेहिं पावइ न तं नवसरयससी, तेअगुणेहिं पावइ न तं नवसरयरवी। रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअसगणवई, सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवई ॥ १७ ॥ ॥ खिञ्जिअयं ॥

तित्थवरपवत्तयं तमरयरहिअं, धीरजणथुअच्चिअं चुअकलिकलुसं। संतिसुहपवत्तयं तिगरणपयओ, संतिमहं महामुणिं सरणमुवणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

विणओणयसिररइअंजलिरिसिगणसंथुअं थिमिअं,
विबुहाहिवधणवइ-नरवइथुअमहिअच्चिअं बहुसो।
अइरुग्गयसरयदिवायरसमहिअसप्पभं तवसा,
गयणंगणवियरणसमुइअचारणवंदिअं सिरसा॥ १९॥
॥ किसलयमाला॥
असुर-गरुलपरिवंदिअं, किन्नरोरगणमंसिअं। देवकोडिसयसंथुअं, समणसंघपरिवंदिअं॥ २०॥ सुमुहं॥
अभयं अणहं, अरयं अरुयं। अजिअं अजिअं पयओ पणमे॥ २१॥ विज्जुविलसिअं॥
आगया वरविमाणदिव्वकणगरहतुरयपहकरसएहिं हुलिअं। ससंभमोअरणखुभिअलुलिअचलकुंडलंगयतिरीडसोहंतमउलिमाला॥ २२॥ वेड्ढओ॥
जं सुरसंघा सासुरसंघा वेरविउत्ता भत्तिसुजुत्ता,
आयरभूसिअसंभमपिंडिअ-सुट्ठुसुविम्हिअसव्वबलोघा।
उत्तमकंचणरयणपरूविय-भासुरभूसणभासुरिअंगा,
गायसमोणयभत्तिवसागय-पंजलिपेसियसीसपणामा॥
॥ २३॥ रयणमाला॥
वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं।
पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइं तो गया॥ २४॥ खित्तयं॥
तं महामुणिमहं पि पंजली, रागदोस-भय-मोहवज्जिअं।
देवदाणवनरिंदवंदिअं, संतिमुत्तमं महातवं नमे॥ २५॥
॥ खित्तयं॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंबरंतरविआरणिआहिं, ललिअहंसवहुगामिणिआहिं। पीणसोणिथणसालिणिआहिं, सकलकमलदललोअणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥

पीणनिरंतरथणभरविणमियगायलआहिं, मणिकंचणपसिढिलमेहलसोहिअसोणितडाहिं। वरखिंखिणिणेउरसतिलयवलयविभूसणिआहिं, रइकरचउरमणोहरसुंदरदंसणिआहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्खरा ॥

देवसुंदरीहिं पायवंदिआहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, अप्पणो निडालएहिं मंडणोडुणप्पगारएहिं केहिं केहिं वि ? अवंगतिलयपत्तलेहनामएहिं चिल्लएहिं संगयंगयाहिं, भत्तिसन्निविट्ठवंदणागयाहिं हुंति ते य वंदिआ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारायओ ॥

तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअमोहं। धुअसव्वकिलेसं, पयओ पणमामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥

थुअवंदिअयस्सा रिसिगणदेवगणेहिं, तो देववहुहिं पयओ पणमियअस्सा। जस्स जगुत्तमसासणअस्सा, भत्तिवसागयपिंडियआहिं। देववरच्छरसावहुआहिं, सुरवररइगुणपंडियआहिं ॥ ३० ॥ भासुरयं ॥

वंससद्दतंतितालमेलिए तिउक्खराभिरामसद्दमीसए कए अ, सुइसमाणणे अ सुद्धसज्जगीअपायजालघंटिआहिं। वलय-मेहलाकलावनेउराभिरामसद्दमीसए कए अ, देवनट्टिआहिं हाव-भाव-विब्भमप्पगारएहिं। नच्चि-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऊण अंगहारएहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा,
तयं तिलोअसव्वसत्तसंतिकारयं पसंतसव्वपावदोस-
मेस हं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायओ ॥
छत्त-चामर-पडाग-जूअ-जव-मंडिआ, झयवर-मगर-
तुरय-सिरिवच्छसुलंछणा । दीव-समुद्द-मंदर-दिसागय-
सोहिआ, सत्थिअ-वसह-सीह-रह-चक्कवरंकिया ॥ ३२ ॥
॥ ललिअयं ॥
सहावलट्ठा समप्पइट्ठा, अदोसदुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा ।
पसायसिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥
॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥
ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअमूलपावया ।
संथुआ अजिअसंतिपायया, हुंतु मे सिवसुहाणदायया ॥
॥ ३४ ॥ अपरांतिका ॥
एवं तवबलविउलं, थुअं मए अजिअसंतिजिणजुअलं ।
ववगयकम्मरयमलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥ ३५ ॥
॥ गाहा ॥
तं बहुगुणप्पसायं, मुक्खसुहेण परमेण अविसायं ।
नासेउ मे विसायं, कुणउ अपरिसाविअपसायं ॥ ३६ ॥
॥ गाहा ॥
तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं । परिसा
वि अ सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥
॥ गाहा ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पक्खिअ चाउम्मासे, संवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो।
सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्गनिवारणो एसो ॥ ३८ ॥

जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ कालं पि अजिअ-
संतिथयं। न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना वि नासंति॥
॥ ३९ ॥

जइ इच्छह परमपयं, अहवा कित्तिं सुवित्थडं भुवणे।
ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥

सप्तमं भक्तामरस्मरणम् ।

भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा-
मुद्द्योतकं दलितपापतमोवितानम् ।
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा-
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ॥ १ ॥

यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा-
दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥

बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चितपादपीठ !,
स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ।
बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र ! शशाङ्ककान्तान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ? ।
कल्पान्तकालपवनोद्धतनक्रचक्रं,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ? ॥ ४ ॥
सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश !,
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ।
प्रीत्याऽऽत्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ? ॥ ५ ॥
अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चारुचूतकलिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥
त्वत्संस्तवेन भवसन्ततिसन्निबद्धं,
पापं क्षणात् क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ।
आक्रान्तलोकमलिनीलमशेषमाशु,
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥ ७ ॥
मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु,
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः ॥ ८ ॥
आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं,
त्वत्सङ्कथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाञ्जि ॥ ९ ॥
नात्यद्भुतं भुवनभूषण ! भूतनाथ !
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः ।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ? ॥ १० ॥
दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं,
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ।
पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिन्धोः,
क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ? ॥ ११ ॥
यैः शान्तरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं,
निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ! ।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥
वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि,
निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम् ? ।
बिम्बं कलङ्कमलिनं क्व निशाकरस्य ?,
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥
सम्पूर्णमण्डलशशाङ्ककलाकलाप-
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति ।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं,
कस्तान्निवारयति सञ्चरतो यथेष्टम् ? ॥ १४ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि-
नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ।
कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन,
किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ? ॥१५॥
निर्धूमवर्तिरपवर्जिततैलपूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥
नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति ।
नाम्भोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः,
सूर्यातिशायिमहिमाऽसि मुनीन्द्र ! लोके ॥१७॥
नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं,
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति,
विद्योतयज्जगदपूर्वशशाङ्कबिम्बम् ॥ १८ ॥
किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ ! ।
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके,
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ? ॥ १९ ॥
ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥
मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ ! भवान्तरेऽपि ॥ २१ ॥
स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं,
प्राच्येव दिग्ग जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥
त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात् ।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र ! पन्थाः ॥२३॥
त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसङ्ख्यमाद्यं,
ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम् ।
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥ २४ ॥
बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्,
त्वं शङ्करोऽसि भुवनत्रयशङ्करत्वात् ।
धाताऽसि धीर ! शिवमार्गविधेर्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् ! पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ !,
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥
को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै-
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश !।
दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥
उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख-
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं,
बिम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥ २८ ॥
सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ।
बिम्बं वियद्विलसदंशुलतावितानं,
तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥
कुन्दावदातचलचामरचारुशोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम् ।
उद्यच्छशाङ्कशुचिनिर्झरवारिधार-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥ ३० ॥
छत्रत्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं,
प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥
उन्निद्रहेमनवपङ्कजपुञ्जकान्ती,
पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥
इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र !,
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक् कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥ ३३ ॥
श्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल-
मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥ ३४ ॥
भिन्नेभकुम्भगलदुज्ज्वलशोणिताक्त-
मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः ।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥
कल्पान्तकालपवनोद्धतवह्निकल्पं,
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्फुलिङ्गम् ।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं,
त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रक्तेक्षणं समदकोकिलकण्ठनीलं,
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम् ।
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशङ्क
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥
वल्गत्तुरङ्गगजगर्जितभीमनाद-
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ।
उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं,
त्वत्कीर्तनात् तम इवाशु भिदामुपैति ॥ ३८ ॥
कुन्ताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह-
वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ।
युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा-
स्त्वत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ३९ ॥
अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र-
पाठीनपीठभयदोल्बणवाडवाग्नौ ।
रङ्गत्तरङ्गशिखरस्थितयानपात्रा-
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥४०॥
उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः,
शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ।
त्वत्पादपङ्कजरजोऽमृतदिग्धदेहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥
आपादकण्ठमुरुशृङ्खलवेष्टिताङ्गा,
गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजङ्घाः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगतबन्धभया भवन्ति ॥ ४२ ॥
मत्तद्विपेन्द्र-मृगराज-दवानला-ऽहि-
सङ्ग्राम-वारिधि-महोदर-बन्धनोत्थम् ।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥
स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र ! गुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ।
धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं,
तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥

अष्टमं कल्याणमन्दिरस्तोत्रम् ।

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि,
भीताभयप्रदमनिन्दितमङ्घ्रिपद्मम् ।
संसारसागरनिमज्जदशेषजन्तु-
पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥
यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः,
स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम् ।
तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो-
स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥२॥ युग्मम्
सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-
मस्मादृशाः कथमधीश ! भवन्त्यधीशाः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो,
रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ? ॥ ३ ॥
मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ ! मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत ।
कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मा-
न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥
अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि,
कर्तुं स्तवं लसदसङ्ख्यगुणाकरस्य ।
बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य,
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाऽम्बुराशेः ? ॥ ५ ॥
ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश !,
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः ? ।
जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं,
जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥
आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन ! संस्तवस्ते,
नामाऽपि पाति भवतो भवतो जगन्ति ।
तीव्रातपोपहतपान्थजनान् निदाघे,
प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥
हृद्वर्तिनि त्वयि विभो ! शिथिलीभवन्ति,
जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबन्धाः ।
सद्यो भुजङ्गममया इव मध्यभाग-
मभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य ॥ ८ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र !,
रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि ।
गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे,
चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥
त्वं तारको जिन ! कथं भविनां ? त एव,
त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः ।
यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून
मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥ १० ॥
यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः,
सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन ।
विध्यापिता हुतभुजः पयसाऽथ येन,
पीतं न किं तदपि दुर्धरवाडवेन ? ॥ ११ ॥
स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना-
स्त्वां जन्तवः कथमहो ! हृदये दधानाः ।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन ?,
चिन्त्यो न हन्त ! महतां यदि वा प्रभावः ॥१२॥
क्रोधस्त्वया यदि विभो ! प्रथमं निरस्तो,
ध्वस्तास्तदा बत कथं किल कर्मचौराः ।
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके,
नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ? ॥१३॥
त्वां योगिनो जिन ! सदा परमात्मरूप-
मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुजकोशदेशे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्य-
दक्षस्य सम्भवि पदं ननु कर्णिकायाः ? ॥ १४॥
ध्यानाज्जिनेश ! भवतो भविनः क्षणेन,
देहं विहाय परमात्मदशां व्रजन्ति ।
तीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके,
चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदाः ॥ १५ ॥
अन्तः सदैव जिन ! यस्य विभाव्यसे त्वं,
भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ? ।
एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्त्तिनो हि,
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥ १६ ॥
आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या,
ध्यातो जिनेन्द्र ! भवतीह भवत्प्रभावः ।
पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं,
किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ? ॥ १७ ॥
त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि,
नूनं विभो ! हरिहरादिधिया प्रपन्नाः ।
किं काचकामलिभिरीश ! सितोऽपि शङ्खो,
नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ? ॥ १८ ॥
धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा-
दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः ।
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि,
किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ? ॥ १९ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्रं विभो ! कथमवाङ्मुखवृन्तमेव,
विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः ? ।
त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश !.
गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि ॥ २० ॥
स्थाने गभीरहृदयोदधिसम्भवायाः,
पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति ।
पीत्वा यतः परमसम्मदसङ्गभाजो,
भव्या व्रजन्ति तरसाऽप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥
स्वामिन् ! सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो,
मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः ।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुङ्गवाय,
ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥ २२ ॥
श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न-
सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम् ।
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै-
श्चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥ २३ ॥
उद्गच्छता तव शितिद्युतिमण्डलेन,
लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव ।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग !,
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ? ॥ २४ ॥
भो भोः ! प्रमादमवधूय भजध्वमेन-
मागत्य निर्वृतिपुरिं प्रति सार्थवाहम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एतन्निवेदयति देव ! जगत्त्रयाय,
मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते ॥ २५ ॥
उद्द्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ !,
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ।
मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र-
व्याजात् त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ २६ ॥
स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डितेन,
कान्ति-प्रताप-यशसामिव सञ्चयेन ।
माणिक्य-हेम-रजतप्रविनिर्मितेन,
सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि ॥ २७ ॥
दिव्यस्रजो जिन ! नमत्त्रिदशाधिपाना-
मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान् ।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र,
त्वत्सङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव ॥ २८ ॥
त्वं नाथ ! जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि,
यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ।
युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव,
चित्रं विभो ! यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥ २९ ॥
विश्वेश्वरोऽपि जनपालक ! दुर्गतस्त्वं,
किं वाऽक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ! ।
अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव,
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राग्भारसम्भृतनभांसि रजांसि रोषा-
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि ।
छायाऽपि तैस्तव न नाथ ! हता हताशो,
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥
यद् गर्जदूर्जितघनौघमदभ्रभीमं,
भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम् ।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे,
तेनैव तस्य जिन ! दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥
ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड-
प्रालम्बभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः ।
प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः,
सोऽस्याऽभवत् प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥
धन्यास्त एव भुवनाधिप ! ये त्रिसन्ध्य-
माराधयन्ति विधिवद् विधुतान्यकृत्याः ।
भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः,
पादद्वयं तव विभो ! भुवि जन्मभाजः ॥३४॥
अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश !,
मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि ।
आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे,
किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ? ॥ ३५ ॥
जन्मान्तरेऽपि तव पादयुगं न देव !,
मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवानां,
जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥
नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन,
पूर्वं विभो ! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि ।
मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः
प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः कथमन्यथैते ? ॥ ३७ ॥
आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या ।
जातोऽस्मि तेन जनबान्धव ! दुःखपात्रं,
यस्मात् क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ॥३८॥
त्वं नाथ ! दुःखिजनवत्सल ! हे शरण्य !,
कारुण्यपुण्यवसते ! वशिनां वरेण्य ! ।
भक्त्या नते मयि महेश ! दयां विधाय,
दुःखाङ्कुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥
निःसङ्ख्यसारशरणं शरणं शरण्य-
मासाद्य सादितरिपु प्रथितावदातम् ।
त्वत्पादपङ्कजमपि प्रणिधानवन्ध्यो,
वध्योऽस्मि चेद् भुवनपावन ! हा हतोऽस्मि ॥४०॥
देवेन्द्रवन्द्य ! विदिताखिलवस्तुसार !,
संसारतारक ! विभो ! भुवनाधिनाथ ! ।
त्रायस्व देव ! करुणाह्रद ! मां पुनीहि,
सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः ॥ ४१ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यद्यस्ति नाथ ! भवदङ्घ्रिसरोरुहाणां,
भक्तेः फलं किमपि सन्ततिसञ्चितायाः ।
तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य ! भूयाः,
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥ ४२ ॥
इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र !,
सान्द्रोल्लसत्पुलककञ्चुकिताङ्गभागाः ।
त्वद्बिम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्षा,
ये संस्तवं तव विभो ! रचयन्ति भव्याः ॥४३॥
जननयनकुमुदचन्द्र-
प्रभास्वराः स्वर्गसम्पदो भुक्त्वा ।
ते विगलितमलनिचया,
अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥ ४४ ॥ युग्मम् ॥

नवमं बृहच्छान्तिस्मरणम् ।

भो भो भव्याः ! श्रृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतद्,
ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाजः ।
तेषां शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा-
दारोग्य-श्री-धृति-मतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥१॥
भो भो भव्यलोकाः ! इह हि भरतैरावतविदेहसम्भवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकम्पानन्तरमवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषाघण्टाचालनानन्तरं सकलसुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य, सविनयमर्हद्भ-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ष्टारकं गृहीत्वा, गत्वा कनकाद्रिशृङ्गे, विहितजन्माभिषेकः शान्तिमुद्घोषयति यथा, ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा 'महाजनो येन गतः स पन्थाः' इति भव्यजनैः सह समेत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय, शान्तिमुद्घोषयामि, तत्पूजा-यात्रा-स्नात्रादिमहोत्सवानन्तरमिति कृत्वा कर्णं दत्त्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा।

ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्तां भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोकपूज्यास्त्रिलोकेश्वरास्त्रिलोकोद्योतकराः।

ॐ ऋषभ-अजित-सम्भव-अभिनन्दन-सुमति-पद्मप्रभ-सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ-सुविधि-शीतल-श्रेयांस-वासुपूज्य-विमल-अनन्त-धर्म-शान्ति-कुन्थु-अर-मल्लि-मुनिसुव्रत-नमि-नेमि-पार्श्व-वर्धमानान्ता जिनाः शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु स्वाहा।

ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजय-दुर्भिक्ष-कान्तारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा।

ॐ श्री-ह्री-धृति-मति-कीर्ति-कान्ति-बुद्धि-लक्ष्मी-मेधा-विद्यासाधन-प्रवेश-निवेशनेषु सुगृहीतनामानो जयन्तु ते जिनेन्द्राः।

ॐ रोहिणी[१]-प्रज्ञप्ति[२]-वज्रशृङ्खला[३]-वज्राङ्कुशी[४]-अप्रतिचक्रा[५]-पुरुषदत्ता[६]-काली[७]-महाकाली[८]-गौरी[९]-गान्धारी[१०]-सर्वास्त्रा-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११ १२ १३ १४ १५ १६
महाज्वाला-मानवी-वैरोट्या-अच्छुप्ता-मानसी-महामानसी षोडश विद्यादेव्यो रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा ।

ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसङ्घस्य शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ।

ॐ ग्रहाश्चन्द्र-सूर्या-ऽङ्गारक-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनैश्चर-राहु-केतुसहिताः सलोकपालाः सोम-यम-वरुण-कुबेर-वासवा-ऽऽदित्य-स्कन्द-विनायकोपेता ये चाऽन्ये-ऽपि ग्राम-नगर-क्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां प्रीयन्तां, अक्षीणकोष-कोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा ।

ॐ पुत्र-मित्र-भ्रातृ-कलत्र-सुहृत्-स्वजन-सम्बन्धि-बन्धुवर्गसहिता नित्यं चाऽऽमोदप्रमोदकारिणः, अस्मिंश्च भूमण्डलायतननिवासिसाधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकाणां रोगोपसर्ग-व्याधि-दुःख-दुर्भिक्ष-दौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु ।

ॐ तुष्टि-पुष्टि-ऋद्धि-वृद्धि-माङ्गल्योत्सवाः सदा प्रादुर्भूतानि पापानि शाम्यन्तु दुरितानि, शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा ।

श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्तिविधायिने ।
त्रैलोक्यस्याऽमराधीशमुकुटाभ्यर्चिताङ्घ्रये ॥ १ ॥
शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः ।
शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सृष्टरिष्ट-दुष्टग्रहगति-दुःस्वप्न-दुर्निमित्तादि ।
सम्पादितहितसम्पन्नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥ ३ ॥
श्रीसङ्घ-जगज्जनपद-राजाधिप-राजसन्निवेशानाम् ।
गोष्ठिक-पुरमुख्याणां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम् ॥ ४ ॥

श्रीश्रमणसङ्घस्य शान्तिर्भवतु, श्रीपौरजनस्य शान्तिर्भवतु, श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु, श्रीराजाधिपानां शान्तिर्भवतु, श्रीराजसन्निवेशानां शान्तिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु, श्रीपौरमुख्याणां शान्तिर्भवतु, श्रीब्रह्मलोकस्य शान्तिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा ।

एषा शान्तिः प्रतिष्ठा-यात्रा-स्नात्राद्यवसानेषु शान्तिकलशं गृहीत्वा कुङ्कुम-चन्दन-कर्पूरा-ऽगरुधूप-वास-कुसुमाञ्जलिसमेतः स्नात्रचतुष्किकायां श्रीसङ्घसमेतः शुचिशुचिवपुः पुष्प-वस्त्र-चन्दना-ऽऽभरणालङ्कृतः पुष्पमालां कण्ठे कृत्वा शान्तिमुद्घोषयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति ।

नृत्यन्ति नित्यं मणिपुष्पवर्षं,
सृजन्ति गायन्ति च मङ्गलानि ।
स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मन्त्रान्,
कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ॥ १ ॥

शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः ।
दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥ २ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहं तित्थयरमाया, सिवादेवी तुम्ह नयरनिवासिनी।
अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं भवतु॥ ३॥
स्वाहा।

उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः।
मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे॥ ४॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं, सर्वकल्याणकारणम्।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम्॥ ५॥

*

इति नवस्मरणानि॥

जयतिहुअणस्तोत्रम्।

जय तिहुअणवरकप्परुक्ख! जय जिण! धन्नंतरि!
जय तिहुअणकल्लाणकोस! दुरिअक्करिकेसरि!।
तिहुअणजणअविलंघिआण! भुवणत्तयसामिअ!,
कुणसु सुहाइं जिणेस! पास! थंभणयपुरट्ठिअ!॥ १॥

तइ समरंत लहंति झत्ति वरपुत्तकलत्तइ,
धण्णसुवण्णहिरण्णपुण्ण जण भुंजइ रज्जइ।
पिक्खइ मुक्ख असंखसुक्ख तुह पास! पसाइण,
इअ तिहुअणवरकप्परुक्ख! सुक्खइ कुण मह जिण!
॥ २॥

जरजज्जर परिजुण्णकण्ण नट्ठट्ठ सुकुट्ठिण,
चक्खुक्खीण खएण खुण्ण नर सल्लिय सूलिण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुह जिण ! सरणरसायणेण लहु हुंति पुणण्णव,
जयधन्नंतरि ! पास ! मह वि तुह रोगहरो भव ॥ ३ ॥

विज्जा-जोइस-मंत-तंत-सिद्धिउ अपयत्तिण,
भुवणब्भुउ अट्ठविह सिद्धि सिज्झहि तुह नामिण ।
तुह नामिण अपवित्तओ वि जण होइ पवित्तउ,
तं तिहुअणकल्लाणकोस ! तुह पास ! निरुत्तउ ॥ ४ ॥

खुद्दपउत्तइ मंत-तंत-जंताइ विसुत्तइ,
चर-थिरगरल-गहुग्गखग्गरिउवग्ग विगंजइ ।
दुत्थियसत्थ अणत्थघत्थ नित्थारइ दय करि,
दुरिअइ हरउ स पासदेव दुरिअक्करिकेसरि ॥ ५ ॥

तुह आणा थंभेइ भीमदप्पुद्धुरसुरवर-
रक्खसजक्खफणिंदविंदचोरानलजलहर ।
जल-थलचारिरउद्दखुद्दपसुजोइणिजोइअ,
इअ तिहुअणअविलंघिआण ! जय पास ! सुसामिअ ! ॥६॥

पत्थियअत्थ अणत्थतत्थ भत्तिब्भरनिब्भर,
रोमंचंचिअचारुकाय किन्नर-नर-सुरवर ।
जसु सेवहि कमकमलजुअल पक्खालिअकलिमलु,
सो भुवणत्तयसामि पास मह मद्दउ रिउबलु ॥ ७ ॥

जय जोइअमणकमलभसल ! भयपंजरकुंजर !,
तिहुअणजणआणंदचंद ! भुवणत्तयदिणयर ! ।
जय मइमेइणिवारिवाह ! जयजंतुपिआमह !,
थंभणअट्ठिअ ! पासनाह ! नाहत्तण कुण मह ॥ ८ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहुविहवन्नु अवन्नु सुन्नु वन्निउ छप्पन्निहि,
मुक्खधम्मकामत्थकाम नर नियनियसत्थिहि।
जं झायहि बहुदरिसणत्थ बहुनामपसिद्धउ,
सो जोइअमणकमलभसल सुहु पास पवद्धउ ॥ ९ ॥
भयविब्भल रणझणिरदसण थरहरियसरीरय,
तरलियनयण विसण्ण सुण्ण गग्गिरगिर करुणय।
तइ सहस त्ति सरंति हुंति नर नासियगुरुदर,
मह विज्झवि सज्झसइ पास ! भयपंजरकुंजर ! ॥ १० ॥
पइं पासिवि वियसंतनित्तपत्तंतपवित्तिय-
बाहपवाहपवूढरूढदुहदाह सुपुलइय।
मण्णइ मण्णु सउण्णु पुण्णु अप्पाणं सुर-नर,
इय तिहुअणआणंदचंद ! जय पास जिणेसर ! ॥ ११ ॥
तुह कल्लाणमहेसु घंटटंकारवपिल्लिय,
वल्लिरमल्ल महल्लभत्ति सुरवर गंजुल्लिय।
हल्लुप्फलिय पवत्तयंति भुवणे वि महूसव,
इय तिहुअणआणंदचंद ! जय पास ! सुहुब्भव ! ॥ १२ ॥
निम्मलकेवलकिरणनियरविहुरिअतमपहयर !,
दंसियसयलपयत्थसत्थ ! वित्थरियपहाभर !।
कलिकलुसिअजणघूयलोयलोयणह अगोयर !,
तिमिरइ निरु हर पासनाह ! भुवणत्तयदिणयर ॥ १३ ॥
तुह समरणजलवरिससित्त माणवमइमेइणि,
अवरावरसुहुमत्थबोहकंदलदलरेहणि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जायइ फलभरभरिय हरियदुहदाह अणोवम,
इय मइमेइणिवारिवाह ! दिस पास ! मइं मम ।। १४ ।।
कयअविकलकल्लाणवल्लि उल्लूरियदुहवणु,
दावियसग्गऽपवग्गमग्ग दुग्गइगमवारणु ।
जयजंतुह जणएण तुल्ल जं जणिय हियावहु,
रम्मु धम्मु सो जयउ पास जयजंतुपियामहु ।। १५ ।।
भुवणारण्णनिवास दरिय परदरिसणदेवय,
जोइणि-पूअण-खित्तवाल-खुद्दासुर-पसुवय ।
तुह उत्तट्ठ सुनट्ठ सुट्ठु अविसंठुल चिट्ठहि,
इय तिहुअणवणसीह ! पास ! पावाइ पणासहि ।। १६ ।।
फणिफणफारफुरंतरयणकररंजिअनहयल !,
फलिणीकंदलदल-तमाल-निलुप्पलसामल ! ।
कमठासुरउवसग्गवग्गसंसग्गअगंजिअ !,
जय पच्चक्खजिणेस ! पास ! थंभणयपुरट्ठिअ ! ।। १७ ।।
मह मणु तरलु पमाणु नेय बाया वि विसंठुलु,
न य तणुरवि अविणयसहावु आलसविहलंघलु ।
तुह माहप्पु पमाणु देव ! कारुण्णपवित्तउ,
इय मइ मा अवहोरि पास ! पालिहि विलवंतउ ।।१८।।
किं किं कप्पिउ ण य ? कलुणु किं किं व न जंपिउ ?,
किं व न चिट्ठिउ किट्ठु देव !, दीणयमवलंबिउ ? ।
कासु न किय निप्फल्ल लल्लि अम्हेहिं-दुहत्तिहि ?,
तह वि न पत्तउ ताणु किं पि पइं पहु ! परिचत्तिहि ।।१९।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुहु सामिउ तुहु माय बप्पु तुहु मित्त पियंकरु,
तुहु गइ तुहु मइ तुहु जि ताणु तुहु गुरु खेमंकरु ।
हउं दुहभरभारिउ वराउ राउल निब्भग्गह,
लीणउ तुह कमकमलसरणु जिण ! पालहि चंगह ॥२०॥

पइ किवि कय नीरोय लोय किवि पावियं सुहसय,
किवि मइमंत महंत केवि किवि साहियसिवपय ।
किवि गंजियरिउवग्ग केवि जसधवलिअभूअल,
मइ अवहीरहि केण पास ! सरणागयवच्छल ! ? ॥२१॥
पच्चुवयारनिरीह ! नाह ! निप्पण्णपओअण !,
तुह जिण ! पास ! परोवयारकरणिक्कपरायण ! ।
सत्तु-मित्तसमचित्तविचित्ति ! नय-निंदयसममण !,
मा अवहीरि अजुग्गओ वि मइं पास ! निरंजण ! ॥२२॥
हउं बहुविहदुहतत्तगत्तु तुह दुहनासणपरु,
हउं सुयणह करुणिक्कठाणु तुहु निरु करुणायरु ।
हउं जिण ! पास ! असामिसालु तुहु तिहुअणसामिअ,
जं अवहीरहि मइं झंखंत इय पास ! न सोहिय ॥२३॥
जुग्गाजुग्गविभाग नाह ! न हु जोयहि तुह सम,
भुवणुवयारसहावभाव करुणारससत्तम ।
समविसमइं किं घणु नियइ भुवि दाह समंतउ,
इय दुहिबंधव ! पासनाह ! मइ पाल थुणंतउ ॥२४॥
न य दीणह दीणयु मुयवि अन्नुवि किवि जुग्गय,
जं जोइवि उवयारु करहि उवयारसमुज्जय ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दीणह दीणु निहीणु जेण तइ नाहिण चत्तउ,
तो जुग्गउ अहमेव पास ! पालहि मइ चंगउ ॥२५॥
अह अन्नु वि जुग्गयविसेसु किवि मन्नहि दीणह,
जं पासिवि उवयारु करहि तुह नाह! समग्गह ।
सु च्चिय किल कल्लाणु जेण जिण ! तुम्ह पसीयह,
किं अन्निण तं चेव देव ! मा मइ अवहीरह ॥२६॥
तुह पत्थण न हु होइ विहलु जिण ! जाणउ किं पुण,
हउं दुक्खिय निरु सत्तचत्त दुक्कहु उस्सुयमण ।
तं मन्नउ निमिसेण एउ एउ वि जइ लब्भइ,
सच्चं जं भुक्खियवसेण किं उंबरु पच्चइ ? ॥२७॥
तिहुअणसामिय ! पासनाह ! मइ अप्पु पयासिउ,
किज्जउ जं नियरूवसरिसु न मुणउ बहु जंपिउ ।
अन्नु न जिण! जगि तुह समो वि दक्खिन्नदयासउ,
जइ अवगण्णसि तुह जि अहह! कह होसु हयासउ ? ॥२८
जइ तुह रूविण किण वि पेयपाइण वेलवियउ,
तु वि जाणउ जिण पास ! तुम्हि हउं अंगीकिरिउ ।
इय मह इच्छिउ जं न होइ सा तुह ओहावणु,
रक्खंतह नियकित्ति णेय जुज्जइ अवहीरणु ॥२९॥
एह महारिह जत्त देव ! इहु न्हवणमहूसउ,
जं अणलियगुणगहण तुम्ह मुणिजणअणिसिद्धउ ।
एम पसीयसु पासनाह ! थंभणयपुरट्ठिय !,
इय मुणिवरु सिरिअभयदेउ विण्णवइ अणिंदिय॥३०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीपार्श्वनाथस्य मन्त्राधिराजस्तोत्रम् ।

श्रीपार्श्वः पातु वो नित्यं, जिनः परमशङ्करः ।
नाथः परमशक्तिश्च, शरण्यः सर्वकामदः ॥ १ ॥
सर्वविघ्नहरः स्वामी, सर्वसिद्धिप्रदायकः ।
सर्वसत्त्वहितो योगी, श्रीकरः परमार्थदः ॥ २ ॥
देवदेवः स्वयंसिद्धश्चिदानन्दमयः शिवः ।
परमात्मा परब्रह्म, परमः परमेश्वरः ॥ ३ ॥
जगन्नाथः सुरज्येष्ठो, भूतेशः पुरुषोत्तमः ।
सुरेन्द्रो नित्यधर्मश्च, श्रीनिवासः शुभार्णवः ॥ ४ ॥
सर्वज्ञः सर्वदेवेशः, सर्वदः सर्वगोत्तमः ।
सर्वात्मा सर्वदर्शी च, सर्वव्यापी जगद्गुरुः ॥ ५ ॥
तत्त्वमूर्तिः परादित्यः, परब्रह्मप्रकाशकः ।
परमेन्दुः परप्राणः, परमामृतसिद्धिदः ॥ ६ ॥
अजः सनातनः शम्भुरीश्वरश्च सदाशिवः ।
विश्वेश्वरः प्रमोदात्मा, क्षेत्राधीशः शुभप्रदः ॥ ७ ॥
साकारश्च निराकारः, सकलो निष्कलोऽव्ययः ।
निर्ममो निर्विकारश्च, निर्विकल्पो निरामयः ॥ ८ ॥
अमरश्चाजरोऽनन्त, एकोऽनन्तः शिवात्मकः ।
अलक्ष्यश्चाऽप्रमेयश्च, ध्यानलक्ष्यो निरञ्जनः ॥ ९ ॥
ॐकाराकृतिरव्यक्तो. व्यक्तरूपस्त्रयीमयः ।
ब्रह्मत्रयप्रकाशात्मा, निर्भयः परमाक्षरः ॥ १० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिव्यतेजोमयः शान्तः, परामृतमयोऽच्युतः ।
आद्योऽनाद्यः परेशानः, परमेष्ठी परः पुमान् ॥ ११ ॥
शुद्धस्फटिकसङ्काशः, स्वयम्भूः परमाच्युतः ।
व्योमाकारस्वरूपश्च, लोकालोकावभासकः ॥ १२ ॥
ज्ञानात्मा परमानन्दः, प्राणारूढो मनःस्थितिः ।
मनःसाध्यो मनोध्येयो, मनोदृश्यः परापरः ॥ १३ ॥
सर्वतीर्थमयो नित्यः, सर्वदेवमयः प्रभुः ।
भगवान् सर्वतत्त्वेशः, शिवश्रीसौख्यदायकः ॥ १४ ॥
इति श्रीपार्श्वनाथस्य, सर्वज्ञस्य जगद्गुरोः ।
दिव्यमष्टोत्तरं नाम, शतमत्र प्रकीर्तितम् ॥ १५ ॥
पवित्रं परमं ध्येयं, परमानन्ददायकम् ।
भुक्तिमुक्तिप्रदं नित्यं, पठेच्च मङ्गलप्रदम् ॥ १६ ॥
श्रीमत्परमकल्याणसिद्धिदः श्रेयसेऽस्तु वः ।
पार्श्वनाथजिनः श्रीमान्, भगवान् परमः शिवः ॥१७॥
धरणेन्द्रफणच्छत्रालङ्कृतो वः श्रियं प्रभुः ।
दद्यात् पद्मावतीदेव्या, समधिष्ठितशासनः ॥ १८ ॥
ध्यायेत् कमलमध्यस्थं, श्रीपार्श्वं जगदीश्वरम् ।
ॐ ह्रीँ श्रीँ ह्रः समायुक्तं, केवलज्ञानभास्करम् ॥१९॥
पद्मावत्याऽन्वितं वामे, धरणेन्द्रेण दक्षिणे ।
परितोऽष्टदलस्थेन, मन्त्रराजेन संयुतम् ॥ २० ॥
अष्टपत्रस्थितैः पञ्चनमस्कारैस्तथा त्रिभिः ।
ज्ञानाद्यैर्वेष्टितं नाथं, धर्मार्थकाममोक्षदम् ॥ २१ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शतषोडशदलारूढं, विद्यादेवीभिरन्वितम् ।
चतुर्विंशतिपत्रस्थं, जिनं मातृसमावृतम् ॥ २२ ॥
मायावेष्टत्रयाग्रस्थं, क्रौंकारसहितं प्रभुम् ।
नवग्रहावृतं देवं, दिक्पालैर्दशभिर्वृतम् ॥ २३ ॥
चतुष्कोणेषु मन्त्राद्यचतुर्बीजान्वितैर्जिनैः ।
चतुरष्टदशद्वित्रिद्विधाङ्कसंज्ञकैर्युतम् ॥ २४ ॥
दिक्षु क्षकारयुक्तेन, विदिक्षु लाङ्कितेन च ।
चतुरस्रेण वज्राङ्कक्षितितत्त्वे प्रतिष्ठितम् ॥ २५ ॥
श्रीपार्श्वनाथमित्येवं, यः समाराधयेज्जिनम् ।
तं सर्वपापनिर्मुक्तं, भजते श्रीः शुभप्रदा ॥ २६ ॥
जिनेश! पूजितो भक्त्या, संस्तुतः प्रस्तुतोऽथवा ।
ध्यातस्त्वं यैः क्षणं वापि, सिद्धिस्तेषां महोदया ॥२७॥
श्रीपार्श्वमन्त्रराजान्ते, चिन्तामणिगुणास्पदम् ।
शान्तिपुष्टिकरं नित्यं, क्षुद्रोपद्रवनाशनम् ॥ २८ ॥
ऋद्धिसिद्धिमहाबुद्धिधृतिश्रीकान्तिकीर्तिदम् ।
मृत्युञ्जयं शिवात्मानं, जपनान्नन्दितो जनः ॥ २९ ॥
सर्वकल्याणपूर्णः स्याज्जरामृत्युविवर्जितः ।
अणिमादिमहासिद्धिं, लक्षजापेन चाप्नुयात् ॥ ३० ॥
प्राणायाममनोमन्त्रयोगादमृतमात्मनि ।
त्वामात्मानं शिवं ध्यात्वा, स्वामिन्! सिध्यन्ति जन्तवः
॥ ३१ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हर्षदः कामदश्चेति, रिपुघ्नः सर्वसौख्यदः ।
पातु वः परमानन्दलक्षणः संस्मृतो जिनः ॥ ३२ ॥
तत्त्वरूपमिदं स्तोत्रं, सर्वमङ्गलसिद्धिदम् ।
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं, नित्यं प्राप्नोति स श्रियम् ॥३३॥

श्रीग्रहशान्तिस्तोत्रम् ।

जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम् ।
ग्रहशान्तिं प्रवक्ष्यामि, लोकानां सुखहेतवे ॥ १ ॥
जिनेन्द्रैः खेचरा ज्ञेयाः, पूजनीया विधिक्रमात् ।
पुष्पैर्विलेपनैर्धूपैर्नैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे ॥ २ ॥
पद्मप्रभस्य मार्त्तण्डश्चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च ।
वासुपूज्यस्य भूपुत्रो, बुधोऽप्यष्टजिनेषु च ॥ ३ ॥
विमलानन्तधर्मारा:, शान्तिः कुन्थुर्नमिस्तथा ।
वर्धमानस्तथैतेषां, पादपद्मे बुधं न्यसेत् ॥ ४ ॥
ऋषभाजितसुपार्श्वाश्चाभिनन्दनशीतलौ ।
सुमतिः सम्भवस्वामी, श्रेयांसश्चैषु गीष्पतिः ॥ ५ ॥
सुविधेः कथितः शुक्रः, सुव्रतस्य शनैश्चरः ।
नेमिनाथे भवेद् राहुः, केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः ॥ ६ ॥
जनाँल्लग्ने च राशौ च, पीडयन्ति यदा ग्रहाः ।
तदा सम्पूजयेद् धीमान्, खेचरैः सहितान् जिनान् ॥७॥
नवकोष्ठकमालेख्यं, मण्डलं चतुरस्रकम् ।
ग्रहास्तत्र प्रतिष्ठाप्या, वक्ष्यमाणाः क्रमेण तु ॥ ८ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मध्ये हि भास्करः स्थाप्यः, पूर्वदक्षिणतः शशी।
दक्षिणस्यां धरासूनुर्बुधः पूर्वोत्तरेण च ॥ ९ ॥
उत्तरस्यां सुराचार्यः, पूर्वस्यां भृगुनन्दनः।
पश्चिमायां शनिः स्थाप्यो, राहुर्दक्षिणपश्चिमे ॥ १० ॥
पश्चिमोत्तरतः केतुरिति स्थाप्याः क्रमाद् ग्रहाः।
पट्टे स्थालेऽथवाऽऽग्नेय्यां, ईशान्यां तु सदा बुधैः ॥११ ॥
आदित्यसोममङ्गलबुधगुरुशुक्राः शनैश्चरो राहुः।
केतुप्रमुखाः खेटा, जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठन्तु ॥ १२ ॥
पुष्पगन्धादिभिर्धूपैर्नैवेद्यैः फलसंयुतैः।
वर्णसदृशदानैश्च, वस्त्रैश्च दक्षिणान्वितैः ॥ १३ ॥
जिननामकृतोच्चारा, देशनक्षत्रवर्णकैः।
पूजिताः संस्तुता भक्त्या, ग्रहाः सन्तु सुखावहाः ॥१४॥
जिनानामग्रतः स्थित्वा, ग्रहाणां शान्तिहेतवे।
नमस्कारसमं भक्त्या, जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥ १५ ॥
एवं यथानामकृताभिषेकैरालेपनैर्धूपनपूजनैश्च।
फलैश्च नैवेद्यवरैर्जिनानां, नाम्ना ग्रहेन्द्रा वरदा भवन्तु
॥१६॥
साधुभ्यो दीयते दानं, महोत्साहो जिनालये।
चतुर्विधस्य सङ्घस्य, बहुमानेन पूजनम् ॥ १७ ॥
भद्रबाहुरुवाचैवं, पञ्चमः श्रुतकेवली।
विद्याप्रवादतः पूर्वाद्, ग्रहशान्तिरुदीरिता ॥ १८ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीवज्रपञ्जरस्तोत्रम् ।

परमेष्ठिनमस्कारं, सारं नवपदात्मकम् ।
आत्मरक्षाकरं वज्रपञ्जराभं स्मराम्यहम् ॥ १ ॥

ॐ नमो अरिहंताणं, शिरस्कं शिरसि स्थितम् ।
ॐ नमो सव्वसिद्धाणं, मुखे मुखपटं वरम् ॥ २ ॥

ॐ नमो आयरियाणं, अङ्गरक्षाऽतिशायिनी ।
ॐ नमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दृढम् ॥ ३ ॥

ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, मोचके पादयोः शुभे ।
एसो पंचनमुक्कारो, शिला वज्रमयी तले ॥ ४ ॥

सव्वपावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयो बहिः ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, खादिराङ्गारखातिका ॥ ५ ॥

स्वाहान्तं च पदं ज्ञेयं, पढमं हवइ मंगलं ।
वप्रोपरि वज्रमयं, पिधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥

महाप्रभावा रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रवनाशिनी ।
परमेष्ठिपदोद्भूता, कथिता पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥

यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्ठिपदैः सदा ।
तस्य न स्याद् भयं व्याधिराधिश्चाऽपि कदाचन ॥ ८ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीजिनपञ्जरस्तोत्रम् ।

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं श्रीपरमात्मने नमः ।
ॐ ऐँ नमः श्रीगुरुपदाम्बुजेभ्यो नमः ।
ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं अर्हद्भ्यो नमो नमः ।
ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं सिद्धेभ्यो नमो नमः ।
ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं आचार्येभ्यो नमो नमः ।
ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमो नमः ।
ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं गौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमो नमः ॥ १ ॥

एष पञ्चनमस्कारः, सर्वपापक्षयङ्करः ।
मङ्गलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मङ्गलम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ जये विजये, अर्हं परमात्मने नमः ।
कमलप्रभसूरीन्द्रो, भाषते जिनपञ्जरम् ॥ ३ ॥

एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदम् ।
मनोऽभिलषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवम् ॥ ४ ॥

भूशय्या-ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविवर्जितः ।
देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलम् ॥ ५ ॥

अर्हन्तं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके ।
आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु नासिके ॥ ६ ॥
साधुवृन्दं मुखस्याऽग्रे, मनःशुद्धिं विधाय च ।
सूर्य-चन्द्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितो जिनः ।
अङ्ग-सन्धिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवङ्करः ॥ ८ ॥
पूर्वाशां च जिनो रक्षेदाग्नेयीं विजितेन्द्रियः ।
दक्षिणाशां परं ब्रह्म, नैऋतीं च त्रिकालवित् ॥ ९ ॥
पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायव्यां परमेश्वरः ।
उत्तरां तीर्थकृत् सर्वामीशानेऽपि निरञ्जनः ॥ १० ॥
पातालं भगवानर्हन्नाकाशं पुरुषोत्तमः ।
रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षन्तु सकलं कुलम् ॥ ११ ॥
ऋषभो मस्तकं रक्षेदजितोऽपि विलोचने ।
सम्भवः कर्णयुगलेऽभिनन्दनस्तु नासिके ॥ १२ ॥
ओष्ठौ श्रीसुमती रक्षेद्, दन्तान् पद्मप्रभो विभुः ।
जिह्वां सुपार्श्वदेवोऽयं, तालु चन्द्रप्रभाभिधः ॥ १३ ॥
कण्ठं श्रीसुविधी रक्षेद्, हृदयं जिनशीतलः ।
श्रेयांसो बाहुयुगलं, वासुपूज्यः करद्वयम् ॥ १४ ॥
अङ्गुलीर्विमलो रक्षेदनन्तोऽसौ नखानपि ।
श्रीधर्मोऽप्युदरास्थीनि, श्रीशान्तिर्नाभिमण्डलम् ॥१५॥
श्रीकुन्थुर्गुह्यकं रक्षेदरो लोमकटीतटम् ।
मल्लिरूरुपृष्ठमंशं, पिण्डिकां मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥
पादाङ्गुलीर्नमी रक्षेच्छ्रीनेमिश्चरणद्वयम् ।
श्रीपार्श्वनाथः सर्वाङ्गं, वर्धमानश्चिदात्मकम् ॥ १७ ॥
पृथिवीजलतेजस्कवाय्वाकाशमयं जगत् ।
रक्षेदशेषपापेभ्यो, वीतरागो निरञ्जनः ॥ १८ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजद्वारे श्मशाने च, सङ्ग्रामे शत्रुसङ्कटे ।
व्याघ्र-चौरा-ऽग्नि-सर्पादि-भूत-प्रेतभयाश्रिते ॥ १९ ॥
अकाले मरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ।
अपुत्रत्वे महादुःखे, मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥ २० ॥
डाकिनी-शाकिनीग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते ।
नद्युत्तारेऽब्धवैषम्ये, व्यसने चाऽऽपदि स्मरेत् ॥ २१ ॥
प्रातरेव समुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपञ्जरम् ।
तस्य किञ्चिद् भयं नास्ति, लभते सुखसम्पदः ॥ २२ ॥
जिनपञ्जरनामेदं, यः स्मरेदनुवासरम् ।
कमलप्रभसूरीन्द्रश्रियं स लभते नरः ॥ २३ ॥
प्रातः समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो,
यः स्तोत्रमेतज्जिनपञ्जरस्य ।
आसादयेत् सः कमलप्रभाख्यो,
लक्ष्मीं मनोवाञ्छितपूरणाय ॥ २४ ॥
श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगच्छे,
देवप्रभाचार्यपदाब्जहंसः ।
वादीन्द्रचूडामणिरेष जैनो,
जीयादसौ श्रीकमलप्रभाख्यः ॥ २५ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीगौतमस्वाम्यष्टकम् ।

श्रीइन्द्रभूतिं वसुभूतिपुत्रं, पृथ्वीभवं गौतमगोत्ररत्नम् ।
स्तुवन्ति देवाऽसुरमानवेन्द्राः, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥ १ ॥

श्रीवर्धमानात् त्रिपदीमवाप्य, मुहूर्तमात्रेण कृतानि येन ।
अङ्गानि पूर्वाणि चतुर्दशाऽपि, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥ २ ॥

श्रीवीरनाथेन पुरा प्रणीतं, मन्त्रं महानन्दसुखाय यस्य ।
ध्यायन्त्यमी सूरिवराः समग्राः, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥ ३ ॥

यस्याभिधानं मुनयोऽपि सर्वे, गृह्णन्ति भिक्षाभ्रमणस्य काले
मिष्टान्नपानाम्बरपूर्णकामाः, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥ ४ ॥

अष्टापदाद्रौ गगने स्वशक्त्या, ययौ जिनानां पदवन्दनाय ।
निशम्य तीर्थातिशयं सुरेभ्यः, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥ ५ ॥

त्रिपञ्चसङ्ख्याशततापसानां, तपःकृशानामपुनर्भवाय ।
अक्षीणलब्ध्या परमान्नदाता, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥ ६ ॥

सदक्षिणं भोजनमेव देयं, साधर्मिकं सङ्घसपर्ययेति ।
कैवल्यवस्त्रं प्रददौ मुनीनां, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥ ७ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शिवं गते भर्तरि वीरनाथे, युगप्रधानत्वमिहैव मत्वा।
पट्टाभिषेको विदधे सुरेन्द्रैः, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥ ८ ॥

त्रैलोक्यबीजं परमेष्ठिबीजं, सद्ध्यानबीजं जिनराजबीजम्।
यन्नाम चोक्तं विदधाति सिद्धिं, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥ ९ ॥

श्रीगौतमस्याष्टकमादरेण, प्रबोधकाले मुनिपुङ्गवा ये।
पठन्ति ते सूरिपदं च देवानन्दं लभन्ते नितरां क्रमेण ॥ १० ॥

श्रीशत्रुञ्जयतीर्थस्तोत्रम्।

पूर्णानन्दमयं महोदयमयं कैवल्यचिद्दृङ्मयं,
रूपातीतमयं स्वरूपरमणं स्वाभाविकीश्रीमयम्।
ज्ञानोद्योतमयं कृपारसमयं स्याद्वादविद्यालयं,
श्रीसिद्धाचलतीर्थराजमनिशं वन्देऽहमादीश्वरम् ॥ १ ॥

श्रीमद्युगादीश्वरमात्मरूपं,
योगीन्द्रगम्यं विमलाद्रिसंस्थम्।
सज्ज्ञानसद्दृष्टिसुदृष्टलोकं,
श्रीनाभिसूनुं प्रणमामि नित्यम् ॥ २ ॥

राजादनाधस्तनभूमिभागे,
युगादिदेवाङ्घ्रिसरोजपीठम्।
देवेन्द्रवन्द्यं सुरराजपूज्यं,
सिद्धाचलाग्रस्थितमर्चयामि ॥ ३ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आदिप्रभोर्दक्षिणदिग्विभागे,
सहस्रकूटे जिनराजमूर्त्तीः ।
सौम्याकृतीः सिद्धततीनिभाश्च,
शत्रुञ्जयस्थाः परिपूजयामि ॥ ४ ॥

आदिप्रभोर्वक्त्रसरोरुहाच्च,
विनिर्गतां श्रीत्रिपदीमवाप्य ।
यो द्वादशाङ्गीं विदधे गणेशः,
स पुण्डरीको जयताच्छिवाद्रौ ॥ ५ ।

चउद्दसाणं सयसंखयाणं,
बावण्णसहियाण गणाहिवाणं ।
सुपाउआ जत्थ विराजमाणा,
सत्तुंजयं तं पणमामि णिच्चं ॥ ६ ॥

चत्तट्ठकम्मा परिणामरम्मा,
लद्धप्पधम्मा सुगुणेहिं पुण्णा ।
चत्तारि अट्ठा दस दुण्णि देवा,
अट्ठावए ताण जिणाण वंदे ॥ ७ ॥

अणंतणाणीण अणंतदंसिणो,
अणंतसुक्खाण अणंतवीरिणो ।
वीसं जिणा जत्थ सिवं पवण्णा,
सम्मेअसेलं तमहं थुणामि ॥ ८ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जत्थेव सिद्धो पढमो मुणिंदो,
गणाहिवो पुंडरिओ विसिट्ठो ।
अणेगसाहूपरिवारसंजुओ,
तं पुंडरीयाचलमच्चयामि ॥ ९ ॥

विमलगिरिवतंसः सिद्धिगङ्गाम्बुहंसः,
सकलसुखविधाता दर्शनज्ञानदाता ।
प्रणतसुरनरेन्द्रः केवलज्ञानचन्द्रः,
सृजतु मुदमुदारां नाभिजन्मा जिनेन्द्रः ॥ १० ॥

पञ्चषष्टियन्त्रगर्भितं श्रीचतुर्विंशतिजिनस्तोत्रम् ।

वन्दे धर्मजिनं सदा सुखकरं चन्द्रप्रभं नाभिजं,
श्रीमद्वीरजिनेश्वरं जयकरं कुन्थुं च शान्तिं जिनम् ।
मुक्तिश्रीफलदाय्यनन्तमुनिपं वन्दे सुपार्श्वं विभुं,
श्रीमन्मेघनृपात्मजं च सुखदं पार्श्वं मनोऽभीष्टदम् ॥ १ ॥

श्रीनेमीश्वरसुव्रतौ च विमलं पद्मप्रभं सांवरं,
सेवे सम्भवशङ्करं नमिजिनं मल्लिं जयानन्दनम् ।
वन्दे श्रीजिनशीतलं च सुविधिं सेवेऽजितं मुक्तिदं,
श्रीसङ्घं बत पञ्चविंशतितमं साक्षादरं वैष्णवम् ॥ २ ॥

स्तोत्रं सर्वजिनेश्वरैरभिगतं मन्त्रेषु मन्त्रं वरं,
एतत्सङ्गतयन्त्र एव विजयो द्रव्यैर्लिखित्वा शुभैः ।
पार्श्वे सन्निधयमाण एव सुखदो माङ्गल्यमालाप्रदो,
वामाङ्गे वनिता नरास्तदितरे कुर्वन्ति ये भावतः ॥ ३ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्थाने स्थितियुद्धवादकरणे राजादिसन्दर्शने,
वश्यार्थे सुतहेतवे धनकृते रक्षन्तु पार्श्वे सदा।
मार्गे संविषमे दवाग्निज्वलिते चिन्तादिनिर्नाशने,
यन्त्रोऽयं मुनिनेत्रसिंहकविना सङ्ग्रन्थितः सौख्यदः
॥ ४ ॥

पञ्चषष्टियन्त्रस्थापना —

१५	८	१	२४	१७
१६	१४	७	५	२३
२२	२०	१३	६	४
३	२१	१९	१२	१०
९	२	२५	१८	११

पञ्चषष्टियन्त्रगर्भितं श्रीचतुर्विंशतिजिनस्तोत्रम् ।

आदौ नेमिजिनं नौमि, सम्भवं सुविधिं तथा ।
धर्मनाथं महादेवं, शान्तिं शान्तिकरं सदा ॥ १ ॥
अनन्तं सुव्रतं भक्त्या, नमिनाथं जिनोत्तमम् ।
अजितं जितकन्दर्पं, चन्द्रं चन्द्रसमप्रभम् ॥ २ ॥
आदिनाथं तथा देवं, सुपार्श्वं विमलं जिनम् ।
मल्लिनाथं गुणोपेतं, धनुषां पञ्चविंशतिम् ॥ ३ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अरनाथं महावीरं, सुमतिं च जगद्गुरुम् ।
श्रीपद्मप्रभनामानं, वासुपूज्यं सुरैर्नतम् ॥ ४ ॥
शीतलं शीतलं लोके, श्रेयांसं श्रेयसे सदा ।
कुन्थुनाथं च वामेयं, श्रीअभिनन्दनं जिनम् ॥ ५ ॥
जिनानां नामभिर्बद्धः, पञ्चषष्टिसमुद्भवः ।
यन्त्रोऽयं राजते यत्र, तत्र सौख्यं निरन्तरम् ॥ ६ ॥
यस्मिन् गृहे महाभक्त्या, यन्त्रोऽयं पूज्यते बुधैः ।
भूतप्रेतपिशाचादिभयं तत्र न विद्यते ॥ ७ ॥
सकलगुणनिधानं यन्त्रमेनं विशुद्धं,
हृदयकमलकोषे धीमतां ध्येयरूपम् ।
जयतिलकगुरुश्रीसूरिराजस्य शिष्यो,
वदति सुखनिदानं मोक्षलक्ष्मीनिवासम् ॥८॥

पञ्चषष्टियन्त्रस्थापना

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बृहद् ऋषिमण्डलस्तोत्रम् ।

आद्यन्ताक्षरसंलक्ष्यमक्षरं व्याप्य यत् स्थितम् ।
अग्निज्वालासमं नादबिन्दुरेखासमन्वितम् ॥ १ ॥
अग्निज्वालासमाक्रान्तं, मनोमलविशोधनम् ।
देदीप्यमानं हृत्पद्मे, तत् पदं नौमि निर्मलम् ॥ २ ॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥
ॐ नमोऽर्हद्भ्य ईशेभ्यः, ॐ सिद्धेभ्यो नमो नमः ।
ॐ नमः सर्वसूरिभ्यः, उपाध्यायेभ्य ॐ नमः ॥ ४ ॥
ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः, ॐ ज्ञानेभ्यो नमो नमः ।
ॐ नमः तत्त्वदृष्टिभ्यः, चारित्रेभ्यस्तु ॐ नमः ॥ ५ ॥
श्रेयसेऽस्तु श्रियेऽस्त्वेतत्, अर्हदाद्यष्टकं शुभम् ।
स्थानेष्वष्टसु विन्यस्तं, पृथग्बीजसमन्वितम् ॥ ६ ॥
आद्यं पदं शिखां रक्षेत्, परं रक्षेत् तु मस्तकम् ।
तृतीयं रक्षेद् नेत्रे द्वे, तुर्यं रक्षेच्च नासिकाम् ॥ ७ ॥
पञ्चमं तु मुखं रक्षेत्, षष्ठं रक्षेच्च घण्टिकाम् ।
नाभ्यन्तं सप्तमं रक्षेत्, रक्षेत् पादान्तमष्टमम् ॥ ८ ॥
पूर्वं प्रणवतः सान्तः, सरेफो द्व्यब्धिपञ्चषान् ।
सप्ताष्टदशसूर्याङ्कान्. श्रितो बिन्दुस्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥
पूज्यनामाक्षरा आद्याः, पञ्चातो ज्ञान-दर्शने ।
चारित्रेभ्यो नमो मध्ये, ह्रीँ सान्तः समलंकृतः ॥ १० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[मूलमन्त्रोद्धारः—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रूं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः—
अ सि आ उ सा सम्यग्ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्यो नमः ।]
जम्बूवृक्षधरो द्वीपः, क्षारोदधिसमावृतः ।
अर्हदाद्यष्टकैरष्टकाष्ठाधिष्ठैरलंकृतः ॥ ११ ॥
तन्मध्ये सङ्गतो मेरुः, कूटलक्षैरलंकृतः ।
उच्चैरुच्चैस्तरस्तारः, तारामण्डलमंडितः ॥ १२ ॥
तस्योपरि सकारान्तं, बीजमध्यास्य सर्वगम् ।
नमामि बिम्बमार्हन्त्यं, ललाटस्थं निरंजनम् ॥ १३ ॥
अक्षयं निर्मलं शान्तं, बहुलं जाड्यतोज्झितम् ।
निरीहं निरहंकारं, सारं सारतरं घनम् ॥ १४ ॥
अनुद्धतं शुभं स्फीतं, सात्त्विकं राजसं मतम् ।
तामसं चिरसंबुद्धं, तैजसं शर्वरीसमम् ॥ १५ ॥
साकारं च निराकारं, सरसं विरसं परम् ।
परापरं परातीतं, परम्पर-परापरम् ॥ १६ ॥
सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्वृतं भ्रान्तिवर्जितम् ।
निरंजनं निराकरं, निर्लेपं वीतसंश्रयम् ॥ १७ ॥
ईश्वरं ब्रह्मसंबुद्धं बुद्धं सिद्धं मतं गुरुम् ।
ज्योतिरूपं महादेवं, लोकालोकप्रकाशकम् ॥ १८ ॥
अर्हदाख्यस्तु वर्णान्तः, सरेफो बिन्दुमण्डितः ।
तुर्यस्वरकलायुक्तो, बहुधा नादमालितः ॥ १९ ॥
एकवर्णं द्विवर्णं च, त्रिवर्णं तुर्यवर्णकम् ।
पञ्चवर्णं महावर्णं, सपरं च परापरम् ॥ २० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे, ऋषभाद्या जिनोत्तमाः ।
वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ताः, ध्यातव्याः तत्र सङ्गताः ॥ २१ ॥
नादः चन्द्रसमाकारो, बिन्दुर्नीलसमप्रभः ।
कलारुणसमा सान्तः, स्वर्णाभः सर्वतोमुखः ॥ २२ ॥
शिरः संलीन ईकारो विनीलो वर्णतः स्मृतः ।
वर्णानुसारसंलीनं तीर्थकृन्मण्डलं स्तुमः ॥ २३ ॥
चन्द्रप्रभ-पुष्पदन्तौ, नादस्थितिसमाश्रितौ ।
बिन्दुमध्यगतौ नेमि-सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २४ ॥
पद्मप्रभ-वासुपूज्यौ, कलापदमधिष्ठितौ ।
शिर 'ई' स्थितिसंलीनौ, पार्श्व-मल्ली जिनोत्तमौ ॥ २५ ॥
शेषाः तीर्थकृतः सर्वे, 'ह-र'स्थाने नियोजिताः ।
मायाबीजाक्षरं प्राप्ता, चतुर्विंशतिरर्हताम् ॥ २६ ॥
ऋषभं चाजितं वन्दे, सम्भवं चाभिनन्दनम् ।
श्रीसुमतिं सुपार्श्वं च, वन्दे श्रीशीतलं जिनम् ॥ २७ ॥
श्रेयांसं विमलं वन्देऽनन्तं श्रीधर्मनाथकम् ।
शान्तिं कुन्थुमराहन्तं, नमिं वीरं नमाम्यहम् ॥ २८ ॥
षोडशैवं जिनानेतान्, गाङ्गेयद्युतिसन्निभान् ।
त्रिकालं नौमि सद्भक्त्या, 'ह-रा'क्षरमधिष्ठितान् ॥२९॥
गतराग-द्वेषमोहाः, सर्वपापविवर्जिताः ।
सर्वदा सर्वकालेषु, ते भवन्तु जिनोत्तमाः ॥ ३० ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिनस्तु डाकिनी ॥ ३१ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिनस्तु राकिनी ॥ ३२ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिनस्तु लाकिनी ॥ ३३ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिनस्तु काकिनी ॥ ३४ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिनस्तु शाकिनी ॥ ३५ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिनस्तु हाकिनी ॥ ३६ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिनस्तु याकिनी ॥ ३७ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिनस्तु नागिनी ॥ ३८ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिनस्तु जाकिनी ॥ ३९ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिनस्तु भाकिनी ॥ ४० ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिनस्तु योगिनी ॥ ४१ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिनस्तु व्यन्तरी ॥ ४२ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिनस्तु मानवी ॥ ४३ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिनस्तु जृम्भिणी ॥ ४४ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिनस्तु दैवं हि ॥ ४५ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिनस्तु जृम्भिका ॥ ४६ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु पन्नगाः ॥ ४७ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु गोनसाः ॥ ४८ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु दंष्ट्रिणः ॥ ४९ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु वृश्चिकाः ॥ ५० ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु सिंहकाः ॥ ५१ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु चित्रकाः ॥ ५२ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु हस्तिनः ॥ ५३ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु रेपलाः ॥ ५४ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु शूकराः ॥ ५५ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु ग्रामिणः ॥ ५६ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु शत्रवः ॥ ५७ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु हिंसकाः ॥ ५८ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु दुर्जनाः ॥ ५९ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु तस्कराः ॥ ६० ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु पाप्मानः ॥ ६१ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु तोयदाः ॥ ६२ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु वह्नयः ॥ ६३ ॥
देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु व्याधयः ॥ ६४ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु शृङ्गिणः ॥ ६५ ॥

देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु पक्षिणः ॥ ६६ ॥

देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु देवताः ॥ ६७ ॥

दवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु व्यन्तराः ॥ ६८ ॥

देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्ग, मां मा हिंसन्तु किन्नराः ॥ ६९ ॥

देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु खेचराः ॥ ७० ॥

देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु राक्षसाः ॥ ७१ ॥

देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु मुद्गलाः ॥ ७२ ॥

देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु दानवाः ॥ ७३ ॥

देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु क्रुग्रहाः ॥ ७४ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मां मा हिंसन्तु भूमिपाः ॥ ७५ ॥

देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं, सा मां पातु सदैव हि ॥ ७६ ॥

श्रीगौतमस्य या मुद्रा, तस्या या भुवि लब्धयः ।
ताभिरभ्यधिकं ज्योतिः, अर्हन् सर्वनिधीश्वरः ॥ ७७ ॥

पातालवासिनो देवाः, देवाः भूपीठवासिनः ।
स्वर्वासिनोऽपि ये देवाः, सर्वे रक्षन्तु मामितः ॥ ७८ ॥

येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धयः ।
ते सर्वे मुनयो दिव्याः, मां संरक्षन्तु सर्वदा ॥ ७९ ॥

भवनेन्द्र-व्यन्तरेन्द्र-ज्योतिष्केन्द्र-कल्पेन्द्रेभ्यो नमो नमः । श्रुतावधि-देशावधि-परमावधि-सर्वावधि-बुद्धि-ऋद्धिप्राप्त-सर्वौषधर्द्धिप्राप्त-अनन्तावध्यर्द्धिप्राप्त-तप-ऋद्धिप्राप्त-रसर्द्धिप्राप्त-वैक्रियर्द्धिप्राप्त-क्षेत्रर्द्धिप्राप्त-अक्षीणमहानसर्द्धिप्राप्तेभ्यो नमः ।

ॐ ह्रीः श्रीश्च धृतिर्लक्ष्मीः, गौरी चण्डी सरस्वती ।
जयाऽम्बा विजया क्लिन्नाऽजिता नित्या मदद्रवा ॥८०॥

कामाङ्गा कामबाणा च, सानन्दानन्दमालिनी ।
माया मायाविनी रौद्री, कला काली कलिप्रिया ॥ ८१ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एताः सर्वा महादेव्योः वर्त्तन्ते या जगत्त्रये ।
मह्यं सर्वाः प्रयच्छन्तु, कान्तिं कीर्त्तिं धृतिं मतिम् ॥८२॥

विशेषकम् ।

दुर्जना भूत-वेतालाः, पिशाचा मुद्गलास्तथा ।
ते सर्वेऽप्युपशाम्यन्तु, देवदेवप्रभावतः ॥ ८३ ॥

दिव्यो गोप्यः सुदुष्प्रापः, श्रीऋषिमण्डलस्तवः ।
भाषितः तीर्थनाथेन, जगत्त्राणकृतेऽनघः ॥ ८४ ॥

रणे राजकुले वह्नौ, जले दुर्गे गजे हरौ ।
श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवम् ॥ ८५ ॥

राज्यभ्रष्टा निजं राज्यं, पदभ्रष्टा निजं पदम् ।
लक्ष्मीभ्रष्टा निजां लक्ष्मीं, प्राप्नुवन्ति न संशयः ॥८६॥

भार्यार्थी लभते भार्यां, सुतार्थी लभते सुतम् ।
वित्तार्थी लभते वित्तं, नरः स्मरणमात्रतः ॥ ८७ ॥

विशेषकम् ।

स्वर्णे रौप्ये पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् ।
तस्यैवाष्टमहासिद्धिर्गृहे वसति शाश्वती ॥ ८८ ॥

भूर्जपत्रे लिखित्वेदं, गलके मूर्ध्नि वा भुजे ।
धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्वभीतिविनाशकम् ॥ ८९ ॥

भूतैः प्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः, पिशाचैर्मुद्गलैर्मलैः ।
वातपित्तकफोद्रेकैः, मुच्यते नात्र संशयः ॥ ९० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भूर्भुवःस्वस्त्रयीपीठवर्त्तिनः शाश्वता जिनाः ।
तैः स्तुतैर्वन्दितैर्दृष्टैर्यत् फलं तत् फलं स्मृतौ ॥ ९१ ॥

एतद् गोप्यं महास्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित् ।
मिथ्यात्ववासिने दत्ते, बालहत्या पदे पदे ॥ ९२ ॥

आचाम्लादि तपः कृत्वा पूजयित्वा जिनावलीम् ।
अष्टसाहस्रिको जापः, कार्यः तत्सिद्धिहेतवे ॥ ९३ ॥

शतमष्टोत्तरं प्रातः, ये स्मरन्ति दिने दिने ।
तेषां न व्याधयो देहे, प्रभवन्ति न चापदः ॥ ९४ ॥

युग्मम् ।

अष्टमासावधिं यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् ।
स्तोत्रमेतत् महातेजो, जिनबिम्बं स पश्यति ॥ ९५ ॥

दृष्टे सत्यर्हतो बिम्बे, भवे सप्तमके ध्रुवम् ।
पदमाप्नोति शुद्धात्मा, परमानन्दसम्पदाम् ॥ ९६ ॥

युग्मम् ।

विश्ववन्द्यो भवेद् ध्याता, कल्याणानि च सोऽश्नुते ।
गत्वा स्थानं परं सोऽपि, भूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ९७ ॥

इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं, स्तुतीनामुत्तमं परम् ।
पठनात् स्मरणाद् जापाद्, लभते पदमव्ययम् ॥ ९८ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रत्नाकरपञ्चविंशिका ।

श्रेयःश्रियां मङ्गलकेलिसद्म !,
नरेन्द्रदेवेन्द्रनताङ्घ्रिपद्म ! ।
सर्वज्ञ ! सर्वातिशयप्रधान !,
चिरं जय ज्ञानकलानिधान ! ॥ १ ॥

जगत्त्रयाधार ! कृपावतार !,
दुर्वारसंसारविकारवैद्य ! ।
श्रीवीतराग ! त्वयि मुग्धभावाद्,
विज्ञ ! प्रभो ! विज्ञपयामि किञ्चित् ॥ २ ॥

किं बाललीलाकलितो न बालः,
पित्रोः पुरो जल्पति निर्विकल्पः ? ।
तथा यथार्थं कथयामि नाथ !,
निजाशयं सानुशयस्तवाऽग्रे ॥ ३ ॥

दत्तं न दानं परिशीलितं च,
न शालि शीलं न तपोऽभितप्तम् ।
शुभो न भावोऽप्यभवद् भवेऽस्मिन्,
विभो ! मया भ्रान्तमहो ! मुधैव ॥ ४ ॥

दग्धोऽग्निना क्रोधमयेन दष्टो,
दुष्टेन लोभाख्यमहोरगेण ।
ग्रस्तोऽभिमानाजगरेण माया-
जालेन बद्धोऽस्मि कथं भजे त्वाम् ? ॥ ५ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कृतं मयाऽमुत्र हितं न चेह,
लोकेऽपि लोकेश ! खुखं न मेऽभूत् ।
अस्मादृशां केवलमेव जन्म,
जिनेश ! जज्ञे भवपूरणाय ॥ ६ ॥

मन्ये मनो यन्न मनोज्ञवृत्तं,
त्वदास्यपीयूषमयूखलाभात् ।
द्रुतं महानन्दरसं कठोर-
मस्मादृशां देव ! तदश्मतोऽपि ॥ ७ ॥

त्वत्तः सुदुष्प्रापमिदं मयाऽऽप्तं,
रत्नत्रयं भूरिभवभ्रमेण ।
प्रमादनिद्रावशतो गतं तत्,
कस्याऽग्रतो नायक ! पूत्करोमि ? ॥ ८ ॥

वैराग्यरङ्गः परवञ्चनाय,
धर्मोपदेशो जनरञ्जनाय ।
वादाय विद्याध्ययनं च मेऽभूत्,
कियद् ब्रुवे हास्यकरं स्वमीश ! ? ॥ ९ ॥

परापवादेन मुखं सदोषं,
नेत्रं परस्त्रीजनवीक्षणेन ।
चेतः परापायविचिन्तनेन,
कृतं भविष्यामि कथं विभोऽहम् ? ॥ १० ॥

विडम्बितं यत् स्मरघस्मरार्ति-
दशावशात् स्वं विषयान्धलेन ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशितं तद् भवतो हियैव,
सर्वज्ञ ! सर्वं स्वयमेव वेत्सि ॥ ११ ॥
ध्वस्तोऽन्यमन्त्रैः परमेष्ठिमन्त्रः,
कुशास्त्रवाक्यैर्निहतागमोक्तः ।
कर्तुं वृथा कर्म कुदेवसङ्गा-
दवाञ्छि ही नाथ ! मतिभ्रमो मे ॥ १२ ॥
विमुच्य दृग्लक्ष्यगतं भवन्तं,
ध्याता मया मूढधिया हृदन्तः ।
कटाक्षवक्षोजगभीरनाभि-
कटीतटीयाः सुदृशां विलासाः ॥ १३ ॥
लोलेक्षणावक्त्रनिरीक्षणेन,
यो मानसे रागलवो विलग्नः ।
न शुद्धसिद्धान्तपयोधिमध्ये,
धौतोऽप्यगात्तारक ! कारणं किम् ? ॥ १४ ॥
अङ्गं न चङ्गं न गणो गुणानां,
न निर्मलः कोऽपि कलाविलासः ।
स्फुरत्प्रभा न प्रभुता च काऽपि,
तथाऽप्यहङ्कारकदर्थितोऽहम् ॥ १५ ॥
आयुर्गलत्याशु न पापबुद्धि-
र्गतं वयो नो विषयाभिलाषः ।
यत्नश्च भैषज्यविधौ न धर्मे,
स्वामिन् ! महामोहविडम्बना मे ॥ १६ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाऽऽत्मा न पुण्यं न भवो न पापं,
मया विटानां कटुगीरपीयम् ।
आधारि कर्णे त्वयि केवलार्के,
परिस्फुटे सत्यपि देव ! धिङ् माम् ॥ १७ ॥
न देवपूजा न च पात्रपूजा,
न श्राद्धधर्मश्च न साधुधर्मः ।
लब्ध्वाऽपि मानुष्यमिदं समस्तं,
कृतं मयाऽरण्यविलापतुल्यम् ॥ १८ ॥
चक्रे मयाऽसत्स्वपि कामधेनु-
कल्पद्रु-चिन्तामणिषु स्पृहार्त्तिः ।
न जैनधर्मे स्फुटशर्मदेऽपि,
जिनेश ! मे पश्य विमूढभावम् ॥ १९ ॥
सद्भोगलीला न च रोगकीला,
धनागमो नो निधनागमश्च ।
दारा न कारा नरकस्य चित्ते,
व्यचिन्ति नित्यं मयकाऽधमेन ॥ २० ॥
स्थितं न साधोर्हृदि साधुवृत्तात्,
परोपकारान्न यशोऽर्जितं च ।
कृतं न तीर्थोद्धरणादि कृत्यं,
मया मुधा हारितमेव जन्म ॥ २१ ॥
वैराग्यरङ्गो न गुरूदितेषु,
न दुर्जनानां वचनेषु शान्तिः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाऽध्यात्मलेशो मम कोऽपि देव !,
कार्यः कथङ्कारमयं भवाब्धिः ॥ २२ ॥
पूर्वे भवेऽकारि मया न पुण्य-
मागामिजन्मन्यपि नो करिष्ये ।
यदीदृशोऽहं मम तेन नष्टा,
भूतोद्भवद्भाविभवत्रयीश ! ॥ २३ ॥
किं वा मुधाऽहं बहुधा सुधाभुक्-
पूज्य ! त्वदग्रे चरितं स्वकीयम् ।
जल्पामि ? यस्मात् त्रिजगत्स्वरूप-
निरूपकस्त्वं कियदेतदत्र ? ॥ २४ ॥
दीनोद्धारधुरन्धरस्त्वदपरो नास्ते मदन्यः कृपा-
पात्रं नाऽत्र जने जिनेश्वर ! तथाऽप्येतां न याचे श्रियम् ।
किं त्वर्हन्निदमेव केवलमहो ! सद्बोधिरत्नं शिवं,
श्रीरत्नाकर ! मङ्गलैकनिलय ! श्रेयस्करं प्रार्थये ॥ २५ ॥

श्रीशत्रुञ्जयलघुकल्पः ।

अइमुत्तयकेवलिणा कहिअं सेत्तुंजतित्थमाहप्पं ।
नारयरिसिस्स पुरओ तं निसुणह भावओ भविआ ! ॥१॥
सेत्तुंजे पुंडरीओ सिद्धो मुणिकोडीपंचसंजुत्तो ।
चित्तस्स पुण्णिमाए सो भण्णइ तेण पुंडरिओ ॥२॥
नमि विनमी रायाणो सिद्धा कोडीहिं दोहिं साहूणं ।
तह दविड वारिखिल्ला य निव्वुआ दस य कोडीओ ॥३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पज्जुन्न-संबपमुहा अद्धुट्ठाओ कुमारकोडीओ ।
तह पंडवा वि पंच य सिद्धिगया नारयरिसी य ॥४॥
थावच्चासुय-सुय-सेलगा य मुणिणो वि तह य राममुणी ।
भरहो दसरहपुत्तो सिद्धा वंदामि सेत्तुंजे ॥५॥
अन्ने वि खवियमोहा उसभाइविसालवंससंभूआ ।
जे सिद्धा सेत्तुंजे तं नमह मुणी असंखिज्जा ॥६॥
पन्नास जोयणाइं आसी सेत्तुंजवित्थरो मूले ।
दस जोयण सिहरतले उच्चत्तं जोयणा अट्ठ ॥७॥
जं लहइ अन्नतित्थे उग्गेण तवेण बंभचेरेण ।
तं लहइ पयत्तेणं सेत्तुंजगिरिम्मि निवसंतो ॥८॥
जं कोडीए पुण्णं कामियआहारभोइया जे उ ।
तं लहइ तत्थ पुण्णं एगोवासेण सेत्तुंजे ॥९॥
जं किंचि नाम तित्थं सग्गे पायालि माणुसे लोए ।
तं सव्वमेव दिट्ठं पुंडरिए वंदिए संते ॥१०॥
पडिलाभंते संघं दिट्ठमदिट्ठे य साहु सेत्तुंजे ।
कोडिगुणं च अदिट्ठे दिट्ठे अ अणंतयं होइ ॥११॥
केवलनाणुप्पत्ती निव्वाण आसि जत्थ साहूणं ।
पुंडरिए वंदित्ता सव्वे ते वंदिया तत्थ ॥१२॥
अट्ठावय सम्मेए पावा चंपाइ उज्जयंतनगे ।
वंदित्ता पुण्णफलं सयगुणयं तं पि पुंडरिए ॥ १३ ॥
पूआकरणे पुण्णं एगगुणं सयगुणं च पडिमाए ।
जिणभवणेण सहस्सं णंतगुणं पालणे होइ ॥ १४ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिमं चेइहरं वा सित्तुंजगिरिस्स मत्थए कुणइ।
भुत्तूण भरहवासं निवसइ सग्गे निरुवसग्गे ॥ १५ ॥
नवकार पोरिसीए पुरिमड्ढेगासणं च आयामं।
पुंडरियं च सरंतो फलकंखी कुणइ अभतट्ठं ॥ १६ ॥
छट्ठ-ऽट्ठम-दसम-दुवालसाण मासऽद्धमासखवणाणं।
तिगरणसुद्धो लहई सित्तुंजं संभरंतो अ ॥ १७ ॥
छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं तु सत्त जत्ताइं।
जो कुणई सेत्तुंजे तइयभवे लहइ सो मुक्खं ॥ १८ ॥
अज्ज वि दीसइ लोए भत्तं चइऊण पुंडरीयनगे।
सग्गे सुहेण वच्चइ सीलविहूणो वि होऊणं ॥ १९ ॥
छत्तं-झयं-पडागं-चामर-भिंगार-थालदाणेणं।
विज्जाहरो अ हवई तह चक्की होइ रहदाणा ॥ २० ॥
दस वीस तीस चत्ता पन्नासा पुप्फदामदाणेण।
लहई चउत्थ-छट्ठ-ऽट्ठम-दसम-दुवालसफलाइं ॥ २१ ॥
धूवे पक्खुववासो मासक्खमणं कपूरधूवम्मि।
कित्तिय मासक्खमणं साहू पडिलाभिए लहइ ॥२२॥
न वि तं सुवन्न-भूमी-भूसणदाणेण अन्नतित्थेसु।
जं पावइ पुण्णफलं पूआ-न्हवणेण सित्तुंजे ॥ २३ ॥
कंतार-चोर-सावय-समुद्द-दारिद्द-रोग-रिउरुद्धा।
मुच्चंति अविग्घेणं जे सेत्तुंजं धरंति मणे ॥ २४ ॥
सारावलीपयन्नगगाहाओ सुअहरेण भणिआओ।
जो पढइ गुणइ निसुणइ स लहइ सित्तुंजजत्तफलं ॥२५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीसमवसरणस्तवः ।

थुणिमो केवलिवत्थं, वरविज्जाणंदधम्मकित्तित्थं ।
देविंदनयपयत्थं, तित्थयरं समवसरणत्थं ॥१॥
पयडिअसमत्थभावो, केवलिभावो जिणाण जत्थ भवे ।
सोहंति सव्वओ तहिं महिमाजोयणमनिलकुमरा ॥२॥
वरिसंति मेहकुमरा सुरहिजलं उउसुरा कुसुमपसरं ।
विरयंति वणा मणि-कणग-रयणचित्तं महिअलं तो ॥३॥
अब्भिंतर-मज्झ-बहिं, तिवप्प मणि-रयण-कणय-
कविसीसा ।
रयण-ऽज्जुण-रुप्पमया, वेमाणिअ-जोइ-भवणकया ॥४॥
बट्टम्मि दुतीसंगुलतित्तिसधणुपिहुल पणसयधणुच्चा ।
छद्धणुसयइगकोसंतरा य रयणमयचउदारा ॥५॥
चउरंसे इगधणुसयपिहुवप्पा सड्ढकोसअंतरिया ।
पढमबिआ बिअतइआ, कोसंतरपुव्वमिव सेसं ॥६॥
सोवाणसहसदस करपिहुच्च गंतुं भुवो पढमवप्पो ।
तो पन्नाधणु पयरो, तओ अ सोवाण पणसहसा ॥७॥
तो बियवप्पो पन्नधणु पयर सोवाण सहसपण तत्तो ।
तइओ वप्पो छस्सयधणुइगकोसेहिँ तो पीढं ॥८॥
चउदार तिसोवाणं, मज्झे मणिपीढयं जिणतणुच्चं ।
दोधणुसयपिहु दीहं, सड्ढदुकोसेहिं धरणिअला ॥९॥
जिणतणुबारगुणुच्चो, समहिअजोअणपिहू असोगतरू ।
तयहो य देवछंदो, चउसीहासण सपयपीढा ॥१०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तदुवरि चउ छत्तातिआ, पडिरूवतिगं तहऽट्ठ चमरधरा।
पुरओ कणयकुसेसयठिअफालिअधम्मचक्कचउ ॥११॥
झयछत्तमयरमंगलपंचालोदामवेइवरकलसे।
पइदारं मणितोरणतिअ धूवघडी कुणंति वणा ॥१२॥
जोयणसहस्सदंडा, चउज्झया धम्म-माण-गय-सीहा।
ककुभाइजुया सव्वं, माणमिणं निअनिअकरेणं ॥१३॥
पविसिअ पुव्वाइ पहू, पयाहिणं पुव्वआसणनिविट्ठो।
पयपीढठवियपाओ, पणमिअतित्थो कहइ धम्मं ॥१४॥
मुणि वेमाणिणि समणी, सभवणजोइवणदेविदेवतिअं।
कप्पसुरनरित्थितिअं, ठंतिग्गेयाइविदिसासु ॥१५॥
चउदेविसमणि उड्ढट्ठिआ निविट्ठा नरित्थि सुरसमणा।
इय पण सग परिस सुणंति देसणं पढमवप्पंतो ॥१६॥
इय आवस्सयवित्तीवुत्तं चुन्नीइ पुण मुणि निविट्ठा।
दो वेमाणिणिसमणी, उड्ढा सेसा ठिआ उ नव ॥१७॥
बीअंतो तिरि ईसाणि देवछंदो अ जाण तइअंतो।
तह चउरंसे दु दु वावि कोणए वट्टि इक्किक्का ॥१८॥
पीअ-सिअ-रत्त-सामा सुर-वण-जोइ-भवणा रयणवप्पे।
धणु-दंड-पास-गयहत्थ सोम-जम-वरुण-धणयक्खा ॥१९॥
जय-विजया-ऽजिय-अपराजिअ त्ति सिअ-अरुण-पीअ-नीलाभा।
बीए देवीजुअला, अभयं-ऽकुस-पास-मगरकरा ॥२०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तइअ बहि सुरा तुंबरु, खट्टंगि-कवाल-जड-मउडधारी ।
पुव्वाइदारवाला, तुंबरुदेवो अ पडिहारो ॥२१॥
सामन्न समोसरणे, एस विही एइ जइ महिड्ढिदसुरो ।
सव्वमिणं एगो वि हु, स कुणइ भयणेयरसुरेसु ॥२२॥
पुव्वमजायं जत्थ उ, जत्थेइ सुरो महिड्ढिमघवाई ।
तत्थोसरणं नियमा, सयंयं पुण पाडिहेराइं ॥२३॥
दुत्थिअसमत्थअत्थिअजणपत्थिअअत्थसत्थसुसमत्थो ।
इत्थं थुओ लहु जणं, तित्थयरो कुणउ सुपयत्थं ॥२४॥

अन्नायउंछकुलकम् ।

अन्नायउंछगहणे, कयचित्तो निक्खमिज्ज वसहीए ।
को नाम नाणपमुहे, रयणे विक्किज्ज पिंडत्थी ? ॥१॥
आहारे खलु सुद्धी, दुलहा समणाण समणधम्मम्मि ।
ववहारे पुण सुद्धी, गिहिधम्मे दुक्करा भणिआ ॥२॥
अणहीआ खलु जेणं, पिंडेसण-सिज्ज-वत्थ-पाएसा ।
तेणाऽऽणिआणि जइणो, कप्पंति न पिंडमाईणि ॥३॥
पिंडं सिज्जं च वत्थं च, चउत्थं पायमेव य ।
अकप्पिअं न इच्छिज्जा, पडिगाहिज्ज कप्पिअं ॥४॥
पिंडं असोहयंतो, अचरित्ती इत्थ संसओ नत्थि ।
चारित्तम्मि असंते, सव्वा दिक्खा निरत्थिआ ॥५॥
सिज्जं असोहयंतो, अचरित्ती इत्थ संसओ नत्थि ।
चारित्तम्मि असंते, सव्वा दिक्खा निरत्थिआ ॥६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वत्थं असोहयंतो, अचरत्ती इत्थ संसओ नत्थि ।
चारित्तम्मि असंते, सव्वा दिक्खा निरत्थिआ ॥७॥
पत्तं असोहयंतो, अचरित्ती इत्थ संसओ नत्थि ।
चारित्तम्मि असंते, सव्वा दिक्खा निरत्थिआ ॥८॥
समणत्तणस्स सारा, भिक्खायरिआ जिणेहिं पन्नत्ता ।
इत्थ परितप्पमाणं, तं जाणसु मंदसंवेगं ॥९॥
नाण-चरणस्स मूलं, भिक्खायरिया जिणेहिं पन्नत्ता ।
इत्थ य उज्जममाणं, तं जाणसु तिव्वसंवेगं ॥१०॥
धम्मरुई अणगारो, सो नंदउ नंदिसेणसमणो वि ।
जे एसणाइ समिआ, पसंसिआ सक्कपमुहेहिं ॥११॥
पिंडेण अकप्पेण वि, पोसिज्जइ अहह ! एरिसो देहो ।
सुद्धेणं चिअ धीरा, पिंडं पिंडेण पोसंति ॥१२॥
जह अब्भंगण-लेवा, सगडक्ख-वणाण जुत्तिओ हुंति ।
इअ संजमभरवहणट्ठयाए साहूण आहारो ॥१३॥
जो जहव तहव लद्धं, गिण्हइ आहार-उवहिमाईअं ।
समणगुणमुक्कजोगी, संसारपवड्ढओ भणिओ ॥१४॥
निरवज्जाहारेणं, साहूणं निच्चमेव उववासो ।
उत्तरगुणवुड्ढिकए, तहा वि उववासमिच्छंति ॥१५॥
गहिअमसुद्धं केण वि, कारणजाएण भोअणावसरे ।
तं चयमाणो सुद्धो, भुंजंतो लिप्पए नियमा ॥१६॥
अविकिअवयणपमाणे, कवले बत्तीस साहु माहारं ।
भणिऊण नमोक्कारं, पयासदेसट्ठिओ जिमइ ॥१७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अद्धमसणस्स सव्वंजणस्स कुज्जा दवस्स दो भाए ।
वाउपविआरणट्ठा, छब्भागं ऊणगं कुज्जा ॥१८॥
सीओ उसिणो साहारणो य कालो तिहा मुणेअव्वो ।
साहारणम्मि काले, तत्थाहारे इमा मत्ता ॥१९॥
सीए दवस्स एगो, भत्ते चत्तारि अह व दो पाणे ।
उसिणे दवस्स दोन्नि उ, तिन्नि व सेसा उ भत्तस्स ॥२०॥
कडपयरच्छेएणं, भोत्तव्वं अहव सीहखइएणं ।
एगेण अणेगेहि व, वज्जित्ता धूमइंगालं ॥२१॥
बायालीसेसणसंकडम्मि गहणम्मि जीव ! नहु छलिओ ।
इण्हिं जह न छलिज्जसि, भुंजंतो राग-दोसेहिं ॥२२॥
जइ इच्छसि भो साहू !, बारसविहतवकलं महाविउलं ।
तो मण-वय-काएहिं, भोअणगिद्धिं विवज्जेसु ॥२३॥
असुरसुरं अचवचवं, अद्दुअमविलंबिअं च आहारं ।
राग-दोसविमुक्को, जिमिज्ज सायं अगिण्हंतो ॥२४॥
नो दाहिणाओ वामं, न वामहणुआओ दाहिणं नेइ ।
पन्नगमिव आहारं, जावणमित्तं जई जिमइ ॥२५॥
सरसरसेहिं न तूसइ, विरसविगंधेहिं जाइ न पओसं ।
सो रसचाई समणो, सुमणो सिद्धिं समल्लिअइ ॥२६॥
तह परिसाडिविमुक्कं, जिमंति जइणो जिइंदिया निच्चं ।
जह जिमिआजिमिआणं, ठाणविसेसो न लक्खिज्जा॥२७॥
तित्तगं च कडुअं च कसायं, अंबिलं च महुरं लवणं वा ।
एअ लद्धमन्नट्ठ पउत्तं, महुघयं व भुंजिज्ज संजए ॥२८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अरसं विरसं वा वि, सूइअं वा असूइअं ।
उल्लं वा जइ वा सुक्कं, मंथुकुम्मासभोअणं ॥२९॥
उप्पन्नं नाइहीलिज्जा, अप्पं वा बहु फासुअं ।
मुहालद्धं मुहाजीवी, भुंजिज्जा दोसवज्जिअं ॥३०॥
दुल्लहा उ मुहादाई, मुहाजीवी वि दुल्लहा ।
मुहादाई मुहाजीवी, दो वि गच्छंति सुग्गइं ॥३१॥
ति बेमि ॥

अल्पबहुत्वगर्भितं श्रीमहावीरस्तवनम् ।

जेण परूवियमेयं, दिसाणुवाएण अप्पबहुठाणं ।
जीवाण बायराण य, थुणामि तं वद्धमाणजिणं ॥१॥
सामन्नेणं जीवा, आऊ वण विगल तिरयपंचिंदी ।
पच्छिम थोवा अहिया, पुव्वदिसिं दाहिणुत्तरयो ॥२॥
मणुया सिद्धा तेऊ, सव्वत्थोवा य दाहिणुत्तरयो ।
पुढिवं संखा पच्छिम, अहिया कहिया तुमे नाह ! ॥३॥
वाऊ थोवा पुढिवं तत्तो अहिया य पच्छिमुत्तरयो ।
दाहिण ११ नारय थोवा, पुव्वुत्तरपच्छिमासु समा ॥४॥
दाहिण असंख १२ पुढवी, दाहिण थोवा कमेण
अहिया उ ।
उत्तरपुव्वावरदिसि, तुज्झ नमो जेण निद्दिट्ठा १३ ॥५॥
भवणवइ पुव्व पच्छिम, थोवा तुल्ला य उत्तर असंखा ।
दाहिण तओ असंखा १४, विंतर थोवा य पुव्वदिसि ॥६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्छिम उत्तर दाहिण, अहिया १५ थोवा य जोइसा तुल्ला।
पुव्वावरदिसि दाहिण, उत्तर अहिया कमा
भणिया १६ ॥७॥

पढमचउकप्पदेवा, सव्वत्थोवा य पुव्वपच्छिमओ।
उत्तर असंख दाहिण अहिया तुहमयविऊ बिंति ॥८॥
बंभाइ कप्पचउगे, पुव्वुत्तरपच्छिमासु थोव समा।
दाहिण संखा तत्तो, उवरिमदेवा य सम सव्वे १७ ॥९॥
थोवा पुग्गल उड्ढं, अहिय अहे तह असंख तुल्ला य।
उत्तरपुरच्छिमेणं, दाहिणपच्चच्छिमेण तओ ॥१०॥
दाहिणपुरच्छिमेणं, उत्तरपच्चच्छिमेण अहिय समा।
पुव्विं व असंख अहिया, पच्छिम तह दाहिणुत्तरयो ॥११॥
अप्प बहुत्तसरूवं, इय दिट्ठं केवलेण नाह ! तुमं।
अह तह कुणसु पसायं, अहमवि पासेमि जह सक्खं॥१२॥
इय चउदिसासु भमिओ, तुह आणावज्जिओ य वीर !
अहं।
गणिसमयसुंदरेहिं, थुणिओ संपइ सिवं देसु ॥१३॥

लघ्वल्पबहुत्वम्।

पं-पु-द-उकमसो जीवा जल-वण-विगला पंणिंदिया चेव।
द-उ-पू-पासुं पुढवी, द-उसम तेऊ पु-पासु कमा ॥१॥

---

१ प०—पश्चिमा दिक्। पु० पू०—पूर्वा दिक्। द०—दक्षिणा दिक्। उ०—उत्तरा दिक्॥ २ संज्ञ्यसंज्ञिपञ्चेन्द्रिया इत्यर्थः॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पू-प-उ-दासुं वाऊ, सत्तण्ह जमुत्तरेण माणसरं।
पच्छिम गोयमदीवो, अहगामा दाहिणे झुसिरं ॥२॥

परमाणुखण्डषट्त्रिंशिका।

खित्तोगाहण दव्वे भाव ट्ठाणा उ अप्पबहुअत्ते।
थोवा असंखगुणिया, तिन्नि अ सेसा कहं नेया? ॥१॥
खित्तामुत्तत्ताओ, तेण समं बंधपच्चयाभावा।
तो पोग्गलाण थोवो, खित्तावट्ठाणकालो उ ॥२॥
अन्नक्खित्तगयस्स वि, तं चिअ माणं चिरं पि संचरइ।
ओगाहणनासे पुण, खित्तन्नत्तं फुडं होइ ॥३॥
ओगाहणावबद्धा, खित्तद्धा अक्किआवबद्धा य।
न उ ओगाहणकालो, खित्तद्धामित्तसंबद्धो ॥४॥
जम्हा तत्थऽन्नत्थ य, स चिअ ओगाहणा भवे खित्ते।
तम्हा खेत्तद्धाओऽवगाहणऽद्धा असंखगुणा ॥५॥
संकोअ-विकोएण व, उवरमिआएऽवगाहणाए वि।
तित्तिअमित्ताणं चिअ, चिरं पि दव्वाणऽवत्थाणं ॥६॥
संघायभेयओ वा, दव्वोवरमे पुणाइ संखित्ते।
निअमा तद्दव्वोगाहणाह नासो न संदेहो ॥७॥
ओगाहद्धा दव्वे, संकोअविकोयओ अ अवबद्धा।
न उ दव्वं संकोअणविकोअमित्तम्मि संबद्धं ॥८॥
जम्हा तत्थऽन्नत्थ व, दव्वं ओगाहणाइ तं चेव।
दव्वद्धाऽसंखगुणा, तम्हा ओगाहणऽद्धाओ ॥९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संघायभेअओ वा, दव्वोवरमे वि पज्जवा संति ।
तं कसिणगुणविरामे, पुणाइ दव्वं न ओगाहो ॥१०॥
संघायभेयबंधाणुवत्तिणी निच्चमेव दव्वद्धा ।
न उ गुणकालो संघायभेयमित्तद्धसंबद्धो ॥११॥
जम्हा तत्थऽन्नत्थ व, दव्वे खित्तावगाहणासुं च ।
ते चेव पज्जवा संति तो तदद्धा असंखगुणा ॥१२॥
आह अणेगंतोऽयं, दव्वोवरमे गुणाणऽवत्थाणं ।
गुणविप्परिणामम्मि अ, दव्वविसेसो अणेगंतो ॥१३॥
विप्परिणयम्मि दव्वे, कम्मि वि गुणपरिणई भवे जुगवं ।
कम्मि वि पुण तदवत्थे वि होइ गुणविप्परीणामो ॥१४॥
भण्णइ सच्चं किं पुण, गुणबाहुल्ला न सव्वगुणनासो ।
दव्वस्स तदन्नत्ते वि बहुतराणं गुणाण ठिई ॥१५॥

पुद्गलषट्त्रिंशिका ।

वुच्छं अप्पाबहुअं, दव्वा खित्तद्धभावओ वा वि ।
अपएस-सप्पएसाण पुग्गलाणं समासेणं ॥१॥
दव्वेणं परमाणू, खित्तेणेगप्पएसमोगाढा ।
कालेणेगसमइआ, अपएसा पुग्गला हुंति ॥२॥
भावेणं अपएसा, एगगुणा जे हवंति वण्णाई ।
ते चिअ थोवा जं गुणबाहुल्लं पायसो दव्वे ॥३॥
इत्तो कालाएसेण अप्पएसा भवे असंखगुणा ।
किं कारणं पुण भवे ? भण्णइ परिणामबाहुल्ला ॥४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भावेण अप्पएसा, जे ते कालेण हुंति दुविहा वि।
दुगुणादओ वि एवं, भावेणं जावऽणंतगुणा ॥५॥
कालापएसयाणं, एवं इक्किक्कओ हवइ रासी।
इक्किक्के गुणठाणम्मि एगगुण कालयाईसु ॥६॥
आहाणंतगुणत्तणमेवं कालापएसयाणं ति।
जमणंतगुणट्ठाणेसु हुंति रासी वि हु अणंता ॥७॥
भण्णइ एगगुणाण वि, अणंतभागम्मि जं अणंतगुणा।
तेणासंखगुण चिय, हवंति नाणंतगुणिकत्तं ॥८॥
एवं तो भावमिणं, पडुच्च कालापएसया सिद्धा।
परमाणुपोग्गलाइसु, दव्वे वि हु एस चेव गमो ॥९॥
एमेव होइ खित्ते, एगपएसावगाहणाईसु।
ठाणंतरसंकंतिं, पडुच्च कालेण मग्गणया ॥१०॥
संकोअविकोअं पि हु, पडुच्च ओगाहणाइ एमेव।
तह सुहुमबायरथिरेयरे य सद्दाइपरिणामं ॥११॥
एवं जो सव्वो वि अ, परिणामो पुग्गलाण इह समए।
तं तं पडुच्च एसिं, कालेणं अप्पएसत्तं ॥१२॥
कालेण अप्पएसा, एवं भावापएसएहिंतो।
हुंति असंखिज्जगुणा, सिद्धा परिणामबाहुल्ला ॥१३॥
इत्तो दव्वाएसेण अप्पएसा हवंतऽसंखगुणा।
के पुण ते? परमाणू, कह ते बहुअ? त्ति तं सुणसु ॥१४॥
अणु-संखिज्जपएसिअ-असंख-ऽणंतप्पएसिआ चेव।
चउरो चिअ रासी पुग्गलाण लोए अणंताणं ॥१५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थाणंतेहिंतो, सुत्तेऽणंतप्पएसिएहिंतो ।
जेण पएसट्ठाए, भणिआ अणवो अणंतगुणा ॥१६॥
संखिज्जयमे भागे, संखिज्जपएसिआण वट्टंति ।
नवरमसंखिज्जपएसिआण भागे असंखयमे ॥१७।
सइ वि असंखिज्जपएसिआण तेसिं असंखभागत्ते ।
बाहुल्लं साहिज्जइ, फुडमवसेसाहि रासीहिं ॥१८॥
जेणिक्करासिणो चिअ, असंखभागे ण सेसरासीणं ।
तेणासंखिज्जगुणा, अणवो कालापएसेहिं ॥१९॥
इत्तो असंखगुणिआ, हवंति खित्ता पएसिआ समए ।
जं ते ता सव्वे चिअ, अपएसा खित्तओ अणवो ॥२०॥
दुपएसिआइएसु वि, पएसपरिवड्ढिएसु ठाणेसु ।
लब्भइ इक्किक्को वि अ, रासी खित्तापएसाणं ॥२१॥
इत्तो खित्ताएसेण चेव सपएसया असंखगुणा ।
एगपएसोगाढे, मोत्तुं सेसावगाहणया ॥२२॥
ते पुण दुपएसोगाहणाइआ सव्वपुग्गला सेसा ।
ते अ असंखिज्जगुणा, अवगाहणठाणबाहुल्ला ॥२३॥
दव्वेण हुंति इत्तो, सपएसा पुग्गला विसेसहिआ ।
कालेण य भावेण य, एमेव भवे विसेसहिआ ॥२४॥
भावाईआ वुड्ढी, असंखगुणिआ जमप्पएसाणं ।
तो सप्पएसयाणं खित्ताइ विसेसपरिवुड्ढी ॥२५॥
मीसाण संकमं पइ, सपएसा खित्तओ असंखगुणा ।
भणिआ सट्ठाणे पुण, थोव चिअ ते गहेअव्वा ॥२६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खित्तेण सप्पएसा, थोवा दव्वद्ध भावओ अहिया।
सपएसप्पाबहुअं, सट्ठाणे अत्थओ एवं ॥२७॥
पढमं अपएसाणं, बीयं पुण होइ सप्पएसाणं।
तइयं पुण मीसाणं, अप्पबहू अत्थओ तिन्नि ॥२८॥
ठाणे ठाणे वड्ढइ, भावाईणं जमप्पएसाणं।
तं चिअ भावाईणं, परिभस्सइ सप्पएसाणं ॥२९॥
अहवा खित्ताईणं, जमप्पएसाण हायए कमसो।
तं चिअ खित्ताईणं, परिवड्ढइ सप्पएसाणं ॥३०॥
अवरुप्परप्पसिद्धा, वुड्ढी हाणी अ होइ दुण्हं पि।
अपएससप्पएसाण पुग्गलाणं सलक्खणओ ॥३१॥
ते चेव य ते चउहि वि, जमुवचरिज्जंति पुग्गला दुविहा।
तेण उ वुड्ढी हाणी, तेसिं अन्नोन्नसंसिद्धा ॥३२॥
एएसिं रासीणं, णिदरिसणमिणं भणामि पचक्खं।
वुड्ढीए सव्वपुग्गल जावं तावाण लक्खो उ ॥३३॥
इक्कं च दो अ पंच य, दस य सहस्साइँ अप्पएसाणं।
भावाईणं कमसो, चउण्ह वि जहोवइट्ठाणं ॥३४॥
नउई पंचाणउई, अट्ठाणउई तहेव नवनउई।
एवइयाइं सहस्साइं सप्पएसाण विवरीअं ॥३५॥
एएसि जहासंभवमत्थोवणयं करिज्ज रासीणं।
सब्भावओ अ जाणिज्ज ते अणंते जिणाभिहिए ॥३६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निगोदषट्त्रिंशिका ।

लोगस्सेगपएसे, जहन्नयपयम्मि जियपएसाणं ।
उक्कोसपए य तहा, सव्वजियाणं च के बहुया ? ॥१॥

थोवा जहन्नयपए, जियप्पएसा जिया असंखगुणा ।
उक्कोसपयपएसा, तओ विसेसाहिआ भणिआ ॥२॥

तत्थ पुण जहन्नपयं, लोयंते जत्थ फासणा तिदिसिं ।
छद्दिसिमुक्कोसपयं समत्थगोलम्मि नऽन्नत्थ ॥३॥

उक्कोसमसंखगुणं, जहन्नयाओ पयं हवइ किं नु ? ।
नणु तिद्दिसिफुसणाओ, छद्दिसिफुसणा भवे दुगुणा ॥४॥

थोवा जहन्नयपए, निगोयमित्तावगाहणा फुसणा ।
फुसणाऽसंखगुणत्ता, उक्कोसपए असंखगुणा ॥५॥

उक्कोसपयमसुत्तुं, निगोयओगाहणाइ सव्वत्तो ।
निप्फाइज्जइ गोलो, पएसपरिवुड्ढिहाणीहिं ॥६॥

तत्तो चिअ गोलाओ, उक्कोसपयं मुइत्तु जो अन्नो ।
होइ निगोओ तम्मि वि, अन्नो निप्फज्जई गोलो ॥७॥

एवं निगोयमित्ते, खित्ते गोलस्स होइ निप्फत्ती ।
एवं निप्फज्जंते, लोगे गोला असंखिज्जा ॥८॥

ववहारनएण इमं, उक्कोसपया वि इत्तिया चेव ।
जं पुण उक्कोसपयं, निच्छइयं होइ तं वुच्छं ॥९॥

बायरनिगोयविग्गहगइयाई जत्थ समहिया अन्ने ।
गोला हुज्ज सुबहुया, निच्छइयपयं तदुक्कोसं ॥१०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इहरा पडुच्च सुहुमे, बहुतुल्ला पायसो सगलगोला।
तो बायराइगहणं, कीरइ उक्कोसयपयम्मि ॥११॥
गोला य असंखिज्जा, हुंति निओया असंखया गोले।
इक्किक्को य निगोओ, अणंतजीवो मुणेयव्वो ॥१२॥
लोगस्स य जीवस्स य, हुंति पएसा असंखया तुल्ला।
अंगुलअसंखभागो, निगोयजियगोलगोगाहो ॥१३॥
जम्मि जिओ तम्मेव निगोओ तो तम्मि चेव गोलो वि।
निप्फज्जइ जं खित्ते, तो ते तुल्लावगाहणया ॥१४॥
उक्कोसपयपएसे, किमेगजावप्पएसरासिस्स।
हुज्जेगनिगोयस्स व, गोलस्स व किं समोगाढं? ॥१५॥
जीवस्स लोगमित्तस्स सुहुमओगाहणावगाढस्स।
इक्किक्कम्मि पएसे, हुंति पएसा असंखिज्जा ॥१६॥
लोगस्स हिए भागे, निगोयओगाहणाइ जं लद्धं।
उक्कोसपएऽतिगयं, इत्तियमिक्किक्कजीवाओ ॥१७॥
एवं दव्वट्ठाए, सव्वेसिं इक्कगोलजीवाणं।
उक्कोसपयमइगया होंति पएसा असंखगुणा ॥१८॥
तं पुण केवइएणं, गुणियमसंखिज्जयं भविज्जा हि?।
भण्णइ दव्वट्ठाए, जावइया सव्वगोल त्ति ॥१९॥
किं कारणमोगाहणतुल्लत्ता जियनिगोयगोलाणं।
गोला उक्कोसपएक्कजियपएसेहि तो तुल्ला ॥२०॥
गोलेहिँ हिए लोगे, आगच्छइ जं तमेगजीवस्स।
उक्कोसपयगयपएसरासितुल्लं हवइ जम्हा ॥२१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहवा लोगपएसे, इक्किक्के ठवय गोलमिक्किक्कं ।
एवं उक्कोसपएक्कजियपएसेसु मायंति ॥२२॥
गोलो जीवो य समा, पएसओ जं च सव्वजीवा वि ।
हुंति समोगाहणया, मज्झिमओगाहणं पप्प ॥२३॥
तेण फुडं चिय सिद्धं, एगपएसम्मि जे जियपएसा ।
ते सव्वजीवतुल्ला, सुणसु पुणो जह विसेसहिया ॥२४॥
जं संति केइ खंडा, गोला लोगंतवत्तिणो अन्ने ।
बायरविग्गहिएहि य, उक्कोसपयं जमब्भहियं ॥२५॥
तम्हा सव्वेहिंतो, जीवेहिंतो फुडं गहेयव्वं ।
उक्कोसपयपएसा. हुंति विसेसाहिया नियमा ॥२६॥
अहवा जेण बहुसमा, सुहुमा लोएऽवगाहणाए य ।
तेणिक्किक्कं जीवं, बुद्धीए विरल्लए लोए ॥२७॥
एवं पि समा जीवा, एगपएसगयजियपएसेहिं ।
बायर बाहुल्ला पुण, हुंति पएसा विसेसहिया ॥२८॥
तेसिं पुण रासीणं, निद्दरिसणमिणं भणामि पच्चक्खं ।
सुहगहणगाहणत्थं, ठवणारासिप्पमाणेहिं ॥२९॥
गोलाण लक्खमिक्कं, गोले गोले निगोयलक्खं तु ।
इक्किक्के य निगोए, जीवाणं लक्खमिक्किक्कं ॥३०॥
कोडिसयमेगजीवप्पएसगाणं तमेव लोगस्स ।
गोलनिगोयजियाणं दस उ सहस्सा समोगाहो ॥३१॥
जीवस्सिक्किक्कस्स य, दस साहस्सावगाहिणो लोए ।
इक्किक्कम्मि पएसे, पएसलक्खं समोगाढं ॥३२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीवसयस्स जहण्णे, पयम्मि कोडी जियप्पएसाणं।
ओगाढा उक्कोसे, पयम्मि वुच्छं पएसग्गं ॥३३॥
कोडिसहस्सजियाणं, कोडाकोडी दसप्पएसाणं।
उक्कोसे ओगाढा, सव्वजिया वित्तिया चेव ॥३४॥
कोडी उक्कोसपयम्मि बायरजियप्पएसपक्खेवो।
सोहणयमित्तियं चिय कायव्वं खंडगोलाणं ॥३५॥
एएसि जहासंभवमत्थोवणयं करिज्ज रासीणं।
सब्भावओ य जाणिज्ज ते अणंता असंखा वा ॥३६॥

बन्धषट्त्रिंशिका।

ओराल सव्वबंधा, थोवा अब्बंधगा विसेसहिया।
तत्तो अ देसबंधा, असंखगुणिआ कहं नेया? ॥१॥
पढमम्मि सव्वबंधो, समए सेसेसु देसबंधो उ।
सिद्धाईण अबंधो, विग्गहगइआण य जियाणं ॥२॥
इह पुण विग्गहिए चिअ, पडुच्च भणिआ अबंधगा अहिआ।
सिद्धा अणंतभागम्मि सव्वबंधाण वि भवंति ॥३॥
उजुआ य एगवंका, दुहओ वंका गई भवे तिविहा।
पढमाइ सव्वबंधा, सव्वे बीआइ अद्धं तु ॥४॥
तइआइ तइअभागो, लब्भइ जीवाण सव्वबंधाणं।
इति तिण्णि सव्वबंधा, रासी तिण्णेव य अबंधा ॥५॥
रासिप्पमाणओ ते, तुल्लाऽबंधा य सव्वबंधा य।
संखापमाणओ पुण, अबंधगा सुण जहऽब्भहिआ ॥६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे एगसमइआ ते, एगनिगोअम्मि छद्दिसिं एंति ।
दुसमइआ तिपयरिआ तिसमइआ सेसलोगाओ ॥७॥
तिरिआययं चउद्दिसि पयरमसंखप्पएस बाहल्लं ।
उड्ढं पुव्वावरदाहिणुत्तरायया य दो पयरा ॥८॥
जे तिपयरिया ते छद्दिसिएहिंतो भवंतऽसंखगुणा ।
सेसा वि असंखगुणा, खित्तासंखिज्जगुणियत्ता ॥९॥
एवं विसेसअहिआ, अबंधया सव्वबंधएहिंतो ।
तिसमइअविग्गहं पुण, पडुच्च सुत्तं इमं होइ ॥१०॥
चउसमयविग्गहे पुण, संखिज्जगुणा अबंधगा हुंति ।
एएसिं निदरिसणं, ठवणारासीहिं वोच्छामि ॥११॥
पढमो होइ सहस्से, दुसमयया दो वि लक्खमेक्केक्कं ।
तिसमइया पुण तिण्णि वि रासी कोडी भवेक्केक्का ॥१२॥
एएसिं जहसंभवमत्थोवणयं करिज्ज रासीणं ।
इत्तो असंखगुणिया, वुच्छं जह देसबंधा सिं ॥१३॥
एगो असंखभागो, वट्टइ उव्वट्टणोववायम्मि ।
एगनिगोए निच्चं, एवं सेसेसु वि स एव ॥१४॥
अंतोमुहुत्तमित्तं, ठिई निगोआण जं विणिद्दिट्ठा ।
पल्लट्टंति निगोआ, तम्हा अंतोमुहुत्तेणं ॥१५॥
तेसिं ठिइसमयाणं, विग्गहसमया हवंति जइभागे ।
एवतिभागे सव्वे, विग्गहिया सेसजीवाणं ॥१६॥
सव्वे वि अ विग्गहिआ, सेसाणं जं असंखभागम्मि
तेणासंखगुणा देसबंधयाऽबंधएहिंतो ॥१७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेउव्वियआहारगतेआकम्माइ पढिअसिद्धाइं ।
तह वि विसेसो जो जत्थ तत्थ तं तं भणीहामि ॥१८॥
वेउव्विसव्वबंधा, थोवा जे पढमसमयदेवाई ।
तस्सेव देसबंधा, असंखगुणिआ कहं ? के वा ? ॥१९॥
तेसिं चिअ जे सेसा, ते सव्वे सव्वबंधए मोत्तुं ।
होंति अबंधाऽणंता, तव्वज्जा सेसजीवा जे ॥२०॥
आहारसव्वबंधा, थोवा दो तिण्णि पंच वा दस वा ।
संखेज्जगुणा देसे ते उ पुहुत्तं सहस्साणं ॥२१॥
तव्वज्जा सव्वजिआ, अबंधया ते हवंतऽणंतगुणा ।
थोवा अबंधगा तेअगस्स संसारमुक्का जे ॥२२॥
सेसा य देसबंधा, तव्वज्जा ते हवंतऽणंतगुणा ।
एवं कम्मगभेया वि णवरि णाणत्तमाउम्मि ॥२३॥
थोवा आउअबंधा, संखिज्जगुणा अबंधया होंति ।
तेआकम्माणं सव्वबंधगा नत्थि णाइत्ता ॥२४॥
आह असंखिज्जगुणाउगस्स किमबंधगा न भण्णंति ।
जम्हा असंखभागो, उव्वट्टइ एगसमएणं ॥२५॥
भण्णइ एगसमइओ, कालो उव्वट्टणाइ जीवाणं ।
बंधणकालो पुण आउगस्स अंतोमुहुत्तो उ ॥२६॥
जीवाण ठिईकालो, आउअबंधद्धभाइए लद्धं ।
एवइए भागे आउबंधया सेसजीवाणं ॥२७॥
जं संखिज्जइभागो, ठिइकालस्साउबंधकालो उ ।
तम्हा संखगुणा से, अबंधया बंधएहिंतो ॥२८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संजोगप्पाबहुअं, आहारगसव्वबंधगा थोवा ।
तस्सेव देसबंधा, संखगुणा ते अ पुव्वुत्ता ॥२९॥
तत्तो वेउव्विअसव्वबंधगा दरिसिआ असंखगुणा ।
जमसंखा देवाई, उववज्जंतेगसमएणं ॥३०॥
तस्सेव देसबंधा, असंखगुणिआ हवंति पुव्वुत्ता ।
तेअगकम्माऽबंधा, अणंतगुणिआ य ते सिद्धा ॥३१॥
तत्तो उ अणंतगुणा, ओरालिअ सव्वबंधगा हुंति ।
तस्सेव तओऽबंधा य देसबंधा य पुव्वुत्ता ॥३२॥
तत्तो तेअगकम्माण देसबंधा भवे विसेसऽहिआ ।
ते चेवोरालिअदेसबंधगा हुंति मेवऽण्णे ॥३३॥
जे तस्स सव्वबंधा, अबंधगा जे अ नेरइअदेवा ।
एएहिं सहिआ ते पुणाइ के ? सव्वसंसारी ॥३४॥
वेउव्वियस्स तत्तो, अबंधगा साहिआ विसेसेणं ।
ते चेव य नेरइयाइविरहिया सिद्धसंजुत्ता ॥३५॥
आहारगस्स तत्तो, अबंधगा साहिया विसेसेणं ।
ते पुण के ? सव्वजिया, आहारगलद्धिए मुत्तुं ॥३६॥

पुद्गलपरावर्त्तस्तोत्रम् ।

श्रीवीतराग ! भगवंस्तव समयालोकनं विनाऽभूवन् ।
द्रव्ये क्षेत्रे काले, भावे मे पुद्गलावर्त्ताः ॥१॥
मोहप्ररोहरोहान्नट इव भवरङ्गसङ्गतः स्वामिन् ! ।
कालमनन्तानन्तं, भ्रान्तः षट्कायकृतकायः ॥२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

औदारिकवैक्रियतैजसभाषानप्राणचित्तकर्मतया।
सर्वाणुपरिणतेर्मे, स्थूलोऽभूत् पुद्गलावर्त्तः ॥३॥
तत्सप्तकैककेन च, समस्तपरमाणुपरिणतेर्यस्य।
संसारे संसरतः, सूक्ष्मो मे जिन ! तदावर्त्तः ॥४॥
निःशेषलोकदेशान्, भवे भवे पूर्वसम्भवैर्मरणैः।
स्पृशतः क्रमोत्क्रमाभ्यां, क्षेत्रे स्थूलस्तदावर्त्तः ॥५॥
प्राग् मृत्युभिः क्रमेण च, लोकाकाशप्रदेशसंस्पर्शः।
मम योऽजनि स स्वामिन्!, क्षेत्रे सूक्ष्मस्तदावर्त्तः ॥६॥
मम कालचक्रसमयान्, संस्पृशतोऽतीतमृत्युना नाथ!।
अक्रमतः क्रमतश्च, स्थूलः काले तदाऽऽवर्त्तः ॥७॥
क्रमतस्तानेव(स्तान् वा) समयान्, प्राग्भूतैर्मृत्युभिः प्रभूतैर्मे।
संस्पृशतः सूक्ष्मोऽर्हन्! स्यात् कालतः(कालात्) पुद्गलावर्त्तः ॥८॥
अनुभागबन्धहेतून्, समस्तलोकप्रदेशपरिसङ्ख्यान्।
म्रियते क्रमोत्क्रमाभ्यां, भावे स्थूलस्तदावर्त्तः ॥९॥
प्राग् मरणैः सर्वेषामपि तेषां यः क्रमेण संश्लेषः।
भावे मे सूक्ष्मोऽभूज्जिनेश ! विश्वत्रयाधीश ! ॥१०॥
नानापुद्गलपुद्गलावलिपरावर्त्तांननन्तानहं,
पूरंपूरमियच्चिरं कियदशं बाढं दृढं नोढवान्।
दृष्ट्वा दृष्टचरं भवन्तमधुना भक्त्याऽर्थयामि प्रभो!,
तस्मान्मोचय रोचय स्वचरणं श्रेयःश्रियं प्रापय ॥११॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम् ।

पणमिअ समत्थपरमत्थवत्थुवित्थारदेसगं वीरं ।
वुच्छामि सावयाणं वयभंगयभेअपरिसंखं ॥१॥
दुविहा अट्ठविहा वा बत्तीसविहा व सत्तपणतीसा ।
सोलस य सहस्स भवे अट्ठसयट्ठुत्तरा वइणो ॥२॥
दुविहा विरयाऽविरया दुविहंतिविहाइणट्ठहा हुंति ।
वयमेगेगं छव्विहगुणिअं दुगमिलिअ बत्तीसं ॥३॥
तिन्नि तिआ तिन्नि दुया तिन्निक्किक्का य हुंति जोगेसु ।
तिदुइक्कं तिदुइक्कं तिदुइक्कं चेव करणाइं ॥४॥
मणवयकाइयजोगे करणे कारावणे अणुमईए ।
इक्कगदुगतिगजोगे सत्ता सत्तेव इगुवन्ना ॥५॥
पढमिक्को तिन्नि तिआ दुन्नि नवा तिन्नि दो नवा चेव ।
कालतिगेण य सहिया सीआलं होइ भंगसयं ॥६॥
पंचाणुव्वयगुणिअं, सीआलसयं तु नवरि जाणाहि ।
सत्तसया पणतीसा, सावयवयगहणकालम्मि ॥७॥
सीआलं भंगसयं, जस्स विसुद्धीइ होइ उवलद्धं ।
सो खलु पच्चक्खाणे, कुसलो सेसा अकुसला य ॥८॥
दुविहतिविहाइ छ च्चिय, तेसिं भेया कमेणिमे हुंति ।
पढमिक्को दुन्नि तिआ, दुगेगदो छक्क इगवीसं ॥९॥
एगवए छ ब्भंगा, निद्दिट्ठा सावयाण जे सुत्ते ।
ति च्चिअ पयवुड्ढीए, सत्तगुणा छज्जुआ कमसो ॥१०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इगवीसं खलु भंगा, निद्दिट्ठा सावयाण जे सुत्ते
ति चिअ बावीसगुणा, इगवीसं पक्खिवेयव्वा ॥११॥
एगवए नव भंगा, निद्दिट्ठा सावयाण जे सुत्ते ।
ति चिअ दसगुण काउं, नव पक्खेवम्मि कायव्वा॥१२॥
इगुवन्नं खलु भंगा, निद्दिट्ठा सावयाण जे सुत्ते ।
ति चिअ पंचासगुणा, इगुवन्नं पक्खिवेयव्वा ॥१३॥
सीयालं भंगसयं, वयवुड्ढडयालसयगुणं काउं ।
सीयालसएण जुयं, सव्वग्गं जाण भंगाणं ॥१४॥
एगाई एगुत्तर, पत्तेयपयम्मि उवरि पक्खेवो ।
इक्किक्कहाणि अवसाणसंखया हुंति संजोगा ॥१५॥
उभयमुहं रासिदुगं, हिट्ठिल्लाणंतरेण भय पढमं ।
लद्धहरासिविभत्ते तस्सुवरि गुणित्तु संजोगा ॥१६॥
अहवा पयाणि ठविउं, अक्खे घित्तूण चारणं कुज्जा ।
इक्कगदुगाइजोगा भंगाणं संख कायव्वा ॥१७॥
बारस छावट्ठी वि अ, वीसहिआ दो य पंच नव चउरो ।
दो नव सत्त य चउ दुन्नि नवय दो नवय सत्तेव ॥१८॥
पण नव चउरो वीसा य दुन्नि छावट्ठि बारसिक्को य ।
सावयभंगाणमिमे सव्वाण वि हुंति गुणकारा ॥१९॥
छ चेव य छत्तीसा, सोलदुगं चेव छनवदुगइक्कं ।
छस्सत्तसत्तसत्तय, छप्पन्न छसट्ठि चउछट्ठे ॥२०॥
छत्तीसा नवनउई, सत्तावीसा य सोल छन्नउई ।
सत्त य सोलस भंगा, अट्ठमठाणे विआणाहि ॥२१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छाणउई बावत्तरि, सत्तदुसुन्निक्क हुंति नवमम्मि ।
छावत्तरि इगसट्ठी, छायाला सुन्न छ चेव ॥२२॥
छप्पन्नसुन्नसत्तय, नवसत्तावीस तह य छत्तीसा ।
छत्तीसा तेवीसा, अडहत्तरि छहत्तरिगवीसा ॥२३॥
दुविहतिविहेण पढमो, दुविहं दुविहेण बीअओ होइ ।
दुविहं एगविहेणं, एगविहं चेव तिविहेणं ॥२४॥
एगविहं दुविहेणं, इक्किक्कविहेण छट्ठओ होइ ।
उत्तरगुण सत्तमओ, अट्ठमओ अविरओ होइ ॥२५॥
पंचण्हमणुवयाणं, इक्कगदुगतिगचउक्कपणगेहिं ।
पंचगदसदसपणइक्कगो अ संजोग नायव्वा ॥२६॥
छ चेव य छत्तीसा, सोलदुगं चेव छनवदुगइक्कं ।
छगसत्तसत्तसत्तय, पंचन्ह वयाण गुणणपयं ॥२७॥
वयइक्कगसंजोगाण हुंति पंचण्ह तीसई भंगा ।
दुगसंजोगाण दसण्ह तिन्नि सट्ठा सया हुंति ॥२८॥
तिगसंजोग दसण्हं, भंगसया इक्कवीसई सट्ठा ।
चउसंजोगप्पणगे, चउसट्ठिसयाणि असियाणि ॥२९॥
सत्तत्तरीसयाइं, छसत्तराइं तु पंचगे हुंति ।
उत्तरगुण-अविरयमेलिआण जाणाहि सव्वग्गं ॥३०॥
सोलस चेव सहस्सा, अट्ठसया चेव हुंति अट्ठहिआ ।
एसो वयपिंडत्थो, दंसणमाई उ पडिमाओ ॥३१॥
पाणिवह मुसावाए अदत्त मेहुण परिग्गहे चेव ।
दिसि भोग दंड समइय देसे तह पोसह विभागे ॥३२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढमवए छब्भंगा, अडयालीसा य बीअवयभंगे।
बायाला तिन्नि सया, तिगवयजोगम्मि नायव्वा ॥३३॥
चउत्थे चउवीससया भंगाणं धीरपुरिसपन्नत्ता।
अट्ठसया य छडुत्तर सहसा सोलस य पंचमए ॥३४॥
छट्ठे वयम्मि सावय, अडयाला छस्सया उ नायव्वा।
तह सत्तरं सहस्सा, भंगाणं लक्खमेगं तु ॥३५॥
सत्तमए बायाला, पंचसया हुंति सहस तेवीसं।
तह अट्ठेव य लक्खा, भंगाणं हुंति नायव्वा ॥३६॥
अट्ठमवयम्मि सावय, अट्ठ सयाइं तु सहस चउसट्ठी।
सासवन्नं लक्खा, भंगाणं हुंति नायव्वा ॥३७॥
नवमे छसय छउत्तर, सहस्स तेवन्न तिन्नि लक्खा उ।
चत्तारि अ कोडीओ, भंगाणं हुंति नायव्वा ॥३८॥
दसमे दोअडयाला, सहस्स पणहत्तरी य बोधव्वा।
चउवीसं पुण लक्खा, अट्ठावीसं तु कोडीओ ॥३९॥
सत्त सया बायाला सहस्स छव्वीस तिहत्तरी लक्खा।
सत्तनवइकोडीओ, कोडिसयं दसमअहिअम्मि ॥४०॥
तेरसकोडिसयाइं चुलसीइजुयाइँ बारस य लक्खा।
सत्तासी य सहस्सा, दो अ सया तह दुरग्गा य ॥४१॥
इअ सावयाण छन्नवइगवीसेगूणवन्नगुणिएण।
बारसवयाण संजोगवित्थरं नाउमुज्जमह ॥४२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाङ्गेयभङ्गप्रकरणम् ।

वंदित्तु वद्धमाणं, गंगेअसुपुट्ठभंगपरिमाणं ।
इगजोगे सगभंगा, दुगजोगे भंग इगवीसा ॥१॥
तिगचउजोगे पत्तेअ भंग पणतीस पंचसंजोए ।
इगवीस य छज्जोए, सगभंगा सत्तए एगो ॥२॥
एकपवेसे सत्त य, दुपवेसे सत्त ते असंजोगे ।
दुगसंजोगो, एगो, भंगगुणा जोग कायव्वा ॥३॥
तिपवेसे इगजोगे, सत्त य भंगा इमेव सव्वत्थ ।
दुगजोगे संजोगा, दो चेव हवंति नायव्वा ॥४॥
तिगसंजोगे एगो, चउण्ह य पवेसि तिण्णि दुअजोगा ।
तियजोगा तिन्नेव य, चउसंजोगो भवे एगो ॥५॥
पंचपवेसि दुजोए, संजोगा इह हवंति चत्तारि ।
तिगजोए छज्जोआ, चउसंजोगा य चत्तारि ॥६॥
इग पंचगसंजोगो, छपवेसे पंच हुंति दुगजोगा ।
तिगजोगा दस चेव य, चउक्कसंजोग दस एव ॥७॥
पणसंजोगा पंच य, छस्संजोगो अ होइ इगु चेव ।
सत्तपवेसि दुजोए, संजोगा इत्थ छ चेव ॥८॥
तिगसंजोगा पणरस, वीसा पुण हुंति चउक्कसंजोगा ।
पणसंजोगा पणरस, छज्जोगा हुंति छ चेव ॥९॥
सगजोगे इग भंगो, अट्ठपवेसे दुजोग सत्तेव ।
तिगजोगे इगवीस य, चउजोगे हुंति पणतीसा ॥१०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पणजोए पणतीसा, इगवीस छजोग सत्त सगजोए।
नवपविसि अड दुजोगा, तिगसंजोगा य अडवीसा॥११॥
छप्पन्ना चउजोगे, सत्तरि हवई अ पंचसंजोए।
छप्पन्ना छज्जोए, अडवीसा सत्तसंजोआ॥ १२॥
दसगपवेसे नव दुगसंजोगा तिन्निजोग छत्तीसा।
चउसंजोगा चुलसी पणजोग सयं च छव्वीसं॥१३॥
छज्जोगे १२६ छव्वीसं, सत्तगजोगे हवंति चुलसीई।
एवं भंगपरूवण, कहिआ तेलोकदंसीहिं॥१४॥
भंगा अहोमुहा खलु, चारेअव्वा य अग्गअग्गओ चेव।
संजोगा उड्ढमुहा दुतिचउपंचाइ पिहु चेव॥१५॥
दुगजोगे एगेगो, तिजोगि हुंति अ इगाइ अट्ठंता।
चउजोगि इग ति छ दस पणरस इगवीस अडवीसा॥१६॥
चउ दस वीस पणतीसा, छप्पन्न पणजुगि छ-सगजोआ।
पण पणरस पणतीसा, सयरि छ इगवीस छप्पन्ना॥१७॥
संजोगगुणिअ भंगा, कायव्वा सव्वमेव परिमाणं।
उत्तरभंगाणं इह पट्ठुद्दिट्ठा य कायव्वा॥१८॥
नट्ठंकाउ य भंगे, सोहिज्जा जत्थ बहुअरा भंगा।
संजोगेहिं हर तहिं, लद्धे मुण मूलभंगे अ॥१९॥
उद्धरिए संजोगे, जाणिज्जा अहव अंतिपडिआ य।
साहारणसंजोगा भंगा जइ इगदुगतिगाई॥२०॥
ते तम्मज्झा कड्ढिअ, उद्धरिए मिलिअभंगभइआ य।
जाणिज्जा संजोगे, सेसे वि अ जाण भंगे अ॥२१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उद्दिट्ठ तीअभंगा, संजोगगुणा य सहिअ संजोगा ।
उद्दिट्ठभंगसंखा, इअ कहिआ धीरपुरिसेहिं ॥२२॥
जइ भंगयसाहारणसंजोगा जे अ तेहिं गुणिऊण ।
सेसे भंगे मेलिअ एगीकाऊण सव्वग्गं ॥२३॥
इय भंगियसुअभणणे, नासंति अ घोररोगउवसग्गा ।
पावंति अ सुहसंपय, सिवं च देवत्तणं एई ॥२४॥
सिरिमेहनामपंडिअसीसेण सिरिविजयनामधेएण ।
रइयं एयं सुत्तं, नियसरण परेसिं हिअमट्ठं ॥२५॥

सिद्धपञ्चाशिका ।

सिद्धं सिद्धत्थसुअं, नमिउं तिहुअणपयासयं वीरं ।
सिरिसिद्धपाहुडाओ, सिद्धसरूवं किमवि वुच्छं ॥१॥
संतपयपरूवणया, दव्वपमाणं च खित्त फुसणा य ।
कालो अ अंतरं तह, भावो अप्पाबहू दारा ॥२॥
एहिं अणंतर सिद्धा, परंपरा सन्निकरिसजुत्तेहिं ।
तेहिं विआरणिज्जा, इमेसु पनरससु दारेसु ॥३॥
खित्ते काले गइ वेअ तित्थ लिंगे चरित्त बुद्धे य ।
नाणोगाहुक्कस्से, अंतरमणुसमयगणणअप्पबहू ॥४॥
खित्ति तिलोगे १ काले,
[illegible]संति अरेसु छसु वि संहरणा ।
[illegible]णि उस्स[illegible]णि दुसिअरगे
जम्मु तिदुक्खु सिवं २ ॥५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउगइआगय नरगइठिय सिव ३ वेयतिग ४ दुविह
तित्थे वि ५।
गिहि-अन्न-सलिंगेसु अ ६ चरणे अहखाइ वट्टंता ॥६॥
ति चउ पण पुव्वि तिचरण,
जिणा ७ सयं-बुद्धि-बुद्ध-पत्तेया ८।
दु-ति-चउनाणा ९ लहु तणु,
दुहत्थ गुरु पणधणुसया उ १० ॥७॥
कालमणंतमसंखं, संखं चुअसम्म अचुअसम्मत्ता ११।
लहु गुरु अंतर समओ,
छमास १२ अडसमय अव्वहिआ १३ ॥८॥
जहनिअर इक्क अडसय १४,
अणेग एगा य थोव संखगुणा १५।
चउ उड्ढ नंदण जले वीसपहुत्तं अहोलोए ॥९॥
इगविजय वीस अडसय, पत्तेयं कम्मभूमि तिरिलोए।
दु दु जलहि पंडगवणे,
अकम्ममहि दस य संहरणा १ ॥१०॥
ति चउत्थ अरे अडसय,
पंचमए वीस दस दस य सेसे २।
नरगतिग भवण-वण-नर-
जोइस-तिरि-तिरिक्खिणी दसगं ॥११॥
वेमाणिअ अट्ठसयं, हरिय छ ऊ पंकपुढविजल चउरो।
जोइविमाणिनरित्थी, वीसं भवणवणथी पणगं ३ ॥१२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीसित्थि दस नपुंसग, पुरिसट्ठसयं नरा नरुव्वट्टा ।
इय भंगे अट्ठसयं, दस दस सेसट्ठभंगेसु ४ ॥१३॥

तित्थयरी जिण पत्तेअबुद्ध संबुद्ध दु चउ दस चउरो ५ ।
चउ दस अडसय गिहि पर
सलिंग ६ परिहार विणु ओहो ॥१४॥

दस परिहारजुए ७ बुद्धिबोहिथी वीस जीव वीसपहू ८ ।
चउ मइसुअ मइसुअमणनाणे
दस सेसदुगि ओहो ९ ॥१५॥

मज्झ गुरु लहुवगाहण
अडसय दुग चउर अट्ठ जवमज्झे १० ।
चुअणंतकालसम्मा,
अडसय चउ अचुअ दस सेसा ११।१२ ॥१६॥

अड १०८ दुरहिअ १०२ सय छनुई,
चुलसी दुगसयरि सट्ठि अडयाला ।
बत्तीस इक्क दु ति चउ,
पण छग सग अड निरंतरिया १२ ॥१७॥

लोअग्ग ठिआ सिद्धा, इह बुंदिं चइय पडिहय अलोए ३ ।
फुसइ अणंते सिद्धे, सव्वपएसेहि सो सिद्धो ४ ॥१८॥

जत्थऽट्ठसयं सिज्झइ, अट्ठ उ समया निरंतरं तत्थ ।
वीस-दसगेसु चउरो,
दु सेसि जवमज्झि चत्तारि ५ ॥१९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जंबुदीवे धायइ, ओह विभागे य तिसु विदेहेसु।
वासपहुत्तं अंतर, पुक्खरदुविदेह वासहियं १ ॥२०॥
भरहेरवए जम्मा, कालो जुगलीण संखसमसहसा।
संहरण नरयतिरिए, समसहसा समसयपहुत्तं ॥२१॥
तिरिई सुरनरनारी सुरीहिँ उवएससिद्धिलद्धीए।
वासहिअंतर अह सयबोहीओ संखसमसहसा ॥२२॥
सयमुवएसा भूजलवणसुहमीसाणपढमदुगनरया ३।
थीकीबेसुं भंगट्ठगे असंखिज्जसमसहसा ॥२३॥
नरवेअ पढमभंगे, वरिसं ४ पत्तेअजिणजिणीसेसा।
संखसमसहस पुव्वासहसपिहूऽणंतहिअवरिसं ५ ॥२४॥
संखसमसहस गिहिअन्नलिंगऽहिअवरिस तिचरण
सलिंगे।
सेसचरित्ते जुअली ६-७,
बुहबोहिअपुरिस वरिसहिअं ॥२५॥
संखसमसहससेसा, पुव्वसहस्सप्पहुत्त संबुद्धे ८।
मइसुअ पलियअसंखो, भागोहिजुएऽहिअं वरिसं ॥२६॥
सेसदुभंगे संखा, समसहसा ९ गुरुलहूइ जवमज्झे।
सेढीअसंखभागो, मज्झवगाहे वरिसमहिअं १० ॥२७॥
अचुअ असंखंसुअही,
अणंतहिअवास सेस संखसमा ११।
संतर १२ अणंतरं १३ इग,
अणेग १४ समसहस संखिज्जा ॥२८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इअ गुरु अंतरमुत्तं,
लहु समओ ६ भावु सव्वहिं खइओ ७।
चउ दस बीसा बीसप्पहुत्त अट्ठस्सयं कमसो ॥२९॥
सम थोव समा संखागुणिआ इय भणिअणंतरा सिद्धा।
अह उ परंपरसिद्धा, अप्पबहुं मुत्तु भणिअत्था ॥३०॥
लामुद्द दीव जल थल, थोवा संखगुण थोव संखगुणा।
उड्ढ अह तिरिअलोए, थोवा दुन्नि पुण संखगुणा ॥३१॥
लवणे कालोअम्मि य, जंबुदीवे अ धायईसंडे।
पुक्खरबरदीवड्ढे, कमसो थोवा उ संखगुणा ॥३२॥
हिमवंते हेमवए, महहिमवे कुरुसु हरि निसढ भरहे।
संखगुणा य विदेहे, जंबुदीवे समा सेसे ॥३३॥
चुल्ल महहिमव निसढे, हेम कुरू हरिसु भारह विदेहे।
चउ छट्ठे साहीया, धायइ सेसा उ संखगुणा ॥३४॥
पुक्खरवरे वि एवं, चउत्थठाणम्मि नवरि संखगुणा।
एसुं संहरणेणं, सिज्झंति समा य समगेसु ॥३५॥
जंबु निसहंत मीसे जं भणिअं पुव्वमहिअ बीअहिमे।
दु ति महहिम हिमवंते,
निसढ महाहिमव बिअहिमवे ॥३६॥
तिअनिसहे बिअकुरुसुं
हरिसु अ तह तइअहेम-कुरु-हरिसु।
दु दु संख एग अहिआ,
कम भरह विदेहतिग संखा १ ॥३७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुसम दुसमाइ थोवा, दूसम संखगुण सुसमदुसमाए।
अस्संखा पण छट्ठे, अहिआ तुरिअम्मि संखगुणा ॥३८॥

अवसप्पिणि अरएसुं, एवं उस्सप्पिणीइ मीसे वि।
परमवसप्पिणि दुस्सम,
अहिआ सेसेसु दुसु वि समा २ ॥३९॥

थी १ नर २ नरय ३ तिरित्थी ४,
तिरि ५ देवी ६ देव ७ थोव १ संखगुणा ६।
इग १ पणिंदि २ थोव १ संखा २,
तरु १ भू २ जल ३ तसिहि ४ संखगुणा ॥४०॥

चउ १ ति २ दुग ३ नरय तरु ४ महि ५,
जल ६ भवण ७-८ वणिंद ९-१० जोइदेविसुरा ११-१२।
नारो १३ नर १४ रयणाए १५,
तिरिई १६ तिरि १७ पुत्तरा १८
य १९ सुरा २०-२९ ॥४१॥

दुपढमदिवदेवि ३०-३१ सुरा ३२-३३,
कीवित्थी नर ४ गिहिअनिअलिंगे ५।
तित्थयरि तित्थि पत्ते,
समणी मुणि कमिणऽसंखगुणा ॥४२॥

तित्थयर तित्थि पत्ते,
समणी मुणिऽणंतसंखऽसंखगुणा ६।
परिहार चउग पणगे, छेय ति चउ सेसचरणम्मि ॥४३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संख असंख दु संखा ७, सं पत्ते बुद्धि बुद्ध संखगुणा ८।
मणजुअ थोवा मइसुअ,
संख चउ असंख तिग संखा ९ ॥४४॥
अडसमयसिद्ध थोवा, संखिज्जगुणा उ सत्तसमयाई १०।
अचुअ चुअतीसु थोवा,
असंख संखा असंखा य ११ ॥४५॥
एगो जा जवमज्झं, संखगुण परा उ संखगुणहीणा।
छम्मासंता १२ लहु गुरु,
मज्झ तणू थोव दु असंखा १३ ॥४६॥
अट्ठसय सिद्ध थोवा, सत्तऽहिअ अणंतगुणिअ जा पन्ना।
जा पणवीसमसंखा, एगंता जाव संखगुणा १४ ॥४७॥
उम्मंथिअ उद्धट्ठिअ, उक्कडि वीरासणे निउंजे य।
पासिल्लग उत्ताणग, सिद्धा उ कमेण संखगुणा १५ ॥४८॥
पणवीस पन्न अडसय,
पण दस वीसा य ति पण दसगं च।
संख असंख अणंत य, गुणहाणि चउट्ठआइंता ॥४९॥
इग दुग इग दुग चउ बहुणंत बहु असंखणंतगुणहीणा।
इय सिद्धाण सरूवं, लिहिअं देविंदसूरीहिं ॥५०॥

सिद्धदण्डिकास्तवः।

जं उसहकेवलाओ, अंतमुहुत्तेण सिवगमो भणिओ।
जा पुरिसजुगअसंखा, तत्थ इमा सिद्धदंडीओ ॥१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तुंजयसिद्धा भरहवंसनिवई सुबुद्धिणा सिट्ठा।
जह सगरसुआणऽट्ठावयम्मि तह किंत्तिअं थुणिमो ॥२॥
आइच्चजसाइ सिवे, चउदसलक्खा य एगु सव्वट्ठे।
एवं जा इक्किक्का, असंख इय दुगतिगाई वि ॥३॥
जा पन्नासमसंखा, तो सव्वट्ठम्मि लक्खचउदसगं।
एगो सिवे तहेव य, अस्संखा जाव पन्नासं ॥४॥
तो दो लक्खा मुक्खे, दुलक्ख सव्वट्ठि मुक्खि लक्खतिगं।
इय इगलक्खुत्तरिआ, जा लक्ख असंख दोसु समा ॥५॥
तो एगु सिवे सव्वट्ठि दुन्नि ति सिवम्मि चउर सव्वट्ठे।
इय एगुत्तरवुड्ढी जाव असंखा पुढो दोसु ॥६॥
इक्को मुक्खे सव्वट्ठि तिन्नि पण मुक्खि इअ दुरुत्तरिआ।
जा दोसु वि अ असंखा, एमेव तिउत्तरा सेढी ॥७॥
विसमुत्तरसेढीए, हिट्ठुवरिं ठविअ अउणतीसतिआ।
पढमे नत्थि क्खेवो, सेसेसु सया इमो खेवो ॥८॥
दुग पण नवगं तेरस, सतरस बावीस छच्च अट्ठेव।
बारस चउदस तह अडवीसा छव्वीस पणवीसा ॥९॥
एगारस तेवीसा, सीयाला सयरि सत्तहत्तरिआ।
इग दुग सत्तासीई, इगहत्तरिमेव बासट्ठी ॥१०॥
अउणत्तरि चउवीसा, छायाला तह सयं च छव्वीसा।
मेलित्तु इगंतरिआ सिद्धीए तह य सव्वट्ठे ॥११॥
अंतिल्लअंकआइं, ठविउं बीआइखेवगा तह य।
एवमसंखा नेआ, जा अजिअपिआ समुप्पन्नो ॥१२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अस्संखकोडिलक्खा, सिद्धा सव्वट्ठगा य तह सिद्धा।
एगभवेणं देविंदवंदिआ दिंतु सिद्धिसुहं ॥१३॥

भावप्रकरणम् ।

आणंदभरिअनयणो, आणंदं पाविऊण गुरुवयणे ।
आणंदविमलसूरिं, नमिउं वुच्छामि भावे अ ॥१॥
धम्माऽधम्माऽऽगासा, कालो पुग्गल य कम्मगइजीवा ।
एएसु अ दारेसु अ, भणामि भावे अ अणुकमसो ॥२॥
मिच्छे सासण मीसे, अविरय देसे पमत्त अपमत्ते ।
निअट्टि अनियट्टि सुहुमुवसम खीण सजोगि
अजोगि गुणा ॥३॥
उवसम खइओ मीसो, उदओ परिणाम सन्निवाओ अ।
सव्वे जीवट्ठाणे, परिणामुदओ अजीवाणं ॥४॥
केवलनाणंदंसण खइअं सम्मं च चरण दाणाई ।
नव खइआ लद्धीओ, उवसमिए सम्म चरणं च ॥५॥
नाणा चउ अण्णाणा, तिण्णि य दंसणतिगं च गिहिधम्मो।
वेअग सवचारित्तं, दाणाइग मिस्सगा भावा ॥६॥
अन्नाणमसिद्धत्ताऽसंजमलेसाकसायगइवेया ।
मिच्छं तुरिए भव्वाभव्वत्तजियत्त परिणामे ॥७॥
आइमचउदारेसु य, भावो परिणामगो य णायव्वो ।
पुग्गलि परिणामुदओ, पंचविहा हुंति मोहम्मि ॥८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दंसणनाणावरणे, विग्घे विणुबसम हुंति चत्तारि।
वेयाऽऽउनामगोए, उवसममीसेण रहिआ उ ॥९॥
चउसु वि गइसुं पण पण, खाइअ परिणाम हुंति सिद्धीए।
अह जीवेसु अ भावे, भणामि गुणठाणरूवेसु ॥१०॥
मीसोदयपरिणामा, एए भावा भवंति पढमतिगे।
अग्गे अट्ठसु पण पण,
उवसम विणु हुंति खीणम्मि ॥११॥
खइयोदयपरिणामा, तिन्नि अ भावा भवंति चरमदुगे।
एसिं उत्तरभेआ, भणामि मिच्छाइगुणठाणे ॥१२॥
मिच्छे तह सासाणे, खओवसमिया भवंति दस भेया।
दाणाइपणग चक्खु य, अचक्खु अन्नाणतिअगं च ॥१३॥
मिस्से मिस्सं सम्मं, तिदंस दाणाइपणग नाणतिगं।
तुरिए बारस नवरं, मिस्सचाएण सम्मत्तं ॥१४॥
सम्मुत्ता ते बारस, विरइक्खेवेण तेर पंचमए।
छट्ठे तह सत्तमए, चउदस मणनाणखेवि कए ॥१५॥
अट्ठम नवमे दसमे, विणु सम्मत्तेण होइ तेरसगं।
उवसंतखीणमोहे, चरित्तरहिआ य बार भवे ॥१६॥
अन्नाणाऽसिद्धत्तं, लेसाऽसंजमकसायगइवेया।
मिच्छत्तं मिच्छत्ते, भेया उदयस्स इगवीसं ॥१७॥
बियए मिच्छ विणा ते, बीसं भेया भवंति उदयस्स।
तइए तुरिए दस-नव, विणु अन्नाणेण णायव्वा ॥१८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देसे सतरस नारगगइ-देवगईणऽभावओ हुंति ।
तिरिगइ-असंजमा उ, उदए छट्ठस्स न भवंति ॥१९॥
आइतिलेसाऽभावे, बारस भेया भवंति सत्तमए ।
तेऊ-पम्हाऽभावे, अट्ठम नवमे य दस भेया ॥२०॥
आइमकसायतियगं, वेयतिग विणा भवंति चत्तारि ।
दसमे उवरिमतियगे, लोभ विणा हुंति तिन्नेव ॥२१॥
चरमगुणेऽसिद्धत्तं, मणुआण गई तहा य उदयम्मि ।
तुरिआओ उवसंतं, उवसमसम्मं भवे पवरं ॥२२॥
नवमे दसमे संते, उवसमचरणं भवे नराणं च ।
खाइगभेए भणिमो, इत्तो गुणठाणजीवेसु ॥२३॥
खाइगसम्मत्तं पुण, तुरियाइगुणट्ठगे सुए भणियं ।
खीणे खाइगसम्मं, खाइगचरणं च जिणकहिअं ॥२४॥
दाणाइलद्धिपणगं, केवलजुअलं समत्त तह चरणं ।
खाइगभेआ एए, सजोगि चरमे य गुणठाणे ॥२५॥
जीवत्तमभव्वत्तं, भव्वत्तं आइमे अ गुणठाणे ।
सासण जा खीणंतं, अभव्ववज्जा य दो भेया ॥२६॥
चरमे दुअगुणठाणे, भव्वत्तं वज्जिऊण जीवत्तं ।
एए पंच वि भावा, परूविआ सव्वगुणठाणे ॥२७॥
चउतीसा बत्तीसा, तित्तीसा तह य होइ पणतीसा ।
चउतीसा तित्तीसा, तीसा सगवीस अडवीसा ॥२८॥
बावीस वीस एगूणवीस तेरस य बारस कमेण ।
एए अ सन्निवाइअ भेया सव्वे य गुणठाणे ॥२९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिरिगुरुआणंदविमलसूरिसुसिस्सेण विजयविमलेणं।
लिहियं पगरणमेयं, रम्माओ पुव्वगंथाओ ॥३०॥

योनिस्तवः।

देविंदनयं विज्ञाणंदमयं धम्मकित्तिकुलभवणं।
अणुभूयजोणिजाई, वीरजिणं विन्नवेमि अहं ॥१॥

सुरनरएसु अचित्ता, सचित्तऽचित्ता उ सन्नितिरिमणुए।
विगलअसन्निइगिंदिसु, सचित्ताऽचित्तमीस तिहा ॥२॥

सीआ उसिणा मीसा,
तिह भूजलऽनिलअसन्निविगलवणे।
सीओसिण सुरगब्भे, सीआ उसिणा दुहा नरए ॥३॥

उसिणा य तेउकाए, संवुडजोणी इगिंदिसुरनिरए।
विगलासन्निसु वियडा, संवुडवियडा य गब्भम्मि ॥४॥

कुम्मुन्नयाइ उत्तमनर वंसीपत्तजोणि सेसनरा।
नियमा गब्भविणासी, संखावत्ता उ थीरयणे ॥५॥

मुच्छंडजराउब्भिअसंसेउववाय पोअरसयतसा।
मूलग्ग पोरखंधा बीयरुहा मुच्छ वणजोणी ॥६॥

चउदस मणुअनिगोए भूजलपवणग्गि जोणि सगलक्खा।
चउ तिरिअनारयसुरे, दु दु विगले दस परित्तवणे ॥७॥

चुलसीइ लक्खजोणिसु, इअ समवन्नाइ जोणि बहुलक्खे।
इक्किक्काओ भमिओ, कुलकोडीलक्ख पूरंतो ॥८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुलकोडिलक्ख तिन्नि उ, जलणम्मि वणम्मि अट्ठवीसा उ।
सत्त जले सग पवणे, अद्धत्तेरस जलयरेसु ॥९॥
बारस भूनरपक्खिसु, बितिचउरिंदीसु सत्त अट्ठ नव।
नव भुअपरिसप्पेसुं, दस सप्प चउप्पएसु पुढो ॥१०॥
नरएसु पन्नवीसा, छव्वीस सुरेसु सव्वओ भमिओ।
इगकोडिकोडिसड्ढा सगनउईलक्ख कुलकोडी ॥११॥
मायपिअभाइभयणीभज्जासुअसुण्हधूअमाइन्ने।
भमिओ मि धम्मघोसं, अलहंतो जोणिगहणम्मि ॥१२॥
ता तह पसीअ सामिअ !, संपइ निअदंसणप्पयाणेण।
जह लहु होमि सया हं, अजोणिकुलसंभवो भगवं ! ॥१३॥

विचारसप्ततिका।

पडिमा मिच्छा कोडी, चेइअ पासाय रविकरप्पसरो।
पज्जत्ति किन्ह वलया, नंदी गिहिकिरिअ गुणठाणा ॥१॥
उसभाईजिणपडिमं, इक्कं पि न्हवंतपूअयंतेहिं।
चिंतेअव्वं एयं, भव्वेहिं विवेगमंतेहिं ॥२॥
भवणवईभवणेसुं, कप्पाइविमाण तह महीयलए।
सासयपडिमा पनरस, कोडिसय तिचत्तकोडीओ ॥३॥
पणवन्नलक्ख पणवीस, सहस पंच य सयाइं चासीआ।
तह वणजोइसुलोए, सासयपडिमा पुआ अहं ॥४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तह चेव जंबुदीवे, धायइसंडे य पुक्खरद्धे अ।
भरहेरवयविदेहे, गामागरनगरमाईसु ॥५॥
सुरमणुएहिँ कयाओ, चेइअगिहचेइएसु जा पडिमा।
उक्कोस पंच धणुसय, जाव य अंगुट्ठपव्वसमा ॥६॥
बहुकोडिकोडिलक्खा, ताओ चिय भावओ अहं सव्वा।
समगं चिय पणमामि, न्हवेमि पूएमि झाएमि ॥७॥
चउदस पय अडचत्ता, तिमहिअतिसई सयं च अडनउअं।
चउगइ दसगुण मिच्छा, पण सहसा छ सय तीसा य ॥८॥
नेरइआ सत्तविहा, पज्जअपज्जत्तणेण चउदसहा।
अडचत्ताई संखा, तिरिनरदेवाण पुण एवं ॥९॥
भूदग्गिवाउणंता, वीसं सेसतरु विगल अट्ठेव।
गब्भेयर पज्जेयर, जलथलनहउरभुआ वीसं ॥१०॥
पनरस तीस छपन्ना, कम्माकम्मा तहंतरद्दीवा।
गब्भा पज्ज अपज्जा, मुच्छ अपज्जा तिसय तिन्नि ॥११॥
भवणा परमा जंभय, वणयर दस पनर दस य सोलसगं।
गइ ठिइ जोइस दसगं, किब्बिस तिग नव य लोगंता ॥१२॥
कप्पा गेविजणुत्तर, बारस नव पण पजत्तमपजत्ता।
अडनउअसयं अभिहयवत्तियमाईहिँ दसगुणिआ ॥१३॥
अभिहयपयाइ दहगुण, पण सहसा छ सय तीसई भेआ।
ते रागदोसदुगुणा, इक्कारस सहस दोसया सट्ठी ॥१४॥
मणवयकाए गुणिआ, तित्तीस सहस्स सत्तसयसीया।
करकारणानुमइए, लक्ख सहसो तिसयचाला ॥१५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कालतिगेणं गुणिआ,
तिलक्ख चउ सहस वीसमहिआ य ।
अरिहंतसिद्धसाहूदेवयगुरुअप्पसक्खोहिं ॥१६॥

अट्ठारस लक्खाइं, चउवीस सहस्स एगवीसहिआ ।
इरिआमिच्छादुक्कडपमाणमेअं सुए भणिअं ॥१७॥

जोयणपिहुलायामा दसन्नपव्वयसमीव कोडिसिला ।
जिणछक्कतित्थसिद्धा, तत्थ अणेगा उ मुणिकोडी ॥१८॥

पढमं संतिगणहरो, चक्काउह णेगसाहुपरियरिओ ।
बत्तीसजुगेहिं तओ, सिद्धा संखिज्ज मुणिकोडी ॥१९॥

संखिज्जा मुणिकोडी, अडवीसजुगेहिँ कुंथुनाहस्स ।
अरजिण चउवीसजुगा, बारस कोडीओ सिद्धाओ॥२०॥

मल्लिस्स वि वीसजुगा, छकोडि मुणिसुव्वयस्स कोडितिगं ।
नमितित्थे इगकोडी, सिद्धा तेणेव कोडिसिला ॥२१॥

छत्ते सिरम्मि गीवा, वच्छे उयरे कडीइ ऊरूसु ।
जाणू कहमवि जाणू , नीया सा वासुदेवेहिं ॥२२॥

इक्कारअहिअपणसय, सासयचेइअ नमामि महिवलए ।
तीसं वासहरेसु, वेयड्ढेसुं च सयरिसयं ॥२३॥

वीसं गयदंतेसुं, कुरुदुमदसगे तहेव नउई अ ।
वक्खारगिरिसु असिई, पणसीई मेरुपणगम्मि ॥२४॥

इसुमणुकुंडलरुअगे, चउ चउ वीसं च नंदिसरि दीवे ।
अड-वीस नंदि-कुंडलिरुअगे सयपन्न बासयरी ॥२५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठाराहिय दुसई, पन-ऽद्ध छत्तीस दीहपिहुउच्चा।
माणस-इसु-गयदंतय-वक्खार-वासहरमेरूसुं ॥२६॥
पणसट्ठिअहिअ-सयदुग, संपुण्णं कोसमद्ध देसूणं।
दीहे पिहु उच्चत्ते, कुरुदुमवेअड्ढचूलासु ॥२७॥
पासाया ईसाणे, सुहमा सिद्धोववाय हरए अ।
अभिसेअ अलंकारा, ववसाए नंदि बलिपीढं ॥२८॥
मुहमंड पिच्छमंडव, थूभं चेइअ झओ अ पुक्खरिणी।
जम्मुत्तरपुव्वासुं, जिणभवणसभासु पत्तेअं ॥२९॥
ओआरियलयणम्मि अ, पहुणो पणसीइ हुंति पासाया।
तिसय इगचत्त कत्थय, कत्थवि पणसट्ठि तेरसया ॥३०॥
मुहपासाओ चउदिसि, चउहिं ते सोलसेहिं सोला वि।
चउसट्ठीए सा वि य, छप्पन्नेहिं दुहि सएहिं ॥३१॥
ते वि अ पुण सहसेणं, चउवीसहिएण हुंति परिअरिया।
मूलुचत्तपुहुत्ता, अद्धद्धे पण वि पंतीओ ॥३२॥
तेरससय पणसट्ठा, इअ पणपंताहिँ हुंति पासाया।
पणसी पंतितिगेणं, तिसई इगचत्त चउहिं तु ॥३३॥
पणसीइ एगवीसा, पणसी पुण एगचत्त तिसईए।
तेरससय पणसट्ठा, तिसई इगचत्त पइककुहं ॥३४॥
पिट्ठे पुव्वा पुरओ, अवरा वलए भमंत सूरस्स।
दाहिणकरम्मि मेरु, वामकरे होइ लवणोही ॥३५॥
सगचत्तसहस दुसई, तेवट्ठा तहिगवीससदृंसा।
पुव्वावर करपसरो, कक्के सूरा अहुत्तरओ ॥३६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असिईसऊणसहसा, पणयालीसाऽह जम्मओ दीवे ।
असिइसयं लवणे वि अ, तित्तीससहस्स सतिभागा ॥३७॥
इगतीससहस अडसय, इगतीसा तह य तीससट्ठंसा ।
मयरे रविरस्सीओ, पुव्ववरेणं अह उदीणे ॥३८॥
लवणे तिसई तीसा, दीवे पणचत्तसहस अह जम्मे ।
लवणम्मि जोअणतिगं, सतिभागसहस्स तित्तीसा ॥३९॥
मयरम्मि वि कक्कम्मि वि, हिट्ठा अट्ठारजोअणसयाइं ।
जोयणसयं च उड्ढं, रविकर एवं छसु दिसासु ॥४०॥
पइदिणमवि जम्मुत्तर, अडसत्तरिसहस सहसतइअंसो ।
उड्ढह गुणवीससया, अठिया पुव्वावरा रस्सी ॥४१॥
आहारसरीरिंदियऊसासवओमणो छ पज्जत्ती ।
चउ पंच पंच छ प्पि अ, इगविगलाऽमणसमणतिरिए ॥४२॥
गब्भयमणुआणं पुण, छ प्पि अ पज्जत्ति पंच देवेसु ।
जं तेसि वयमणाणं, दुवे वि पज्जत्ति समकालं ॥४३॥
उरलविउव्वाहारे, छन्ह वि पज्जत्ति जुगवमारंभो ।
तिन्ह वि पढमिगसमए, बीआ पुण अंतमोहुत्ती ॥४४॥
पिहु पिहु असंखसमइअअंतमुहुत्ता उराल चउरो वि ।
पिहु पिहु समया चउरो वि हुंति वेउव्विआहारे ॥४५॥
छन्ह वि सममारंभे, पढमा समए बिअंतमोहुत्ती ।
ति तुरिअ समए समए, सुरेसु पण छट्ठ इगसमए ॥४६॥
बंभे रिट्ठे तइअम्मि पत्थडे अट्ठ कण्हराईओ ।
इंदयचउसु दिसासुं, अक्खाडगसंठिआ दिग्घे ॥४७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोअण असंख पोहत्ति संख ईसाणि अचि अचिमाली।
वइरोअणं पहंकर, चंदाभं सूरिअ सुकाभं ॥४८॥
सुपइट्ठाभं रिट्ठं, मज्झे वट्टं बहिं विचित्तट्ठं।
तेसिं पहू सारस्सयपमुहा तदुदुगपरिवारा ॥४९॥
सत्तसय सत्त चउदस, सहसा चउदहिअ सगसहससत्त।
नव नवसय नव नवहिअ, अव्वाबाहागिचरिट्ठेसु ॥५०॥
सारस्सयमाइच्चा, वण्ही वरुणा य गद्दतोया य।
तुसिआ अव्वाबाहा, अग्गिचा चेव रिट्ठा य ॥५१॥
पुव्वंतर जम्मबहिं, पुट्ठा जम्मंतरा बहिं वरुणं।
तम्मज्झुत्तर बाहिं, उईणमज्झा बहिं पुव्वं ॥५२॥
पुव्वावरा छलंसा, तंसा पुण दाहिणुत्तरा बज्झा।
अब्भंतर चउरंसा, सव्वा वि अ कण्हराईओ ॥५३॥
पुक्खरिगारस तेरेव, कुंडले रुअगि तेर ठारे वा।
मंडलिआचल तिन्नि उ, मणुउत्तर कुंडलो रुअगो ॥५४॥
सत्तरस य इगवीसा, बायालसहस्स चुलसि सहसुचा।
चउसय तीसा कोसं, सहसं सहसं च ओगाढा ॥५५॥
भुवि दससय बावीसा, मज्झे सत्त य सया उ तेवीसा।
सिहरे चत्तारि सया, चउवीसा मणुअकुंडलगा ॥५६॥
दससहसा बावीसा, भुवि मज्झे सगसहस्स तेवीसा।
सिहरे चउरो सहसा, चउवीसा रुअगसेलम्मि ॥५७॥
रुअगे सिहरे चउदिसि, बिअसहसेगिग चउत्थ अट्ठट्ठ।
विदिसि चऊ इअ चत्ता, दिसिकुमरी कूड सहसंका ॥५८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढमो सीहनिसाई, अद्धजवनिभो अ चउदिसिं सिहरे।
पन्नाई चउ जिणगिहो, सयाइ चउ चेइआ तुन्नि ॥५९॥
तेवट्ठं कोडिसयं, लक्खा चुलसीइ बलयविक्खंभो।
नंदिसरट्ठमदीवो, चउदिसि चउ अंजणा मज्झे ॥६०॥
गोपुच्छा अंजणमय, चुलसीसहसुच्च सहसमोगाढा।
समभुवि दससहसपिहू सहसुवरिं तेसिं चउदिसिसु॥६१॥
लक्खंतरिआ चउ चउ, वावी दस दस य जोअणुव्विद्धा।
लक्खं दीह-पिहुत्ते, तम्मज्झे दहिमुहा सोल ॥६२॥
सहसोगाढा चउसठिसहसुच्चा दससहस्स पिहुला य।
सव्वत्थ समा पल्लयसरिसा रुप्पामया सव्वे ॥६३॥
अंजण-दहिमुहचेइअ, वीसं चउदार दीह-पिहु-उच्चा।
सय-पन्ना-बावत्तरिजोअण ठाणंगि जिअभिगमे ॥६४॥
नंदी विदिसिं चउरो, दसिगसहस्सा पिहुच्च पाओऽहे।
झल्लरिसरिस अचेइअ, रइकर ठाणंगि सुत्तम्मि ॥६५॥
नंदीसर व्व उड्ढं, पन्नासाई य असुरजिणभवणा।
तयअद्धं नागाइसु, वंतरनगरेसु तयअद्धं ॥६६॥
मन्नह जिणाण आणं, मिच्छं परिहरह धरह सम्मत्तं।
छव्विहआवसयम्मि अ, उज्जुत्ता होह पइदिअहं ॥६७॥
पव्वेसु पोसहवयं, दाणं सीलं तवो अ भावो अ।
सज्झाय नमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा य ॥६८॥
जिणपूआ जिणथुणणं, गुरुथुइ साहम्मिआण वच्छल्लं।
ववहारस्स य सुद्धी, रहजत्ता तित्थजत्ता य ॥६९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संघोवरि बहुमाणो, धम्मिअमित्ती पभावणा तित्थे।
नवखित्ते धणवयणं, पुत्थयलिहणं विसेसेण ॥७०॥
परिगहमाणाऽभिग्गह, इक्कारस सड्ढपडिमफासणया।
सव्वविरईमणोरह, एमाई सड्ढकिच्चाइं ॥७१॥
अह चउदससु गुणेसुं, कालपमाणं भणामि दुविहं पि १।
न मरइ मरइ व जेसुं २,
सह परभवु जेहिँ नो जेहिं ३ ॥७२॥
मिच्छं अणाइऽनिहणं, अभव्वे भव्वे वि सिवगमाजुग्गे।
सिवगइ अणाइसंतं, साईसंतं पि तं एवं ॥७३॥
लहु अंतमुहू गुरुअं, देसूणमवड्ढपुग्गलपरट्टं।
सासाणं लहु समओ, आवलिछक्कं च उक्कोसं ॥७४॥
अजहन्नमणुक्कोसं, अंतमुहू मीसगं अह चउत्थं।
समहिअतित्तीसयरे, उक्कोसं अंतमुहु लहुअं ॥७५॥
देसूणपुव्वकोडी, गुरुअं लहुअं च अंतमुहु देसं।
छट्ठाइगारसंता, लहु समया अंतमुहु गुरुआ ॥७६॥
अंतमुहुत्तं एगं, अलहुक्कोसं अजोगिखीणेसु।
देसूणपुव्वकोडी, गुरुअं लहु अंतमुहु जोगी ॥७७॥
मीसे खीणसजोगी, न मरंत मरंतिगारसगुणेसु।
तह मिच्छ-साण-अविरइ, सह परभवगा न सेसट्ठा ॥७८॥
उवसंतिजिणा थोवा, संखिज्जगुणा उ खीणमोहिजिणा।
सुहुमनिअट्टिअनियट्टि, तिन्नि वि तुल्ला विसेसहिआ ॥७९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोगि अपमत्त इयरे, संखगुणा देस सासणा मिस्सा ।
अविरय अजोगि मिच्छा, चउर असंखा दुवे णंता ॥८०॥
चउदसगुणसोवाणे, इअ दुहरोहे कमेण रुहिऊणं ।
नरसुरमहिंदवंछिअसिवपासाए सया वसह ॥८१॥

विचारपञ्चाशिका ।

वीरपयकयं नमिउं, देवासुरनरबिरेफसेविअयं ।
जिणसमयसमुद्दाओ, वियारपंचासियं वुच्छं ॥१॥
ओरालिय वेउव्विय, आहारग तेय कम्मुणं भणियं ।
एयाण सरीराणं, नवहा भेयं भणिस्सामि ॥२॥
बायरपुग्गलबद्धं, उरालिय उयारमागमे भणियं ।
सुहुमसुहुमेण तत्तो, पुग्गलबंधेण भणियाणि १ ॥३॥
ओरालिए अणंता, तत्तो दोसुं असंखगुणिया उ ।
तत्तो दोसु अणंता पएससंखा सुए भणिया २ ॥४॥
तिरिअनराणमुरालं, वेउव्वं देवनारगाणं च ।
तिरियनराणं पि तहा, तल्लद्धिजुयाण तं भणियं ॥५॥
चउदसपुव्विजईणं, होई आहारगं न अन्नेसिं ।
तेअं कम्मण भणिअं, संसारत्थाण जीवाणं ३ ॥६॥
ओरालियस्स विसओ, तिरियं विज्जाहराणमासज्ज ।
आ नंदीसर गुरुओ, जंघाचरणाण आ रुयगो ॥७॥
उड्ढं उभयाणं पि य, आ पंडगवण सुए सया भणिओ
वेउव्वियस्स विसओ, असंख दीवा जलहिणो य ॥८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आहारस्स विदेहा, तेयाकम्माण सव्वलोगो य ४।
ओरालियस्स कज्जं, केवलधम्माइयं भणियं ॥९॥
थूलसुहुमं च रूवं, एगअणेगाइ कज्जयं कहियं।
वेउव्वियस्स आहारगस्स संदेहविच्छेयं ॥१०॥
तेजससरीरकज्जं, आहारपयं सुए समक्खायं।
सावाणुग्गहणं पुण, कम्मणस्स भवंतरे गइयं ५ ॥११॥
ओरालियं सरीरं, जोयणदससयपमाणओ अहियं।
वेउव्वियं च गुरुअं, जोयणलक्खं समहियं वा ॥१२॥
आहारगं सरीरं, हत्थपमाणं सुए समक्खायं।
तेयसकम्मणमाणं, लोयपमाणं सया भणियं ६ ॥१३॥
अस्संखपएसठियं, ओरालियय जिणेण वज्जरियं।
इत्तो य बहुयरेसुं, चवियं वेउव्वियसरीरं ॥१४॥
एहिंतो अप्पम्मी, पएसवग्गे तईय वज्जरियं।
सव्वे लोगागासे, तेयसकम्माणुगाहणयं ७ ॥१५॥
अंतोमुहुत्त लहुयं, ओरालियआउमाण संगहियं।
गुरुयं तिपल्लमुत्तं, वेउव्वे अह भणिस्सामि ॥१६॥
दसवरिससहस्साइं, उक्कोसं सागराणि तित्तीसं।
उत्तरवेउव्वम्मी, लहुय मुहुत्तं गुरुयमेवं ॥१७॥
अंतोमुहुत्त नरएसु होइ चत्तारि तिरियमणुएसु।
देवेसु अद्धमासो, उक्कोसविउव्वणे कालो ॥१८॥
अहारगस्स कालो, अंतमुहुत्तं जहन्नमुक्किट्ठो।
तेयसकम्मणरूवे, सव्वेसिमणाइए भणिए ॥१९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भव्वे सपज्जवसिए. अपज्जवसिए अभव्वजीवेसु ।
अप्पबहुत्तं भणिमो, एगं दो वा जहन्नेणं ॥२०॥
उक्कोस नव सहस्सा, आहारसरीरगा हवंति सुए ।
अंतरमस्स जहन्नं, समयं छम्मास गुरु भणियं ॥२१॥
इत्तो असंख्व वेउव्वियाणि हुंति य सरीरगाणि जए ।
तत्तो असंखगुणिया, ओरालियदेहसंघाया ॥२२॥
तत्तो तेयसकम्मण, हुंति सरीराणि णंतगुणियाणि ।
वित्थरभेयवियारो, णेयव्वो सुयसमुद्दाओ ९ ॥२३॥
नरसंखाउयगमणं, रयणाए भवण जाव ईसाणे ।
ताण तणु जहन्नेणं, परिमाणं अंगुलपहुत्तं ॥२४॥
ताण ठिइ जहन्नेणं, मासपहुत्तं ति होइ नायव्वा ।
उक्कोस पुव्वकोडी, जेट्ठतणू पंचधणुहसयं ॥२५॥
सक्कर-सणाइएसुं, मणुयाणं तणु जहन्नओ होइ ।
रयणिपहुत्तं णेयं, उक्कोसं पुव्वभणियं तु ॥२६॥
ताण ठिइ जहन्नेणं, वासपहुत्तं तु होइ णायव्वा ।
उक्कोसा पुव्वं पिव, आगममाणस्स एमेव ॥२७॥
धम्माऽधम्माऽऽगासा, जीवा कालो य खायगं चेव ।
सासायण उवसमियं, अपुग्गलाइं तु एयाइं ॥२८॥
ओरालिय वेउव्विय, आहारग तेयसं भुणी य मणो ।
उस्सासं निस्सासं, कम्मण-कम्माणि छाय तमो ॥२९॥
वग्गणअणंत आयव, मिस्सक्खंधो अचित्तमहक्खंधो ।
वेयग खाओवसमं, उज्जोय पुग्गल सुए भणियं ॥३०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नेरइयदेवअगणीघाउ य वज्जिय असंखजीवी उ ।
सेसा सव्वे वि जिया, मुच्छिममणुएसु गच्छंति ॥३१॥
नेरइयदेवजुयला, वज्जिय सेसेसु जीवठाणेसु ।
मुच्छिमनराण गमणं, सव्वे वि अ पढमगुणठाणी ।.३२॥
आहारसरीरिंदिय, ऊसासे वय मणे छ पज्जत्ती।
चउ पंच पंच छ प्पि य, इगविगलामणसमणतिरिए ॥३३॥
गब्भयनरनरएसुं, छ प्पि य पज्जत्ति पंच देवाणं ।
जं तेसि वयमणाणं, दोण्ह वि पज्जत्ति समकालं ॥३४॥
उरलविउव्वाहारे, छण्ह वि पज्जत्ति जुगवमारंभो ।
तिण्हं पढमिगसमए, बीआ अंतोमुहुत्तिआ हवइ ॥३५॥
पिहु पिहु असंखसमइअ अंतमुहुत्ता उरालि चउरो वि ।
पिहु पिहु समया चउरो वि हुंति बेउव्वियाऽऽहारे ॥३६॥
छण्ह वि सममारंभो, पढमा समएण अंतमुहु बीया ।
तितुरिय समए समए, सुरेसु पण छट्ठ इगसमए ॥३७॥
सो लद्धिएँ पज्जत्तो, जो य मरइ पूरिउं सपज्जत्ति ।
लद्धिअपज्जत्तो पुण, जो मरई ता अपूरित्ता ॥३८॥
नऽज्ज वि पूरेइ परं, पुरिस्सइ स इह करणअपजत्तो ।
सो पुण करणपजत्तो, जेणं ता पूरिया हुंति ॥३९॥
नर नेरइया देवा, सिद्धा तिरिया कमेण इह होंति ।
थोव असंख असंखा, अणंतगुणिया अणंतगुणा ॥४०॥
नारीनरनेरइया, तिरित्थिसुरदेविसिद्धतिरिया य ।
थोव असंखगुणा चउ, संखगुणाऽणंतगुण दुन्नि ॥४१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण चउ ति दुय अणिंदिअ, एगिंदिय सेंदिया कमा हुंति।
थोवा तिअ त्ति अहिया, दोऽणंतगुणा विसेसहिआ ॥४२॥
तस तेउ पुढवि जल वाउकाय अकाय वणस्सइ सकाया।
थोव असंखगुणाऽहिय, तिन्नि उ दोऽणंतगुण अहिआ ॥४३॥
जीवा पुग्गल समया, दव्व पएसा य पज्जवा चेव।
थोवाऽणंताऽणंता, विसेसमहिया दुवेऽणंता ॥४४॥
दव्वे खित्ते काले, भावे अपएस पुग्गला चउहा।
सपएसा वि य चउहा, अप्पबहुत्तं च एएसिं ॥४५॥
दव्वेणं परमाणू, खित्तेणेगप्पएसमोगाढा।
कालेणेगसमइया, भावेणेगगुणवण्णाई ॥४६॥
अपएसगा उ एए, विवरिय सपएसगा सया भणिया।
भा-का-द-खि-अपएसा, थोवा तिन्नि य असंखगुणा ॥४७॥
खित्ते अपएसगा उ, खित्ते सपएस असंखगुणिया उ।
दव्व-क-भा-सपएसा, विसेससहिया सुए भणिया ॥४८॥
कड तेउए य दावर, कलिउय तह संहवंति जुम्मा उ।
अवहीरमाण चउ चउ, चउ ति दुगेगा उ चिट्ठंति ॥४९॥
धं-ज-व-स-परिव-वि-ति-च-समुन-
पणथ-ख-ज-न-भ-व-र-वि-न-सु-स-पमुति अ।

---

१ ध०-धरा, ज०-जल, व०-वह्नि, स०-समीरण=वायु, परिव०-प्रत्येकवनस्पति, बि०-द्वीन्द्रिय, ति०-त्रीन्द्रिय, च०-चतुरिन्द्रिय, समुन०-सम्मूर्छिमनर, पणथ०-पञ्चेन्द्रियस्थलचर, ख०-खचर, ज०-जलचर, न०-नारक, भ०-भवनपति, व०-व्यन्तर, र०-रवि, वि०-विधु=चन्द्र, न०-नक्षत्र, सु०-सुरवैमानिक स०-समुद्र, पमुति०-पञ्चेन्द्रियसम्मूर्छिमतिर्यञ्च,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जगनभप-ध-अ-इगजिप-ट्ठिअ-नि-
सि-नि-वजि-स-पु-अ-भ-अ-पर-वणका ॥५०॥
इय सुत्ताओ भणिया, वियारपंचासिया य सपरकए ।
मुणिसिरिआणंदविमलसूरिवराणं विणेएण ॥५१॥

कालसप्ततिका ।

देविंदणयं विज्जाणंदमयं धम्मकित्तिकुलभवणं ।
नमिऊण जिणं वुच्छं, कालसरूवं जहासुत्तं ॥१॥
सुहुमद्धायरदसकोडिकोडिछअराऽवसप्पिणुसप्पिणी ।
ता दुन्नि कालचक्कं, वीसायरकोडिकोडीओ ॥२॥
मुंडियइगाइसगदिणकुरुनरकेसचिअमनिलजलगणिणो ।
अविसयमुसेहजोयणपिहुच्च पल्लमिह पलिओमं ॥३॥
पजथूलकुतणुतणुसमअसंखदलकेसहर सुहुमथूले ।
अद्धुद्धारे खित्ते, पएस वाससयसमयसमया ॥४॥
अस्संख संखवासा, असंखुसप्पिणि कमा सुहुममाणं ।
थूलाण संखवासा, संखसमयुसप्पिणि असंखा ॥५॥
कालाउगाइ अद्धा, दीवादुद्धारि खित्त पुढवाई ।
सुहुमेण मिणसु दसकोडिकोडिपलिएहिं अयरं तु ॥६॥

अ०–असंख्यात; जगनभप०–जगन्नभःप्रदेश=लोकाकाशप्रदेश, ध०–धर्मास्तिकायप्रदेश, अ०–अधर्मास्तिकायप्रदेश, इगजिप०–एकजीवप्रदेश, ट्ठिअ०–स्थित्यध्यवसायस्थान, नि०–निगोद । सि०–सिद्ध, नि०–निगोदजीव, वजि०–वनस्पतिजीव स०–समय, पु०–पुद्गल, अ०–अभव्य, भ०–भव्य, अ०–अलोक, पर०–परवडिया = पतित, वणका०–वनस्पतिकायस्थिति, एतान्यनन्तानि ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुसमसुसमा य सुसमा,
सूसमदुसमा य दुसमसुसमा य ।
दुसमा य दुसमदुसमावसप्पिणुस्सप्पिणुक्कमओ ॥७॥
सागरकोडाकोडी, चउतिदुइगसमदुचत्तसहसूणा ।
वाससहसेगवीसा, इगवीस कमा अयरमाणं ॥८॥
इह तिदुइगकोसुच्चा,
तिदुइगपलिआउ अरतिगम्मि कमा ।
तूअरिबोरामलमाणभोअणा तिदुइगदिणेहिं ॥९॥
तह दुछवन्ना अडवीससयगु चउसट्ठिपिट्ठयकरंडा ।
गुणवन्ना चउसट्ठी गुणसी दिणपालणा य नरा ॥१०॥
अवि सव्वजीवजुअला, निअसमहीणाउ सुरगई तह य ।
थोवकसाया नवरं, सव्वारयथलयराउमिणं ॥११॥
मणुआउसम गयाई, चउरंस हया अजाइ अट्ठंसा ।
गोमहिसुट्टखराई, पणंस साणाइ दसमंसा ॥१२॥
उरभुअग पुव्वकोडी, पलिआसंखंस खयर पढमारे ।
कोसपुहुत्तं भुअगा, उरगा जोअणसहस्स तणू ॥१३॥
पक्खीसु धणुपहुत्तं, गयाइ छक्कोस छट्ठमाहारो ।
तो कमहाणिविसेसो नेओ सेसारएसु सुआ ॥१४॥
पाणं भायण पिच्छण, रविपह दीवपह कुसुम आहारो
भूसण गिह वत्थासण, कप्पदुमा दसविहा दिंति ॥१५॥
ते मत्तंगा भिंगा, तुडिअंगा जोइदीवचित्तंगा ।
चित्तरसा मणिअंगा, गेहागारा अणिअणा य ॥१६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तइआरे पलिओवमअडंसि सेसम्मि कुलगरुप्पत्ती।
जम्मद्धभरहमज्झिमतिभागनइसिंधुगंगंतो ॥१७॥
पलिओवमदसमंसो, पढमस्साऊ तओ कमेणूणा।
पंचसु असंखपुव्वा, पुव्वा नाभिस्स संखिज्जा ॥१८॥
पढमंसो कुमरत्ते, चरिमदसंसो अ वुड्ढभावम्मि।
मज्झिल्लट्ठदसंसेसु जाण कालं कुलगराणं ॥१९॥
धणुसय नव अड सग सड्ढ
छ छ सड्ढपण पण पणीसुच्चा।
कुलगरपिया वि कुलगरसमाउदेहा पिअंगुनिभा ॥२०॥
सविमलवाहण चक्खुम, जसमं अभिचंदओ पसेणइ अ।
मरुदेव नाभिकुलगर, तियअरगंते उसह भरहो ॥२१॥
चउथे अजिआइजिणा, तेवीस इगार चक्कि तहिँ सगरो।
मघव सणकुमर संती, कुंथु अर सुभूम महपउमा ॥२२॥
हरिसेण जओ बंभु त्ति नव बला अयल विजय भद्दा य।
सुप्पह सुदंसणाऽऽणंद नंदणा राम बलभद्दा ॥२३॥
विण्हु तिविट्ठु दुविट्ठू, सयंभु पुरिसुत्तमे पुरिससीहे।
तह पुरिसपुंडरीए, दत्ते लक्खमण कण्हे अ ॥२४॥
आसग्गीवे तारय, मेरय महुकेढवे निसुंभे अ।
बलि पहराए रावण, जरसिंधू नव पडिहरि त्ति ॥२५॥
एवं जिणचउवीसं, चक्की बार नव बल-हरी तयरी।
नवनारएहिँ बिसयरि, सिलागपुरिसा तह इहाई ॥२६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नर पुव्वकोडिआऊ, पंचसयधणुच्च सनयववहारा।
पुव्वं च वासकोडी, सत्तरिलक्खा छपनसहसा ॥२७॥
अट्ठजवमज्झमुस्सेहमंगुलं ते उ हत्थि चउवीसं।
चउकर धणु धणुदुसहस, कोसो कोसचउ जोयणयं॥२८॥
दुदुतिगकुलगरनीई ह-म-धिक्कारा तओ विभासाई।
चउहा सामाईया, बहुहा लेहाइववहारो ॥२९॥
गुणनवइपक्खसेसे, इह वीरो निव्वुओ चउत्थारे।
उस्सप्पिणितइयारे, गए उ एवं पउमजम्मो ॥३०॥
कालदुगे तिचउत्थारगेसु एगूणनवइपक्खेसु।
सेस-गएसुं सिज्झंति हुंति पढमंतिमजिणिंदा ॥३१॥
वीरपउमंतरं पुण, चुलसीसहस सगवास पणमासा।
पंचमअरयनरा सगकरुच्च वीससयवरिसाऊ ॥३२॥
सुहमाइदुपसहंता, तेवीसुदएहिँ चउजुअदुसहसा।
जुगपवरगुरू तस्सम, इगारलक्खा सहस सोल ॥३३॥
एगवयारि सुचरणा, समयविउ पभावगा य जुगपवरा।
पावयणियाइदुतिगाइवरगुणा जुगपहाणसमा ॥३४॥
बारवरिसेहिँ गोयमु, सिद्धो वीराउ वीसहिँ सुहम्मो।
चउसट्ठीए जंबू वुच्छिन्ना तत्थ दस ठाणा ॥३५॥
मणपरमोहिपुलाए, आहारगखवगउवसमे कप्पे।
संजमतियकेवलिसिज्झणा य जंबुम्मि वुच्छिन्ना ॥३६॥
सिज्जंभवेण विहिअं, दसयालिय अट्ठनवइवरिसेहिं।
सत्तरिसएहिँ थक्का, चउपुव्वा भद्दबाहुम्मि ॥३७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुट्टिंसु थूलभद्दे दोसयपनरेहिँ पुव्वअणुओगो।
सुहुम-महापाणाणि अ, आइमसंघयण-संठाणा ॥३८॥
पणचुलसीइसु वयरे, दसपुव्वा अद्धकीलिसंघयणं।
छस्सोलेहि अ थक्का, दुब्बलिए सड्ढनव पुव्वा ॥३९॥
छव्वाससएहिँ नवुत्तरेहिँ सिद्धिं गयस्स वीरस्स।
रहवीरपुरे नयरे, खमणा पासंडिआ जाया ॥४०॥
तेणउअनवसएहिं, समइक्कंतेहिँ वद्धमाणाओ।
पज्जोसवणचउत्थी, कालगसूरीहिं तो ठविआ ॥४१॥
वीरजिणा पुव्वगयं, सव्वं पि गयं सहस्सवरिसेहिं।
सुन्नमुणिवेअजुत्तो, विक्कमकालो उ जिणकाला ॥४२॥
तेरससएहिं वीरा, होहंति अणेगहा मइ(य)विभेआ।
बंधंति जेहिं जीवा, बहुहा कंखाइमोहणियं ॥४३॥
वीरजिणा गुणवीसंसएहिँ पणमासबारवरिसेहिं।
चंडालकुले होही, पाडलिपुरि समणपडिकूलो ॥४४॥
चित्तट्ठमिविट्ठिभवो, कक्की रुद्दो चउम्मुह तिनामा।
अट्ठार-ऽट्ठारस-पन्नवरिस सिसु-दिसिविजय-रज्जे ॥४५॥
तं मुणिभिक्खछलंसं, मग्गंतं हणिय विप्परूवहरी।
तस्सुअदत्तं रज्जे, पइदिणचेइअकरं ठविही ॥४६॥
गुणवीसा सोलेहिं य गहियसोरट्ठखप्परकुरज्जे।
सो काही बहुवच्छरअपुज्जसित्तुंजओद्धारं ॥४७॥
तस्सुअजिणदत्ताई निवा नमिस्संति पाडिवयमाई।
तइया कहं पि होही, तह जाइसरोहिनाणाई ॥४८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिणभत्तनिवा उ इगारसलक्खा सोलसहस होहिंति ।
इहयं वरिससऊणेगवीससहसेहिं वीरजिणा ॥४९॥
तह सग्गचुओ सूरी, दुप्पसहो साहुणी अ फग्गुसिरी ।
नाइल सड्ढो सड्ढी, सव्वसिरी अंतिमो संघो ॥५०॥
एगो साहू एगा य साहुणी सावओ य सड्ढी वा ।
आणाजुत्तो संघो, सेसो पुण अट्ठिसंघाओ ॥५१॥
दसयालियजिअकप्पाऽऽवस्सयअणुओगदारनंदिधरो ।
सययं इंदाइनओ, छट्ठुग्गतवो दुहत्थतणू ॥५२॥
गिहिवयगुरुत्तबारस, चउ चउ वरिसो कयट्ठमो अंते ।
सोहम्मि सागराऊ, होइ तओ सिज्झही भरहे ॥५३॥
सुअसूरिसंघधम्मो, पुव्वण्हे छिज्जिही अगणि सायं ।
निवविमलवाहणो सुहुममंति नयधम्ममज्झण्हे ॥५४॥
तो खारग्गिविसंबिलविज्जुघणा सग्गदिणा पिहु कुपवणा ।
वरिसिय बहुरोगि जलं, काहिंति समं गिरिथलाइं ॥५५॥
गालछारमुम्मुरहाहाभूया तणाइरहिय मही ।
होहिंति बीयमित्तं, वेयड्ढाइसु खगाई वि ॥५६॥
छट्ठअरे दुकरुचा, वीसंवरिसाउ मच्छयाहारा ।
बिलवासी कुगइगमा, कुवन्नरूवा नरा कूरा ॥५७॥
निल्लज्जा निव्वसणा, खरवयणा पियसुआइठिइरहिया ।
छवरिसगब्भा इत्थी, सुदुक्खपसवा बहुसुआ य ॥५८॥
बहुमच्छचक्कवहगंगसिंधुपासेसु नव नव बिलाइं ।
वेयड्ढोभयपासे, बिसयूरि बहुरोगिनरठाणा ॥५९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अग्गिमअराइमाणं, पुव्वअरंते इहं तु छट्ठंते।
हत्थतणु सोलवरिसाउ अन्नहुस्सप्पिणी नवरं ॥६०॥
पुक्खलखीरघयामयरसमेहा वरिसिहिंति पढमंते।
भूसीयलन्ननेहोसहिरसया सत्त सत्त दिणे ॥६१॥
बीए उ पुराइकरो, जाइसरो विमलवाहण सुदामो।
संगम सुपास दत्तो, सुमुहो सम्मइ कुलगर त्ति ॥६२॥
तइयाइसु उड्ढगई जिणनारयबल दुहागई चक्की।
अहरगइ हरिपडिहरी, चउत्थअरयाइसु अ जुअला ॥६३॥
पउमाभ सूरदेवो, सुपास सयंपभ सव्वअणुभूई।
देवसुअ उदय पेढिल पुट्टिल सयकित्ति सुवयऽमम्मा ॥६४॥
निकसाय-निप्पुलय-निमम-चित्तगुत्ता समाहि-संवरिया।
जसहर विजओ मल्लो, देवोऽणंतविरि भद्दकरो ॥६५॥
सड्ढदुसय सहसा पउणचुलसिया लक्खपण छ चउपन्ना।
समकोडिसहस्स तेणूणपलिअचउभाग पलिअद्धं ॥६६॥
पउणपलिऊण तिअयर चउ नव तीस चउपन्न इगकोडी।
छव्वीससहसछावट्ठिलक्खवासायरसऊणा ॥६७॥
नवकोडि नवइकोडी, नवसयकोडी य नवसहसकोडी।
कोडिसहसनवई नव-दस-तीस-पन्नकोडिलक्खा ॥६८॥
बल-वेजयंत-अजिआ, धम्मो सुप्पह-सुदंसणा-ऽऽणंदा।
नंदण-पउमा हलिणु त्ति चक्किणो दीहदंतो अ ॥६९॥
तह गूढदंतओ सुद्धदंत सिरिदंत सिरिभुई सोमो।
पउम महपउम दसमो, विमल विमलवाहण अरिट्ठो ॥७०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नंदी अ नंदिमित्तो, सुंदरबाहु महबाहु अइबलओ ।
महबल बलो दुविट्ठू, तिविट्ठु इय भावि नव विण्हू ॥७१॥
भाविपडिविण्हुणो तिलय लोहजंघो अ वयरजंघो अ ।
केसरि-बलि-पल्हाया, अपराइय-भीम-सुग्गीवा ॥७२॥
इय बारसारचक्कं, कप्पो तेऽणंतपुग्गलपरट्टो ।
तेऽणंता तीअद्धा, अणागयद्धा अणंतगुणा ॥७३॥
सिरिदेविंदमुणीसरविणेअसिरि धम्मघोससूरीहिं ।
अप्पपरजाणणट्ठा, कालसरूवं किमवि भणिअं ॥७४॥

क्षुल्लकभवावलिप्रकरणम् ।

वंदित्ता सिरिवीरं, देविंदनरिंदमहियकमकमलं ।
खुड्डभवाण सरूवं, आवलियाणं च वुच्छामि ॥१॥
गयमुक्कसत्तसासा, थोवो सो सगगुणो लवो भणिओ ।
सो सत्तहत्तरगुणो, मुहुत्त सो तीसगुण दिवसो ॥२॥
एगम्मि मुहुत्तम्मि उ, सगतीससया तिहुत्तरुस्सासा ।
तेरसहस्सा लक्खं, नउयसयं ते अ दिवसम्मि ॥३॥
पुढवाइभवेहिंतो, अइलहुआ तेण हुंति खुड्डभवा ।
सतरभवा इगुसासे, अंसा पुण जाण सुत्तुत्ता ॥४॥
सत्तरसभवग्गहणा, खुड्डागा हुंति एगपाणम्मि ।
तेरस चेव सयाइं, पणनवई चेव अंसाणं ॥५॥
एगूसासस्स भवा, सत्तगुणा काउ तह य तस्संसा ।
सगतीससयतिहुत्तरहरिया थोवस्स खुड्डागा ॥६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अह थोवे खुड्डागा, इगसयमिगवीस सुअहरा बिंति।
सेसंसा तत्थ इमे, बावीससया इगुणवीसा ॥७॥
थोवस्स उ खुड्डागा. अंसेहिँ समं तु सगगुणा विहिया।
पुव्विं व तओ हरिया, एगलवे हुंति खुड्डभवा ॥८॥
अडसयमेगावन्ना, नाणीहिँ लवे खुड्डभवा दिट्ठा।
अंसाणं तु पमाणं, चउसयमिगचत्तमब्भहिया ॥९॥
अह सत्तहुत्तरगुणा, विहिया एगलवखुड्डभवअंसा।
हरिया पुव्वं व तओ, हुंति इगमुहुत्तखुड्डागा ॥१०॥
पणसट्ठिसहसपणसयछत्तीसा इगमुहुत्तखुड्डभवा।
एगोणवीसलक्खा, छासट्ठिसहस्स अंसिइ दिणे ॥११॥
ऊसासभवा दोसयछपन्नगुणिया तहेव तस्संसा।
सगतीससयतिहुत्तरभइए ऊसास आवलिया ॥१२॥
ऊसासे चउचत्तासयछायाला तहेव सेसंसा।
चउवीससयडवन्ना, थोवतया सुत्ति न हि भणिया॥१३॥
इक्को य आणपाणू, चोआलीसं तहेव छायाला।
आवलिअपमाणेणं, अणंतनाणीहिँ निद्दिट्ठो ॥१४॥
एगूसासावलिआ, सत्तगुणा विहिय तह य तस्संसा।
जाया थोवावलिया, मुहुत्तऊसासअवहरिया ॥१५॥
थोवम्मि उ आवलिआ, इगतीससहस्सइगसयछवीसा।
इगवीससया चउदसअब्भहिया जाण सेसंसा ॥१६॥
अह थोवस्सावलिआ, तह अंसा सगगुणा उ काऊणं।
पुव्वं व हरिय नूणं, कायव्वा इगलवावलिया ॥१७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोलक्खसतरसहसा, अडसयपणसी लवस्स आवलिआ।
तत्थ इमे सेसंसा, चउतीससया इगुणसीई ॥१८॥
एगलवावलिअंसा, काऊणं सत्तहुत्तरगुणा य।
पुव्वं व हरिय कुज्जा, आवलिआ इगमुहुत्तम्मि ॥१९॥
अहव मुहुत्तावलिआ, आणेयव्वा मुहुत्तखुड्डागा।
एगभवावलिआणं, पमाणगुणिया समयभणिया ॥२०॥
एगा कोडी सतसट्ठिलक्ख सतहत्तरीसहस्सा य।
दो अ सया सोलहिया, आवलियाणं मुहुत्तम्मि ॥२१॥
ताओ पुण तीसगुणा, पन्नाकोडी अ लक्ख तित्तीसा।
सोलसहस्सा चउसय, असीइ अहिआ अहोरत्ते ॥२२॥
अहवा जह ऊसासे, अंसेहिँ समं हवंति खुड्डागा।
दोसयछप्पन्नेहिं, गुणिया हरिआ य आवलिया ॥२३॥
तह थोवाइसु नेया, नियनियखुड्डगा तहेव सेसंसा।
एगभवावलिगुणिया, हरिया वि य नियनियावलिया॥२४॥
खुड्डागावलिआणं, जं किंपि सरूव नणु मए भणियं।
तं जइ अन्नहभूयं, सोहेयव्वं सुयहरेहिं ॥२५॥

देहस्थितिस्तवः।

देविंदमहिअ! सामिअ! वरविज्जाणंदधम्मकित्ति! मह।
अवधारय जह भमिओ, अफलतणू जिण! असेवाए ॥१॥
ईसाणंतसुरेसु अ, सगहत्थतणू इकिक्कहाणि तओ।
चउछअडबारसमकप्पुवरिमगेविज्जसव्वट्ठे ॥२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुरुलहुठिईइ विवरे, इगउणिएगारभत्तिगारंसे ।
पुव्वतणूचयठिअसेसिगाहिहाणि पइअयर तणू ॥३॥
तिगअडपनरिगुणिसतेवीसदुतीसाइसागराउतणू ।
छकराइ कमूणा चउछतित्तिगऽट्ठिगइगारंसा ॥४॥
सत्तधणुतिकरछंगुलरयणाइतणू अहो दुदुगुणातो ।
उवरि गुरू हिट्ठि लहू, तिकराईए पढमपयरे ॥५॥
बियपयराइ करंगुलदुसट्ठअडतितिगसगगुणीसद्धं ।
वीसा वीस बिसट्ठी, बार खिवे करदुसयपन्ना ॥६॥
लहुसुज्झ निरयतणुठिइ, इगूणनियपयरभइअलद्धं वा ।
बिअपयराइसु वुड्ढी, पयरगुणा लहुअआ जिट्ठा ॥७॥
जोअण बार बिइंदिअपजसंख तिइंदि गुम्मि कोसतिगं ।
चउरिंदि भमरु जोअण, सन्निअरखगा धणुपुहुत्तं ॥८॥
गब्भभुयमुच्छचउपय, कोसपहुत्तियर चउपय छकोसा ।
मुच्छुरगभुअग जोअणपुहुत्त गब्भयनर तिकोसा ॥९॥
सन्निअरमच्छगब्भयउरगा जोअणसहस्स तरु अहियं ।
कोसपुहुत्तं तिरिए, तणुत्तरविउव्वि उक्कोसा ॥१०॥
निरय गुरु सतणुदुगुणा,दुहा वि अंगुलअसंखभागऽनिले ।
गेविज्जऽणुत्तरविणा, गुरु जोअणलक्ख सुरनरए ॥११॥
अपंज दुहा पज लहुतणु, सव्वत्थ वि मुच्छनरलहुगुरू वि ।
अपरित्तिगिंदि पजतणु,गुरू वि अंगुलअसंखंसो ॥१२॥
सुहुमा पज्जनिगोए, लहुतणु अंगुलअसंखभागि तओ ।
नवसु असंखगुणा सुहुम अपजपवणग्गिजलमहिसु ॥१३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थूलअपजानिलानलजलभूऽणंतेसु तस्सम परित्ते ।
सुहुमनिगोए पजलहु, असंख अपजपजगुरु अहिआ ॥१४॥
सुहुमानिलपजलहुतणु, अपजपजुक्कोसतणु विसेसहिआ।
सुहुमग्गिपज्जलहुतणु, असंख अपजपजगुरु अहिआ ॥१५॥
इह सुहुमजले तह सुहुमपुढवि थूलानिले अ थूलग्गी ।
थूलजले थूलमही, थूलनिगोए अ तणुमाणं ॥१६॥
पत्तेअपज्जलहुतणु, अपज्जगुरुतणु कमा असंखगुणा ।
चउगइलहुविउवुत्तर, अंगुलसंखं समारंभे ॥१७॥
इअ तणुअतणू तणुठिइ, अहलगया बहुस पहु ! ससेवाए ।
तह सहलीकुरु अहुणा, जह होमि दुहावि अतणुठिई ॥१८॥

कायस्थितिस्तोत्रम् ।

जह तुहदंसणरहिओ, कायठिईभीसणे भवारन्ने ।
भमिओ भवभयभंजण ! जिणिंद ! तह विन्नविस्सामि ॥१।
अव्ववहारियमज्झे, भमिऊण अणंतपुग्गलपरट्टे ।
कह वि ववहाररासिं, संपत्तो नाह ! तत्थ वि य ॥२॥
उक्कोसं तिरियगई-असन्नि-एगिंदि-वण-नपुंसेसु ।
भमिओ आवलियअसंखभागसमपुग्गलपरट्टा ॥३॥
ओसप्पिणि सुहुमत्ते, असंखलोगप्पएससम ओहे ।
भमिओ तह पिहु सुहुमे, पुढवीजलजलणपवणवणे ॥४॥
ओहेण बायरत्ते, तह बायरवणसईसु ताउ पुणो ।
अंगुलअसंखभागे, दोसड्ढ परट्टय निगोए ॥५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बायरपुढवी जलजलणपवणपत्तेयवणनिगोएसु ।
सत्तरिकोडाकोडी, अयराणं नाह ! भमिओ हं ॥६॥
संखिज्जवाससहसे, बितिचउरिंदीसु ओहओ अ तहा ।
पज्जत्तबायरेगिंदिभूजलानिलपरित्तेसु ॥७॥
बायरपजग्गिबितिचउरिंदिसु संखदिणवासदिणमासा ।
संखिज्जवासअहिया, तसेसु दो सागरसहस्सा ॥८॥
अयरसहस्सं अहियं, पणिंदिसु तितीसअयर सुरनरए ।
सन्निसु तह पुरिसेसुं, अयरसयपहुत्तमब्भहियं ॥९॥
गब्भयतिरियनरेसु य, पल्लतिगं सत्त पुव्वकोडीओ ।
दसहियपलियसयं थीसु पुव्वकोडीपुहुत्तजुअं ॥१०॥
इत्थिनपुंसे समओ, जहन्नु अंतोमुहुत्त सेसेसु ।
अपजेसुक्कोसं पि य, पजसुहुमे थूलणंते वि ॥११॥
विन्नत्ता कायठिइ त्ति कालओ नाह ! जह भमियपुव्वा ।
भवसंवेहेणिण्हि, तु विन्नविस्सामि सामिपुरो ॥१२॥
परभवतब्भवआउं, लहुगुरुचउभंगि सन्निनरतिरिओ ।
नरयछगे उक्कोसं, इगंतरं भमइ अट्ठभवे ॥१३॥
भवणवणजोइ कप्पट्ठगे वि इअ अडभवा उ दु जहन्ना ।
सग सत्तमीइ तिरिओ, पण पुन्नाउसु य ति जहन्ना ॥१४॥
गेविज्जाण य चउगे, सग पणणुत्तरचउक्कि ति जहन्नं ।
पज्जनरो ति सवट्ठे, दुहा दुभव तमतमाइ पुणो ॥१५॥
दुह जुगलितिरिअमणुआ, दुभवा भवणवणजोइकप्पदुगे ।
रयणप्पहभवणवणे, दुह दुभव असन्निपजतिरिओ ॥१६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पजसन्नितिरिनरेसु य, सहसारंता सुरा य छन्निरया।
अडभव सत्तमनिरया, तिरिए छभव चउ पुन्नाऊ ॥१७॥
पंजसन्निनरे छभवा, गेविज्जाण य चउक्कदेवा य।
चउणुत्तरा चउभवा, दु जहन्न दुहा वि दु सवट्ठा ॥१८॥
भूजलवणेसु दुभवा, दुहा वि भवणवणजोइसदुकप्पा।
अमियाउ तिरिनरे तह, मिह सन्नियरतिरिसन्निनरा ॥१९
भूजलपवणग्गी मिह, वणा सुवाइसु वणेसु य सुवाई।
पूरंति असंखभवे, वणा वणेसु य अणंतभवे ॥२०॥
पण पुढवाइसु विगला, विगलेसु सुवाइ विगल संखभवे।
गुरुआउतिभंगे पुण, भवट्ठ सव्वत्थ दुजहन्ना ॥२१॥
मिह सन्नियरतिरिनरा, विगलभुवाइसु य नरतिरिसु एए
अट्ठभवा चउ भंगे, दुह पवणग्गिसु नरा दुभवा ॥२२॥
परतब्भवाउमाणा, इह पहु! संवेहओऽणुबंधठिई।
किंतिउ विन्नविउमलं, चउभंगि जहन्नुकोसकमा ॥२३॥
इह कायठिई भमिओ, सामिय! तुह दंसणं विणा बहुसो
दिट्ठो सि संपयं ता, अकायपयसंपयं देसु ॥२४॥

लोकनालिद्वात्रिंशिका।

जिणदंसणं विणा जे, लोअं पूरंत जम्ममरणेहिं।
भमइ जिओऽणंतभवे, तस्स सरूवं किमवि वुच्छं ॥१॥
वइसाहठाणठिअपयकडित्थकरजुगनरागिई लोओ।
उप्पन्निनासधुवगुण-धम्माईछदव्वपडिपुण्णो ॥२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केण वि न कओ न धओऽणाहारो नहठिओ सयंसिद्धो।
अहमुहमहमल्लगठिअलहुमल्लगसंपुडसरिच्छो ॥३॥
पयतलि सग मज्झेगा, पण कुप्परि सिरतलेग रज्जुपिहू ।
सो चउदसरज्जुचो. माघवइतलाओ जा सिद्धी ॥४॥
सगरज्जु मघवइतला, पएसहाणीइ महिअले एगा ।
तो वुड्ढि बंभ जा पण, पुण हाणी जा सिवे एगा ॥५॥
सगवन्नरेह तिरिअं, ठवसु पणुड्ढं च रज्जु चउअंसे ।
इगरज्जुवित्थरायय, चउदसरज्जुच्च तसनाडी ॥६॥
उड्ढे तिरियं चउरो, दोसु छ दुसु अट्ठ दस य इक्किके ।
बारस दोसुं सोलस, दोसुं वीसा य चउसु पुढो ॥७॥
पुणरवि सोलस दोसुं,
बारस दोसुं च तिसु दस तिसुऽट्ठ ।
छद्दुसु दुसु चउ खंडुअ, सव्वे चउरुत्तरा तिसया ॥८॥
ओअरिय लोअमज्झा, चउचउठाणेसु सत्तपुढवीसु ।
चउर दस सोल वीसा, चउवीस छवीस अडवीसा ॥९॥
अह पणसयबारुत्तर, खंडुअ सोलहिअ अट्ठसय सव्वे ।
घम्माइ लोगमज्झं, जोयणअस्संखकोडीहिं ॥१०॥
सगरज्जु जोयणसयाऽट्ठारस ऊणसगरज्जुमाण इहं ।
अहतिरिअ उड्ढलोआ, निरयनरसुराइ भावुल्ला ॥११॥
अहलोइ निरयअसुरा, वंतरनरतिरिअजोइसतरुग्गी ।
दीवुदही तिरिलोए, सुरसिद्धा उड्ढलोअम्मि ॥१२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इक्किक्करज्जु इक्किक्कनिरय सगपुढवि असुर पढमंतो ।
तह वंतर तदुवरि नरगिरिमाई जोइसा गयणे ॥१३॥

छसु खंडगेसु अ दुगं, चउसु दुगं छसु अ कप्प चत्तारि ।
चउसु चऊ सेसेसु अ, गेविज्जणुत्तरसिद्धंते ॥१४॥

भणितं च—

सोहम्मम्मि दिवड्ढा, अड्ढाइज्जा य रज्जु माहिंदे ।
चत्तारि सहस्सारे, पणऽच्चुए सत्त लोगंते ॥१५॥

तथा चाऽऽगमे—

सम्मत्तचरणसहिआ, सव्वं लोगं फुसे निरवसेसं ।
सत्त य चउदसभाए, पंच य सुअ देसविरईए ॥१६॥

अडवीसा छव्वीसा, चउवीसा वीस सोल दस चउरो ।
सुइरज्जु सत्तपुढविसु,
चउचउभइआ उ पयर घणा ॥१७॥

अडवीससयं छसयरि, अह उड्ढं चउजुआ दुसय सव्वे ।
सुइरज्जु पयररज्जू, दुतीस गुणवीस इगवन्ना ॥१८॥

घणरज्जु अट्ठ हिट्ठा, पउणपणुड्ढं उभे पउणतेर ।
घणपयरसूइरज्जू, खंडुअ चउसट्ठि सोल चऊ ॥१९॥

यवग्गसंगुणे पुण, बिसयगुआला हवंति घणरज्जू ।
ड्ढपणहत्तरिसयं, सड्ढतिसट्ठी अहुड्ढ कमा ॥२०॥

उगुणिअ पयररज्जू, सत्तदुरुत्तरय दुसयचउपण्णा ।
ह उड्ढ नव छपन्ना, सव्वे चउगुणिअ सुइरज्जू ॥२१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अडवीससय अडुत्तर, दससोला अट्ठतीसचउवीसा ।
इअ संवग्गियलोए, तिह रज्जू खंडुआ उ इमे ॥२२॥
एगारसहसदुसया, बत्तीसा चउरसहसचउसट्ठी ।
अह उड्ढं सव्वे पनरससहसा दुसयछन्नउआ ॥२३॥
अड छ चउवीस वीसा,
सोलस दस चउ अट्ठुड्ढ चउ छट्ठ ।
दस बार सोल वीसा सरिसंकगुणाउ चउहि गुणे ॥२४॥
चउ अडवीसा छप्पण्ण
पयरसरिसंकगुणिअ पिहु मिलिए ।
समदीहपिहुव्वेहा, उड्ढमहो खंडुआ नेया ॥२५॥
दाहिणपासि दुखंडा, उड्ढं वामे ठविज्ज विवरीआ ।
नाडीसहिअतिरज्जू, पिहु जाया सत्त दीहुच्चे ॥२६॥
हिट्ठा उ वामखंडं, दाहिणपासे ठविज्ज विवरीअं ।
उवरिमतिरज्जुखंडं, वामे ठाणे अहो दिज्जा ॥२७॥
इअ संवट्टणलोगो, बुद्धिकओ सत्तरज्जुमाणघणो ।
सगरज्जुअहिअ हिट्ठा, गिण्हिअ पासाइँ पूरिज्जा ॥२८॥
घणरज्जु तिसयतेआल तेरबावत्तरा पयरसूई ।
चउपन्नअडसि खंडुअ, सहसिगवीसा नवदुपण्णा ॥२९॥
सगवग्गे सगचउतिगगुणिए उभय अह उड्ढ खंडघणा ।
छन्नउअ सय सियाला, चउगुणिए पयरसुइअंसा ॥३०॥
सगचुलसी पणअडसी, इगतीसछतीस तिबिसचावण्णा ।
पणचउआलजुआ बारसहस चउणउअसयऽडहिआ॥३१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इअ पयरलिहिअवग्गिअसंवट्टिअलोगसारमुवलब्भ ।
सुअधम्मकित्तिअं तह,
जयह जहा भमह न इह भिसं ॥३२॥

श्रीगौतमगणधरस्तोत्रम् ।

जयसिरिविलासभवणं वीरजिणिंदस्स पढमसीसवरं ।
सयलगुणलद्धिजलहिं सिरिगोयमगणहरं वंदे ॥१॥
ॐ सह नमो भगवओ जगगुरुणो गोयमस्स सिद्धस्स ।
बुद्धस्स पारगस्स य, अक्खीणमहाणसस्स सया ॥२॥
अवतर अवतर भगवन् !,
मम हृदये भास्करीं श्रियं बिभृहि ।
ॐ ह्रीँ श्रीँ ज्ञानादि, वितरतु तुभ्यं नमः स्वाहा ॥३॥
वसइ तुह नाममंतो, जस्स मणे सयलवंछिअं दिंतो ।
चिंतामणि-सुरपायव-कामघडाईहि किं तस्स ? ॥४॥
सिरिगोयम ! गणनायग !,
तिहुअणजणसरण ! दुरियदुहहरण ! ।
भवतारण ! रिउवारण ! होसु अणाहस्स मह नाहो ॥५॥
मेरुसिरे सिंहासणकणयमहासहसपत्तकमलठिअं ।
सूरिगणझाणविसयं, ससिप्पहं गोयमं वंदे ॥६॥
सव्वसुहलद्धिदाया, सुमरियमित्तो वि गोयमो भयवं ।
पइठिअगणहरमंतो, दिज्जा मम वंछियं सयलं ॥७॥
इय सिरिगोयम ! संथुअ !, मुणिसुंदरथुइपयं मए वि तुमं ।
देहि मह सिद्धिसिवफलयं भुवणकप्पतरुवरस्स ॥८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नन्दीसूत्रमङ्गलगाथाः ।

जयइ जगजीवजोणीवियाणओ जगगुरू जगाणंदो ।
जगणाहो जगबंधू जयइ जगपियामहो भयवं ॥१॥
जयइ सुयाणं पभवो तित्थयराणं अपच्छिमो जयइ ।
जयइ गुरू लोयाणं जयइ महप्पा महावीरो ॥२॥
भद्दं सव्वजगुज्जोयगस्स भद्दं जिणस्स वीरस्स ।
भद्दं सुरा-ऽसुरनमंसियस्स भद्दं धुयरयस्स ॥३॥
गुणभवणगहण ! सुयरयणभरिय !
दंसणविसुद्धरच्छागा ! ।
संघणगर ! भद्दं ते अखंडचारित्तपागारा ! ॥४॥
संजम-तवतुंबा-ऽरस्स णमो सम्मत्तपारियल्लस्स ।
अप्पडिचक्कस्स जओ होउ सया संघचक्कस्स ॥५॥
भद्दं सीलपडागूसियस्स तव-णियमतुरगजुत्तस्स ।
संघरहस्स भगवओ सज्झायसुणंदिघोसस्स ॥६॥
कम्मरयजलोहविणिग्गयस्स सुयरयणदीहनालस्स ।
पंचमहव्वयथिरकण्णियस्स गुणकेसरालस्स ॥७॥
सावगजणमहुयरिपरिवुडस्स जिणसूरतेयबुद्धस्स ।
संघपउमस्स भद्दं समणगणसहस्सपत्तस्स ॥८॥
तव-संजममयलंछण ! अकिरियराहुमुहदुद्धरिस ! णिच्चं ।
जय संघचंद ! णिम्मलसम्मत्तविसुद्धजुण्हागा ! ॥९॥
परतित्थियगहपहणासगस्स तवतेयदित्तलेसस्स ।
णाणुज्जोयस्स जए भद्दं दमसंघसूरस्स ॥१०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भद्दं धिइवेलापरिगयस्स सज्झायजोगमगरस्स ।
अक्खोभस्स भगवओ संघसमुद्दस्स रुंदस्स ॥११॥
सम्मद्दंसणवइरदढरूढगाढावगाढपेढस्स ।
धम्मवररयणमंडियचामीयरमेहलागस्स ॥१२॥
णियमूसियकणयसिलायलुज्जलजलंतचित्तकूडस्स ।
णंदणवणमणहरसुरभिसीलगंधद्धमायस्स ॥१३॥
जीवदयासुंदरकंदरुद्दरियमुणिवरमइंदइण्णस्स ।
हेउसयधाउपगलंतरत्तदित्तोसहिगुहस्स ॥१४॥
संवरवरजलपगलियउज्झरपविरायमाणहारस्स ।
सावयजणपउररवंतमोरणचंतकुहरस्स ॥१५॥
विणयणयपवरमुणिवरफुरंतविज्जुज्जलंतसिहरस्स ।
विविहगुणकप्परुक्खगफलभर-कुसुमाउलवणस्स ॥१६॥
णाणवररयणदिप्पंतकंतवेरुलियविमलचूलस्स ।
वंदामि विणयपणओ संघमहामंदरगिरिस्स ॥१७॥
वंदे उसभं अजियं संभवमभिणंदणं
सुमति सुप्पभ सुपासं ।
ससि पुप्फदंत सीयल सिज्जंसं वासुपुज्जं च ॥१८॥
विमलमणंतइ धम्मं संतिं कुंथुं अरं च मल्लिं च ।
मुणिसुव्वय णमि णेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥१९॥
पढमेत्थ इंदभूई बीओ पुण होइ अग्गिभूइ त्ति ।
तइए य वाउभूई तओ वियत्ते सुहम्मे य ॥२०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मंडिय-मोरियपुत्ते अकंपिए चेव अयलभाया य ।
मेयज्जे य पभासे य गणहरा हुंति वीरस्स ॥२१॥
जेब्बुइपहसासणयं जयइ सया सव्वभावदेसणयं ।
कुसमयमयणासणयं जिणिंदवरवीरसासणयं ॥२२॥
सुहम्मं अग्गिवेसाणं, जंबूणामं च कासवं ।
पभवं कच्चायणं वंदे, वच्छं सेज्जंभवं तहा ॥२३॥
जसभद्दं तुंगियं वंदे, संभूयं चेव माढरं ।
भद्दबाहुं च पाइण्णं, थूलभद्दं च गोयमं ॥२४॥
एलावच्चसगोत्तं वंदामि महागिरिं सुहत्थिं च ।
तत्तो कोसियगोत्तं बहुलस्स सरिव्वयं वंदे ॥२५॥
हारियगोत्तं साइं च वंदिमो हारियं च सामज्जं ।
वंदे कोसियगोत्तं संडिल्लं अज्जजीयधरं ॥२६॥
तिसमुद्दखायकित्तिं दीव-समुद्देसु गहियपेयालं ।
वंदे अज्जसमुद्दं अक्खुभियसमुद्दगंभीरं ॥२७॥
भणगं करगं झरगं पभावगं णाण-दंसणगुणाणं ।
वंदामि अज्जमंगुं सुयसागरपारगं धीरं ॥२८॥
णाणम्मि दंसणम्मि य तव विणए णिच्चकालमुज्जुत्तं ।
अज्जाणंदिलखमणं सिरसा वंदे पसण्णमणं ॥२९॥
वड्ढउ वायगवंसो जसवंसो अज्जणागहत्थीणं ।
वागरण-करण-भंगिय-कम्मप्पयडीपहाणाणं ॥३०॥
जच्चंजणधाउसमप्पहाण मुद्दीय-कुवलयनिहाणं ।
वड्ढउ वायगवंसो रेवइणक्खत्तणामाणं ॥३१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अयलपुरा णिक्खंते कालियसुयआणुओगिए धीरे ।
बंभद्दीवग सीहे वायगपयमुत्तमं पत्ते ॥३२॥
जेसि इमो अणुओगो पयरइ अज्जावि अड्ढभरहम्मि ।
बहुनगरनिग्गयजसे तं वंदे खंदिलायरिए ॥३३॥
तत्तो हिमवंतमहंतविक्कमं धीपरक्कममणंतं ।
सज्झायमणंतधरं हिमवंतं वंदिमो सिरसा ॥३४॥
कालियसुयअणुओगस्स धारए धारए य पुव्वाणं ।
हिमवंतखमासमणे वंदे णागज्जुणायरिए ॥३५॥
मिउ-मद्दवसंपण्णे अणुपुव्विं वायगत्तणं पत्ते ।
ओहसुयसमायरए णागज्जुणवायए वंदे ॥३६॥
वरकणगतविय-चंपय-विमउलवरकमलगब्भसरिवण्णे ।
भवियजणहिययदइए दयागुणविसारए धीरे ॥३७॥
अड्ढभरहप्पहाणे बहुविहसज्झायसुमुणियपहाणे ।
अणुओइयवरवसहे णाइलकुलवंसणंदिकरे ॥३८॥
भूअहियप्पगब्भे वंदे हं भूयदिण्णमायरिए ।
भवभयवोच्छेयकरे सीसे णागज्जुणरिसीणं ॥३९॥
सुमुणियणिच्चा-ऽणिच्चं सुमुणियसुत्ता-ऽत्थधारयं णिच्चं ।
वंदे हं लोहिच्चं सब्भावुब्भावणातच्चं ॥४०॥
अत्थ-महत्थक्खाणी सुसमणवक्खाणकहणणेव्वाणी ।
पयतीए मद्दुरवाणी पयओ पणमामि दूसगणी ॥४१॥
सुकुमालकोमलतले तेसिं पणमामि लक्खणपसत्थे ।
पादे पावयणीणं पाडिच्छगसएहिं पणिवइए ॥४२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पञ्चपरमेष्ठिनमस्कारः ।

(आचार्यप्रवरउद्द्योतनसूरिकृतकुवलयमालाकथान्तर्गतः)

एस करेमि पणामं अरहंताणं विसुद्धकम्माणं ।
सव्वातिसयसमग्गा अरहंता मंगलं मज्झ ॥१॥
उसभाईए सव्वे चउवीसं जिणवरे णमंसामि ।
होहिंति जे वि संपइ ताणं पि कओ णमोक्कारो ॥२॥
ओसप्पिणि तह अवसप्पिणीसु सव्वासु जे समुप्पण्णा ।
तीता-ऽणागय-भूया सव्वे वंदामि अरहंते ॥३॥
भरहे अवरविदेहे पुव्वविदेहे य तह य एरवए ।
पणमामि पुक्खरद्धे धायइसंडे य अरहंते ॥४॥
अच्छंति जे वि अज्ज वि णर-तिरए देव-णरयजोणीसु ।
एगाणेयभवेसु य भविए वंदामि तित्थयरे ॥५॥
तित्थयरणामगोत्तं वेएंते बद्धमाण-बद्धे य ।
बंधिंसु जे वि जीवा अज्जं चिय ते वि वंदामि ॥६॥
विहरंति जे मुणिंदा छउमत्था अहव जे गिहत्था वा ।
उप्पण्णणाणरयणा सव्वे तिविहेण वंदामि ॥७॥
जे संपइ परिसत्था अहवा जे समवसरणमज्झत्था ।
देवच्छंदगया वा जे वा विहरंति धरणियले ॥८॥
साहेंति जे वि धम्मं जे व ण साहेंति छिण्णमयमोहा ।
वंदामि ते वि सव्वे तित्थयरे मोक्खमग्गस्स ॥९॥
तित्थयरीओ तित्थंकरे य सामे य कसिण गोरे य ।
मुत्ताहल-पउमाभे सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उज्झियरज्जे अहवा कुमारए दारसंगहसणाहे ।
सावचे णिरवचे सव्वे तिविहेण वंदामि ॥११॥

भव्वाण भवसमुद्दे णिबुड्डमाणाण तरणकज्जम्मि ।
तित्थं जेहिं कयमिणं तित्थयराणं णमो ताणं ॥१२॥

तित्थयराण पणामो जीवं तारेइ दुक्खजलहीओ ।
तम्हा पणमह सव्वायरेण ते चेय तित्थयरे ॥१३॥

लोयगुरूणं ताणं तित्थयराणं च सव्वदरिसीणं ।
सव्वण्णूणं एयं णमो णमो सव्वभावेणं ॥१४॥

अरहंतणमोक्कारो जइ कीरइ भावओ इह जणेणं ।
ता होइ सिद्धिमग्गो भवे भवे बोहिलाभाए ॥१५॥

अरहंतणमोक्कारो तम्हा चिंतेमि सव्वभावेण ।
दुक्खसहस्सविमोक्खं अह मोक्खं जेण पावेमि ॥१६॥

*

सिद्धाण णमोक्कारो करेमु भावेण कम्मसिद्धाण ।
भवसयसहस्सबद्धं धंतं कम्मिंधणं जेहिं ॥१७॥

सिज्झंति जे वि संपइ सिद्धा सिज्झिसु कम्मखइयाए
ताणं सव्वाण णमो तिविहेणं करणजोएण ॥१८॥

जे केइ तित्थसिद्धा अतित्थसिद्धा व एक्कसिद्धा वा ।
अहवा अणेगसिद्धा ते सव्वे भावओ वंदे ॥१९॥

जे वि सलिंगे सिद्धा गिहिलिंगे कह वि जे कुलिंगे वा
तित्थयरसिद्धसिद्धा सामण्णा जे वि ते वंदे ॥२०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इत्थीलिंगे सिद्धा पुरिसेण णपुंसएण जे सिद्धा ।
पत्तेयबुद्धसिद्धा बुद्ध-सयंबुद्धसिद्धा य ॥२१॥
जे वि णिसण्णा सिद्धा अहव णिवण्णा ठिया व उस्सग्गे ।
उत्ताणयपासेल्ला सव्वे वंदामि तिविहेण ॥२२॥
णिसि-दियस-पदोसे वा सिद्धा मज्झण्ह-गोसकाले वा ।
कालविवक्खासिद्धा सव्वे वंदामि भावेण ॥२३॥
जोव्वणसिद्धा बाला थेरा तह मज्झिमा य जे सिद्धा ।
दीव-ऽण्णदीवसिद्धा सव्वे तिविहेण वंदामि ॥२४॥
दिव्वावहारसिद्धा समुद्दसिद्धा गिरीसु जे सिद्धा ।
जे केइ भावसिद्धा सव्वे तिविहेण वंदामि ॥२५॥
जे जत्थ केइ सिद्धा काले खेत्ते य दव्व भावे वा ।
ते सव्वे वंदे हं सिद्धे तिविहेण करणेण ॥२६॥
सिद्धाण णमोक्कारो जइ लब्भइ आगए मरणकाले ।
ता होइ सुगइमग्गो अण्णो सिद्धिं पि पावेइ ॥२७॥
सिद्धाण णमोक्कारो जइ कीरइ भावओ असंगेहिं ।
रुंभइ कुगईमग्गं सग्गं सिद्धिं च पावेइ ॥२८॥
सिद्धाण णमोक्कारं तम्हा सव्वायरेण काहामि ।
छेत्तूण मोहजालं सिद्धिपुरिं जेण पावेमि ॥२९॥

*

पणमामि गणहराणं जिणवयणं जेहिं सुत्तबंधेणं ।
बंधेऊण तह कयं पत्तं अम्हारिसा जाव ॥३०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चोद्दसपुव्वीण णमो, आयरियाणं तहूणपुव्वीण ।
वायगवसहाण णमो, णमो य एगारसंगीणं ॥३१॥
आयारधराण णमो धारिज्जइ जेहिं पवयणं सयलं ।
णाणधराणं ताणं आयरियाणं पणिवयामि ॥३२॥
णाणायारधराणं दंसण-चरणे विसुद्धभावाणं ।
तव-विरियधराण णमो आयरियाणं सुधीराणं ॥३३॥
जिणवयणं दिप्पंतं दीवंति पुणो पुणो ससत्तीए ।
पवयणपभासयाणं आयरियाणं पणिवयामि ॥३४॥
गूढं पवयणसारं अंगोवंगे समुद्दसरिसम्मि ।
अम्हारिसेहिं कत्तो तं णज्जइ थोयबुद्धीहिं ? ॥३५॥
तं पुण आयरिएहिं पारंपरएण दीवियं एत्थ ।
जइ होंति ण आयरिया को तं जाणेज्ज सारमिणं ? ॥३६॥
सूयणमेत्तं सुत्तं, सूइज्जइ केवलं तहिं अत्थो ।
जं पुण से वक्खाणं तं आयरिया पयासेंति ॥३७॥
बुद्धीसिणेहजुत्ता आगमजलणेण सुट्ठु दिप्पंता ।
कह पेच्छउ एस जणो सूरिपईवा जहिं णत्थि ? ॥३८॥
चारित्त-सीलकिरणो अण्णाणतमोहणासणो विमलो ।
चंदसमो आयरिओ भविए कुमुए व्व बोहेइ ॥३९॥
दंसणविमलपयावो दसदिसपसरंतणाणकिरणिल्लो ।
जत्थ ण रवि व्व सूरी मिच्छत्ततमंधओ देसो ॥४०॥
उज्जोयओ व्व सूरो फलओ कप्पदुमो व्व आयरिओ ।
चिंतामणि व्व सुहओ जंगमतित्थं च, पणओ हं ॥४१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे जत्थ केइ खेत्ते काले भावे व सव्वहा अत्थि ।
तीता-ऽणागय-भूया ते आयरिए पणिवयामि ॥४२॥
आयरियणमोक्कारो जइ लब्भइ मरणकालवेलाए ।
भावेण कीरमाणो सो होहिइ बोहिलाभाए ॥४३॥
आयरियणमोक्कारो जइ कीरइ तिविहजोगजुत्तेहिं ।
ता जम्म-जरा-मरणे छिंदइ बहुए, ण संदेहो ॥४४॥
आयरियणमोक्कारो कीरंतो सल्लगत्तणं होइ ।
होइ णरा-ऽमरसुहओ अक्खयफलदाणदुल्ललिओ ॥४५॥
तम्हा करेमि सव्वायरेण सूरीण हो ! नमोक्कारं ।
कम्मकलंकविमुक्को अइरा मोक्खं पि पावेस्सं ॥४६॥

*

उवज्झायाणं च णमो संगोवंगं सुयं धरेंताणं ।
सिस्सगणहियट्ठाए झरमाणाणं तयं चेव ॥४७॥
सुत्तस्स होइ अत्थो, सुत्तं पाढेंति ते उवज्झाया ।
अज्झावयाण तम्हा पणमह परमेण भावेण ॥४८॥
सज्झायसलिलणिवहं झरंति जे गिरियड व्व तद्दियहं ।
अज्झावयाण ताणं भत्तीएँ अहं पणिवयामि ॥४९॥
जे कम्मक्खयट्ठाए सुत्तं पाढेंति सुद्धलेसिल्ला ।
ण गणेंति णिययदुक्खं पणओ अज्झावए ते हं ॥५०॥
अज्झावयाण तेसिं भद्दं जे णाण-दंसणसमिद्धा ।
बहुभवियबोहजणयं झरंति सुत्तं सयाकालं ॥५१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अज्झावयस्स पणमह जस्स पसाएण सव्वसुत्ताणि ।
णज्जंति पढिज्जंति य पढमं चिय सव्वसाधूहिं ॥५२॥

उवज्झायणमोक्कारो कीरंतो मरणदेसकालम्मि ।
कुगइं रुंभइ सहसा सोग्गइमग्गम्मि उवणेइ ॥५३॥

उवज्झायणमोक्कारो कीरंतो कुणइ बोहिलाभं तु ।
तम्हा पणमह सव्वायरेण अज्झावयं मुणिणो ! ॥५४॥
उवज्झायणमोक्कारो सुहाण सव्वाण होइ तं मूलं ।
दुक्खक्खयं च काउं जीयं ठावेइ मोक्खम्मि ॥५५॥

*

साहूण णमोक्कारं करेमि तिविहेण करणजोएण ।
जेण भवलक्खबद्धं खणेण पावं विणासेमि ॥५६॥

पणमह तिगुत्तिगुत्ते विलुत्तमिच्छत्त-पत्तसम्मत्ते ।
कम्मकरवत्तपत्ते उत्तमसत्ते पणिवयामि ॥५७॥

पंचसु समिईसु जए तिसल्लपडिपेल्लणम्मि गुरुमल्ले ।
चउविकहापम्मुक्के मय-मोहविवज्जए धीरे ॥५८॥

पणमामि सुद्धलेसे कसायपरिवज्जिए जियाण हिए ।
छज्जीवकायरक्खणपरे य पारंपरं पत्ते ॥५९॥
चउसण्णाविप्पजढे दढव्वए वयगुणेहिँ संजुत्ते ।
उत्तमसत्ते पणओ अपमत्ते सव्वकालं पि ॥६०॥
परिसहबलपडिमल्ले उवसग्गसहे पहम्मि मोक्खस्स ।
विकहापमायरहिए सहिए वंदामि समणे हं ॥६१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समणे सुयणे सुमणे समणे य पावपंकस्स सेवए ।
सवए सुहए समए य सचए साहु अह वंदे ॥६२॥
साहूण णमोक्कारो जइ लब्भइ मरणदेसकालम्मि ।
चिंतामणिं पि लद्धुं किं मग्गसि कायमणियाइं ? ॥६३॥
साहूण णमोक्कारो कीरंतो अवहरेज्ज जं पावं ।
पावाण कत्थ हियए णिवसइ एसो अउण्णाण ? ॥६४॥
साहूण णमोक्कारो कीरंतो भावमेत्तसंसुद्धो ।
सयलसुहाणं मूलं मोक्खस्स य कारणं होइ ॥६५॥
तम्हा करेमि सव्वायरेण साहूण तं णमोक्कारं ।
तरिऊण भवसमुद्दं मोक्खयदीवं च पावेमि ॥६६॥

*

एए जयम्मि सारा पुरिसा पंचेव ताण जोक्कारो ।
एयाण उवरि अण्णो को वा अरिहो पणामस्स ? ॥६७॥
सेयाण परं सेयं मंगल्लाणं च परममंगल्लं ।
पुण्णाण परं पुण्णं फलं फलाणं च जाणेज्जा ॥६८॥
एयं होइ पवित्तं वरयरयं सासयं तहा परमं ।
सारं जीयं पारं पुव्वाणं चोद्दसण्हं पि ॥६९॥
एयं आराहेउं किं वा अण्णेहिं एत्थ कज्जेहिं ? ।
पंचणमोक्कारमणो अवस्स देवत्तणं लहइ ॥७०॥
चारित्तं पि ण वट्टइ णाणं णो जस्स परिणयं किंचि ।
पंचणमोक्कारफलं अवस्स देवत्तणं तस्स ॥७१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एयं दुहसयजलयरतरंगरंगंतभासुरावत्ते ।
संसारसमुद्दम्मि कयाइ रयणं व णो पत्तं ॥७२॥
एयं अब्भुरुहुल्लं, एयं अप्पत्तपत्तयं मज्झ ।
एयं परमभयहरं चोज्जं कोडुं परं सारं ॥७३॥
विज्झइ राहा वि फुडं, उम्मूलिज्जइ गिरी वि मूलाओ ।
गम्मइ गयणयलेणं, दुलहो एसो णमोक्कारो ॥७४॥
जलणो व्व होज्ज सीओ, पडिवहहुत्तं वहेज्ज सुरसरिया ।
ण य णाम ण देज्ज इमो मोक्खफलं जिणणमोक्कारो ॥७५॥
णूणं अलद्धउव्वो संसारमहोयहिं भमंतेहिं ।
जिणसाहुणमोक्कारो तेणऽज्ज वि जम्म-मरणाइं ॥७६॥
जइ पुण पुव्वं लद्धो ता कीस ण होइ मज्झ कम्मखओ ?।
दावाणलम्मि जलिए तणरासी केचिरं ठाउ ? ॥७७॥
अहवा भावेण विणा दव्वेणं पाविओ मए आसि ।
जाव ण गहिओ चिंतामणि त्ति ता किं फलं देइ ?॥७८॥
ता संपइ पत्तो मे आराहेव्वउ मए पयत्तेणं ।
जइ जम्मण-मरणाणं दुक्खाणं अंतमिच्छामि ॥७९॥

प्रवचनमङ्गलसारः ।

(आचार्यप्रवरउद्द्योतनसूरिकृतकुवलयमालाकथान्तर्गतः)

अरहंते णमिऊणं सिद्धे आयरिय-सव्वसाहू य ।
पवयणमंगलसारं वोच्छामि अहं समासेण ॥१॥
पढमं णमह जिणाणं, ओहिजिणाणं च णमह सव्वाणं ।
परमोहिजिणे पणमह, अणंतओहीजिणे णमह ॥२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वंदे सव्वोहिजिणे, पणमह भावेण केवलिजिणे य।
णमह य भवत्थकेवलिजिणणाहे तिविहजोएण ॥३॥
णमह य उज्जुमईणं, विउलमईणं च णमह भत्तीए।
पण्णासमणे पणमह, णमह य तह बीयबुद्धीणं ॥४॥
पणमह य कोट्ठबुद्धी, पयाणुसारीण णमह सव्वाण।
पणमह य सुयधराणं, णमह य संभिण्णसोयाणं ॥५॥
वंदे चोद्दसपुव्वी, तह दसपुव्वी य वायए वंदे।
एयारसंगसुत्त-ऽत्थधारए णमह आयरिए ॥६॥
चारणसमणे पणमह, तह जंघाचारणे य पणमामि।
वंदे विज्जासिद्धे आगासगमे य जिणकप्पे ॥७॥
आमोसहिणो वंदे, खेलोसहि-जल्लोसहिणो णमह।
सव्वोसहिणो वंदे, पणमह आसीविसे तह य ॥८॥
पणमह दिट्ठीविसिणो, वयणविसे णमह तेयलेसिल्ले।
वंदामि सीयलेसे, विप्पोसहिणो य पणमामि ॥९॥
खीरासविणो णमिमो, महुस्सवाणं च वंदिमो चलणे।
अमयस्सवाण पणमह, अक्खीणमहाणसे वंदे ॥१०॥
पणमामि विउव्वीणं जलहीगमणाण भूमिसज्जीणं।
पणमामि अणुयरूए, महल्लरूवे य पणमामि ॥११॥
मणवेगिणो य पणमह, गिरिरायपडिच्छिरे य पणमामि।
दिस्सा-ऽदिस्से णमिमो, णमह य सव्वड्ढिसंपण्णे ॥१२॥
पणमह पडिमावण्णे तवोविहाणेसु चेय सव्वेसु।
पणमामि गणहराणं, जिणजणणीणं च पणमामि ॥१३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केवलणाणं पणमामि दंसणं तह य सव्वणाणाइं।
चारित्तं पंचविहं तेसु य जे साहुणो सव्वे ॥१४॥
चक्कं छत्तं रयणं झओ य चमराइँ दुंदुहीओ य।
सीहासण कंकेल्ली पणमह वाणी जिणिंदस्स ॥१५॥
वंदामि सव्वसिद्धे पंचाणुत्तरणिवासिणो जे य।
लोयंतिए य देवे वंदह सव्वे सुरिंदे य ॥१६॥
आहारयदेहधरे उवसामगसेढिसंठिए वंदे।
सम्मदिट्ठिप्पभुई सव्वे गुणठाणए वंदे ॥१७॥
संती कुंथू य अरो एयाणं आसि णव महाणिहिओ।
चोद्दस रयणाइं पुणो छण्णउई गाम कोडीओ ॥१८॥
बल-केसवाण जुयले पणमह अण्णे य भव्वठाणेसु।
सव्वे वि वंदणिज्जे पवयणसारे पणिवयामि ॥१९॥
ओ मे भवग्गवग्गू सुमणे सोमणस होंतु मह्महुरा।
किलिकिलियघडीचक्काहिलिहिलिदेवीओ सव्वाओ ॥२०॥
इय पवयणस्स सारं मंगलमेयं च पूइयं एत्थ।
एयं जो पढइ णरो सम्मदिट्ठी य गोसग्गे ॥२१॥
तद्दियसं तस्स भवे कल्लाणपरंपरा सुविहियस्स।
जं जं सुहं पसत्थं मंगल्लं होइ तं तं च ॥२२॥

चतुःशरणप्रकीर्णकम्।

सावज्जजोगविरई, उक्कित्तण गुणवओ अ पडिवत्ती।
खलियस्स निंदणा वणतिगिच्छ गुणधारणा चेव ॥१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चारित्तस्स विसोही, कीरइ सामाइएण किल इहयं।
सावज्जेयरजोगाण वज्जणासेवणत्तणओ ॥२॥
दंसणयारविसोही, चउवीसायत्थएण किच्चइ य।
अच्चब्भुयगुणकित्तणरूवेणं जिणवरिंदाणं ॥३॥
नाणाईआ उ गुणा, तस्संपन्नपडिवत्तिकरणाओ।
वंदणएणं विहिणा, कीरइ सोही उ तेसिं तु ॥४॥
खलिअस्स य तेसि पुणो,
विहिणा जं निंदणाइ पडिकमणं।
तेण पडिक्कमणेणं, तेसिं पि य कीरए सोही ॥५॥
चरणाइयाइयाणं, जहक्कमं वणतिगिच्छरूवेणं।
पडिकमणासुद्धाणं, सोही तह काउसग्गेणं ॥६॥
गुणधारणरूवेणं, पच्चक्खाणेण तवइआरस्स।
विरिआयारस्स पुणो, सव्वेहि वि कीरए सोही ॥७॥
गय-वसह-सीह-अभिसेअ-दाम-ससि-दिणयरं झयं कुंभं।
पउमसर-सागर-विमाणभवण-रयणुच्चय-सिहिं च ॥८॥
अमरिंद-नरिंद-मुणिंदवंदियं वंदिउं महावीरं।
कुसलाणुबंधिबंधुरमज्झयणं कित्तइस्सामि ॥९॥
चउसरणगमण-दुक्कडगरहा-सुकडाणुमोयणा चेव।
एस गणो अणवरयं, कायव्वो कुसलहेउ त्ति ॥१०॥
अरिहंत सिद्ध साहू, केवलिकहिओ सुहावहो धम्मो।
एए चउरो चउगइहरणा सरणं लहइ धन्नो ॥११॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अह सो जिणभत्तिभरुच्छरंतरोमंचकंचुअकरालो ।
पहरिसपणउम्मीसं, सीसम्मि कयंजली भणइ ॥१२॥
राग-दोसारीणं, हंता कम्मट्ठगाइअरिहंता ।
विसयकसायारीणं, अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥१३॥
रायसिरिमवकसित्ता, तवचरणं दुचरं अणुचरित्ता ।
केवलसिरिमरहंता, अरहंता हुंतु मे सरणं ॥१४॥
थुइवंदणमरहंता, अमरिंद-नरिंदपूअमरहंता ।
सासयसुहमरहंता, अरहंता हुंतु मे सरणं ॥१५॥
परमणगयं मुणंता, जोइंद-महिंदझाणमरहंता ।
धम्मकहं अरहंता, अरहंता हुंतु मे सरणं ॥१६॥
सव्वजिआणमहिंसं, अरहंता सच्चवयणमरहंता ।
बंभव्वयमरहंता, अरहंता हुंतु मे सरणं ॥१७॥
ओसरणमवसरित्ता, चउतीसं अइसए निसेवित्ता ।
धम्मकहं च कहंता, अरहंता हुंतु मे सरणं ॥१८॥
एगाइ गिराऽणेगे, संदेहे देहिणं समं छित्ता ।
तिहुअणमणुसासंता, अरहंता हुंतु मे सरणं ॥१९॥
वयणामएण भुवणं, निव्वावंता गुणेसु ठावंता ।
जिअलोअमुद्धरंता, अरहंता हुंतु मे सरणं ॥२०॥
अच्चब्भुअगुणवंते, नियजससससहरपसाहिअदिअंते ।
नियथमणाइअणंते, पडिवन्नो सरणमरहंते ॥२१॥
उज्झियजर-मरणाणं, समत्तदुक्खत्तसत्तसरणाणं ।
तिहुअणजणसुहयाणं, अरहंताणं नमो ताणं ॥२२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अरहंतसरणमलसुद्धिलद्धसुविसुद्धसिद्धबहुमाणो ।
पणयसिररइयकरकमलसेहरो सहरिसं भणइ ॥२३॥
कम्मट्ठक्खयसिद्धा, साहाविअनाण-दंसणसमिद्धा ।
सव्वट्ठलद्धिसिद्धा, ते सिद्धा हुंतु मे सरणं ॥२४॥
तिअलोअमत्थयत्था, परमपयत्था अचिंतसामत्था ।
मंगलसिद्धपयत्था, सिद्धा सरणं सुहपसत्था ॥२५॥
मूलुक्खयपडिवक्खा, अमूढलक्खा सजोगिपच्चक्खा ।
साहाविअत्तसुक्खा, सिद्धा सरणं परममुक्खा ॥२६॥
पडिपिल्लिअपडिणीआ, समग्गझाणग्गिदड्ढभवबीआ ।
जोईसरसरणीआ, सिद्धा सरणं समरणीया ॥२७॥
पाविअपरमाणंदा, गुणनीसंदा विदिन्नभवकंदा ।
लद्धुईकयरवि-चंदा, सिद्धा सरणं खविअदंदा ॥२८॥
उवलद्धपरमबंभा, दुल्लहलंभा विमुक्कसंरंभा ।
भुवणघरधरणखंभा, सिद्धा सरणं निरारंभा ॥२९॥
सिद्धसरणेण नयबंभहेउसाहुगुणजणिअअणुराओ ।
मेइणिमिलंतसुपसत्थमत्थओ तत्थिमं भणइ ॥३०॥
जिअलोअबंधुणो कुगइसिंधुणो पारगा महाभागा ।
नाणाइएहिं सिवसुक्खसाहगा साहुणो सरणं ॥३१॥
केवलिणो परमोही, विउलमई सुअहरा जिणमयम्मि ।
आयरिय-उवज्झाया, ते सव्वे साहुणो सरणं ॥३२॥
चउदस-दस-नवपुव्वी, दुवालसिक्कारसंगिणो जे अ ।
जिणकप्पा-ऽहालंदिअ-परिहारविसुद्धिसाहू अ ॥३३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खीरासव महुआसव, संभिन्नस्सोअ कुट्ठबुद्धी अ।
चारण-वेउव्वि-पयाणुसारिणो साहुणो सरणं ॥३४॥
उज्झियवइरविरोहा, निच्चमदोहा पसंतमुहसोहा।
अभिमयगुणसंदोहा, हयमोहा साहुणो सरणं ॥३५॥
खंडिअसिणेहदामा, अकामधामा निकामसुहकामा।
सुपुरिसमणाभिरामा, आयारामा मुणी सरणं ॥३६॥
मिल्हिअविसयकसाया,
उज्झिअघर-घरणिसंगसुहसाया।
अकलिअहरिस-विसाया, साहू सरणं गयपमाया ॥३७॥
हिंसाइदोससुन्ना, कयकारुन्ना सयंभुरुप्पन्ना।
अजरा-ऽमरपहखुन्ना, साहू सरणं सुकयपुन्ना ॥३८॥
कामविडंबणचुक्का, कलिमलमुक्का विमुक्कचोरिक्का।
पावरयसुरयरिक्का, साहुगुणरयणचिच्चिक्का ॥३९॥
साहुत्तसुट्ठिआ जं, आयरियाई तओ अ ते साहू।
साहुभणिएण गहिआ, तम्हा ते साहुणो सरणं ॥४०॥
पडिवन्नसाहुसरणो, सरणं काउं पुणो वि जिणधम्मं।
पहरिसरोमंचपवंचकंचुअंचिअतणू भणइ ॥४१॥
पवरसुकएहि पत्तं, पत्तेहि वि नवरि केहि वि न पत्तं।
तं केवलिपन्नत्तं, धम्मं सरणं पवन्नो हं ॥४२॥
पत्तेण अपत्तेण य, पत्ताणि य जेण नर-सुरसुहाइं।
मुक्खसुहं पुण पत्तेण नवरि धम्मो स मे सरणं ॥४३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निद्दलिअकलुसकम्मो, कयसुहजम्मो खलीकयअहम्मो ।
पसुहपरिणामरम्मो, सरणं मे होउ जिणधम्मो ॥४४॥
कालत्तए वि न मयं, जम्मण-जर-मरण-वाहिसयसमयं ।
अमयं व बहुमयं जिणमयं च सरणं पवन्नो हं ॥४५॥
पसमिअकामपमोहं, दिट्ठा-ऽदिट्ठेसु न कलियविरोहं ।
सिवसुहफलयममोहं, धम्मं सरणं पवन्नो हं ॥४६॥
नरयगइगमणरोहं, गुणसंदोहं पवाइनिक्खोहं ।
निहणियवम्महजोहं, धम्मं सरणं पवन्नो हं ॥४७॥
भासुरसुवन्नसुंदररयणालंकारगारवमहग्घं ।
निहिमिव दोगच्चहरं, धम्मं जिणदेसिअं वंदे ॥४८॥
चउसरणगमणसंचिअसुचरिअरोमंचअंचिअसरीरो ।
कयदुक्कडगरिहाअसुहकम्मखयकंखिरो भणइ ॥४९॥
इहभविअमन्नभविअं, मिच्छत्तपवत्तणं जमहिगरणं ।
जिणपवयणपडिकुट्ठं, दुट्ठं गरिहामि तं पावं ॥५०॥
मिच्छत्ततमंधेणं, अरिहंताइसु अवन्नवयणं जं ।
अन्नाणेण विरइअं, इन्हिं गरिहामि तं पावं ॥५१॥
सुअधम्म-संघ-साहुसु, पावं पडिणीअयाइ जं रइअं ।
अन्नेसु अ पावेसुं, इन्हिं गरिहामि तं पावं ॥५२॥
अन्नेसु अ जीवेसुं, मित्ती-करुणाइगोअरेसु कयं ।
परिआवणाइ दुक्खं, इन्हिं गरिहामि तं पावं ॥५३॥
जं मण-वय-काएहिं, कय-कारिअ-अणुमईहिं आयरिअं ।
धम्मविरुद्धमसुद्धं, सव्वं गरिहामि तं पावं ॥५४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अह सो दुक्कडगरिहादलिउक्कडदुक्कडो फुडं भणइ ।
सुकडाणुरायसमुइन्नपुन्नपुलयंकुरकरालो ॥५५॥
अरिहंतं अरिहंतेसु जं च सिद्धत्तणं च सिद्धेसु ।
आयारं आयरिए, उवज्झायत्तं उवज्झाए ॥५६॥
साहूण साहुचरिअं, देसविरइं च सावयजणाणं ।
अणुमन्ने सव्वेसिं, सम्मत्तं सम्मदिट्ठीणं ॥५७॥
अहवा सव्वं चिय वीअरायवयणाणुसारि जं सुकडं ।
कालत्तए वि तिविहं, अणुमोएमो तयं सव्वं ॥५८॥
सुहपरिणामो निच्चं, चउसरणगमाइ आयरं जीवो ।
कुसलपयडीउ बंधइ, बद्धाउ सुहाणुबंधाओ ॥५९॥
मंदणुभावा बद्धा, तिव्वणुभावा उ कुणइ ता चेव ।
असुहाउ निरणुबंधाउ कुणइ तिव्वाउ मंदाओ ॥६०॥
ता एयं कायव्वं, बुहेहि निच्चं पि संकिलेसम्मि ।
होइ तिकालं सम्मं, असंकिलेसम्मि सुकयफलं ॥६१॥
चउरंगो जिणधम्मो, न कओ चउरंगसरणमवि न कयं ।
चउरंगभवच्छेओ, न कओ हा ! हारिजो जम्मो ॥६२॥
इय जीवपमायमहारिवीरभद्दंतमेयमज्झयणं ।
झाएसु तिसंझमवंझकारणं निव्वुइसुहाणं ॥६३॥

आतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णकम् ।

देसिक्कदेसविरओ, सम्मद्दिट्ठी मरिज्ज जो जीवो ।
तं होइ बालपंडियमरणं जिणसासणे भणियं ॥१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंच य अणुव्वयाइं, सत्त उ सिक्खाउ देसजइधम्मो।
सव्वेण व देसेण व, तेण जुओ होइ देसजई ॥२॥
पाणवह-मुसावाए-अदत्त-परदारनियमणेहिं च।
अपरिमिइच्छाओ वि य, अणुव्वयाइं विरमणाइं ॥३॥
जं च दिसावेरमणं, अणत्थदंडाओ जं च वेरमणं।
देसावगासियं पि य, गुणव्वयाइं भवे ताइं ॥४॥
भोगाणं परिसंखा, सामाइय अतिहिसंविभागो य।
पोसहविही उ सव्वो, चउरो सिक्खाउ वुत्ताओ ॥५॥
आसुक्कारे मरणे, अच्छिन्नाए य जीवियासाए।
नाएहि वा अमुक्को, पच्छिमसंलेहणमकिच्च ॥६॥
आलोइय निस्सल्लो, सघरे चेवारुहित्तु संथारं।
जइ सरइ देसविरओ, तं वुत्तं बालपंडिअयं ॥७॥
जो भत्तपरिन्नाए, उवक्कमो वित्थरेण निद्दिट्ठो।
सो चेव बालपंडियमरणे नेओ जहाजुग्गं ॥८॥
वेमाणिएसु कप्पोवगेसु नियमेण तस्स उववाओ।
नियमा सिज्झइ उक्कोसएण सो सत्तमम्मि भवे ॥९॥
इय बालपंडियं होइ मरणमरिहंतसासणे दिट्ठं।
इत्तो पंडियपंडियमरणं वुच्छं समासेणं ॥१०॥

इच्छामि भंते! उत्तमट्ठं पडिक्कमामि, अइयं पडिक्कमामि, अणागयं पडिक्कमामि, पच्चुप्पन्नं पडिक्कमामि, कयं पडिक्कमामि, कारियं पडिक्कमामि, अणुमोइयं पडिक्कमामि, मिच्छत्तं पडिक्कमामि, असंजमं पडिक्क-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मामि, कसायं पडिक्कमामि, पावपओगं पडिक्कमामि, मिच्छादंसणपरिणामेसु वा इहलोगेसु वा परलोगेसु वा सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा पंचसु इंदियत्थेसु वा अन्नाणंझाणे १ अणायारंझाणे २ कुदंसणंझाणे ३ कोहंझाणे ४ माणंझाणे ५ मायंझाणे ६ लोहंझाणे ७ रागंझाणे ८ दोसंझाणे ९ मोहंझाणे १० इच्छंझाणे ११ मिच्छंझाणे १२ मुच्छंझाणे १३ संकंझाणे १४ कंखंझाणे १५ गेहिंझाणे १६ आसंझाणे १७ तन्हंझाणे १८ छुहंझाणे १९ पंथंझाणे २० पंथाणंझाणे २१ निदंझाणे २२ नियाणंझाणे २३ नेहंझाणे २४ कामंझाणे २५ कलुसंझाणे २६ कलहंझाणे २७ जुज्झंझाणे २८ निजुज्झंझाणे २९ संगंझाणे ३० संगहंझाणे ३१ ववहारंझाणे ३२ कयविक्कयंझाणे ३३ अणत्थदंडंझाणे ३४ आभोगंझाणे ३५ अणाभोगंझाणे ३६ अणाइल्लंझाणे ३७ वेरंझाणे ३८ वियक्कंझाणे ३९ हिंसंझाणे ४० हासंझाणे ४१ पहासंझाणे ४२ पओसंझाणे ४३ फरुसंझाणे ४४ भयंझाणे ४५ रूवंझाणे ४६ अप्पपसंसंझाणे ४७ परनिंदंझाणे ४८ परगरिहंझाणे ४९ परिग्गहंझाणे ५० परपरिवायंझाणे ५१ परदूसणंझाणे ५२ आरंभंझाणे ५३ संरंभंझाणे ५४ पावाणुमोयणंझाणे ५५ अहिगरणंझाणे ५६ असमाहिमरणंझाणे ५७ कम्मोदयपच्चयंझाणे ५८ इड्ढिगारवंझाणे ५९ रसगारवंझाणे ६० सायागारवंझाणे ६१ अवे-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रमणंझाणे ६२ अमुत्तिमरणंझाणे ६३ ।

पसुत्तस्स वा पडिबुद्धस्स वा जो मे कोइ देवसिओ राइओ उत्तमट्ठे अइक्कमो वइक्कमो अइयारो अणायारो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

एस करेमि पणामं, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ।
सेसाणं च जिणाणं, सगणहराणं च सव्वेसिं ॥११॥
सव्वं पाणारंभं, पच्चक्खामि त्ति अलियवयणं च ।
सव्वमदिन्नादाणं, मेहुन्न परिग्गहं चेव ॥१२॥
सम्मं मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ।
आसाओ वोसिरित्ताणं, समाहिमणुपालए ॥१३॥
सव्वं चाहारविहिं, सन्नाओ गारवे कसाए य ।
सव्वं चेव ममत्तं, चएमि सव्वं खमावेमि ॥१४॥
हुज्जा इमम्मि समए, उवक्कमो जीविअस्स जइ मज्झं ।
एयं पच्चक्खाणं, विउला आराहणा होउ ॥१५॥
सव्वदुक्खपहीणाणं, सिद्धाणं अरहओ नमो ।
सद्दहे जिणपन्नत्तं, पच्चक्खामि य पावगं ॥१६॥
नमो त्थु धुअपावाणं, सिद्धाणं च महेसिणं ।
संथारं पडिवज्जामि, जहा केवलिदेसियं ॥१७॥
जं किंचि वि दुच्चरियं, तं सव्वं वोसिरामि तिविहेणं ।
सामाइयं च तिविहं, करेमि सव्वं निरागारं ॥१८॥
बज्झं अब्भिंतरं उवहिं, सरीराइ सभोयणं ।
मणसा वयकाएहिं, सव्वं भावेण वोसिरे ॥१९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वं पाणारंभं, पच्चक्खामि त्ति अलियवयणं च ।
सव्वमदिन्नादाणं, मेहुन्न परिग्गहं चेव ॥२०॥
सम्मं मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ।
आसाओ वोसिरित्ताणं, समाहिमणुपालए ॥२१॥
रागं बंधं पओसं च, हरिसं दीणभावयं ।
उस्सुगत्तं भयं सोगं, रइं अरइं च वोसिरे ॥२२॥
ममत्तं परिवज्जामि, निम्ममत्तं उवट्ठिओ ।
आलंबणं च मे आया, अवसेसं च वोसिरे ॥२३॥
आया हु महं नाणे, आया मे दंसणे चरित्ते य ।
आया पच्चक्खाणे, आया मे संजमे जोगे ॥२४॥
एगो वच्चइ जीवो, एगो चेवुववज्जए ।
एगस्स चेव मरणं, एगो सिज्झइ नीरओ ॥२५॥
एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजुओ ।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा ॥२६॥
संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरा ।
तम्हा संजोगसंबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरे ॥२७॥
मूलगुणे उत्तरगुणे, जे मे नाराहिया पमत्तेणं ।
तमहं सव्वं निंदे, पडिक्कमे आगमिस्साणं ॥२८॥
सत्त भए अट्ठ मए, सन्ना चत्तारि गारवे तिन्नि ।
आसायण तित्तीसं, रागं दोसं च गरिहामि ॥२९॥
अस्संजममन्नाणं, मिच्छत्तं सव्वमेव य ममत्तं ।
जीवेसु अजीवेसु अ, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निंदामि निंदणिज्जं, गरिहामि अ जं च मे गरहणिज्जं ।
आलोएमि अ सव्वं, अब्भिंतरबाहिरं उवहिं ॥३१॥
जह बालो जंपंतो, कज्जमकज्जं च उज्जुअं भणइ ।
तं तह आलोइज्जा, मायामयविप्पमुक्को य ॥३२॥
नाणम्मि दंसणम्मि य, तवे चरित्ते य चउसु वि अकंपो ।
धीरो आगमकुसलो, अपरिस्सावी रहस्साणं ॥३३॥
रागेण व दोसेण व, जं मे अकयन्नुआपमाएणं ।
जो मे किंचि वि भणिओ, तमहं तिविहेण खामेमि ॥३४॥
तिविहं भणंति मरणं, बालाणं बालपंडियाणं च ।
तइयं पंडियमरणं, जं केवलिणो अणुमरंति ॥३५॥
जे पुण अट्ठमईया, पयलियसन्ना य वक्कभावा य ।
असमाहिणा मरंति, न हु ते आराहगा भणिया ॥३६॥
मरणे विराहिए देवदुग्गई दुल्लहा य किर बोही ।
संसारो य अणंतो, हवइ पुणो आगमिस्साणं ॥३७॥
का देवदुग्गई ? का अ बोहि ? केणेव बुज्झई मरणं ?।
केण अणंतं पारं, संसारं हिंडई ? जीवो ॥३८॥
कंदप्पदेवकिव्विसअभिओगा आसुरी य सम्मोहा ।
ता देवदुग्गईओ, मरणम्मि विराहिए हुंति ॥३९॥
मिच्छादंसणरत्ता, सनियाणा किन्हलेसमोगाढा ।
इह जे मरंति जीवा, तेसिं दुलहा भवे बोही ॥४०॥
सम्मद्दंसणरत्ता, अनियाणा सुक्कलेसमोगाढा ।
इह जे मरंति जीवा, तेसिं सुलहा भवे बोही ॥४१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे पुण गुरुपडिणीया, बहुमोहा ससबला कुसीला य।
असमाहिणा मरंति, ते हुंति अणंतसंसारी ॥४२॥
जिणवयणे अणुरत्ता, गुरुवयणं जे करंति भावेणं।
असबलअसंकिलिट्ठा, ते हुंति परित्तसंसारी ॥४३॥
बालमरणाणि बहुसो, बहुआणि अकामगाणि मरणाणि।
मरिहिंति ते वराया, जे जिणवयणं न याणंति ॥४४॥
सत्थग्गहणं विसभक्खणं च जलणं च जलपवेसो अ।
अणयार-भंडसेवी, जम्मणमरणाणुबंधीणि ॥४५॥
उड्ढमहे तिरियम्मि वि, मयाणि जीवेण बालमरणाणि।
दंसणनाणसहगओ, पंडियमरणं अणुमरिस्सं ॥४६॥
उव्वेयणयं जाई, मरणं नरएसु वेअणाओ य।
एआणि संभरंतो, पंडियमरणं मरसु इन्हिं ॥४७॥
जइ उप्पज्जइ दुक्खं, तो दट्ठव्वो सहावओ नवरं।
किं किं मए न पत्तं, संसारं संसरंतेणं ? ॥४८॥
संसारचक्कवाले, सव्वे वि य पुग्गला मए बहुसो।
आहारिया य परिणामिआ य न य हं गओ तत्ति ॥४९॥
तणकट्ठेहि व अग्गी, लवणजलो वा नईसहस्सेहिं।
न इमो जीवो सक्को, तिप्पेउं कामभोगेहिं ॥५०॥
आहारनिमित्तेणं, मच्छा गच्छंति सत्तमिं पुढविं।
सचित्तो आहारो, न खमो मणसा वि पत्थेउं ॥५१॥
पुव्विं कयपरिकम्मो, अनियाणो ऊहिऊण मइबुद्धिं।
पच्छा मलिअकसाओ, सज्जो मरणं पडिच्छामि ॥५२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अक्कंडेऽचिरभाविय, ते पुरिसा मरणदेसकालम्मि ।
पुव्वकयकम्मपरिभावणाइ पच्छा परिवडंति ॥५३॥
तम्हा चंदगविज्झं, सकारणं उज्जुएण पुरिसेण ।
जीवो अविरहियगुणो, कायव्वो मुक्खमग्गम्मि ॥५४॥
बाहिरजोगविरहिओ, अब्भिंतरझाणजोगमल्लीणो ।
जह तम्मि देसकाले, अमूढसन्नो चयइ देहं ॥५५॥
हेतूण रागदोसं, छित्तूण य अट्ठकम्मसंघायं ।
जम्मणमरणरहट्टं, छित्तूण भवा विमुच्चिहिसि ॥५६॥
एवं सव्वुवएसं, जिणदिट्ठं सद्दहामि तिविहेणं ।
तसथावरखेमकरं, पारं निव्वाणमग्गस्स ॥५७॥
न हि तम्मि देसकाले, सक्को बारसविहो सुअक्खंधो ।
सव्वो अणुचिंतेउं, धणियं पि समत्थचित्तेणं ॥५८॥
एगम्मि वि जम्मि पए, संवेगं वीअरायमग्गम्मि ।
गच्छइ नरो अभिक्खं, तं मरणं तेण मरियव्वं ॥५९॥
ता एगं पि सिलोगं, जो पुरिसो मरणदेसकालम्मि ।
आराहणोवउत्तो, चिंतंतो राहगो होइ ॥६०॥
आराहणोवउत्तो, कालं काऊण सुविहिओ सम्मं ।
उक्कोसं तिन्नि भवे, गंतूणं लहइ निव्वाणं ॥६१॥
समणु त्ति अहं पढमं, बीयं सव्वत्थ संजओ मि त्ति ।
सव्वं च वोसिरामि, एयं भणियं समासेणं ॥६२॥
लद्धं अलद्धपुव्वं, जिणवयणसुभासियं अमयभूअं ।
गहिओ सुग्गइमग्गो, नाहं मरणस्स बीहेमि ॥६३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धीरेण वि मरियव्वं, काउरिसेण वि अवस्स मरियव्वं ।
दुन्हं पि हु मरिअव्वे, वरं खु धीरत्तणे मरिउं ॥६४॥
सीलेण वि मरियव्वं, निस्सीलेण वि अवस्स मरियव्वं ।
दुन्हं पि हु मरिअव्वे, वरं खु सीलत्तणे मरिउं ॥६५॥
नाणस्स दंसणस्स य, सम्मत्तस्स य चरित्तजुत्तस्स ।
जो काही उवओगं, संसारा सो विमुच्चिहिसि ॥६६॥
चिरउसिय बंभयारी, पप्फोडेऊण सेसयं कम्मं ।
अणुपुव्वोइ विसुद्धो, गच्छइ सिद्धिं धुयकिलेसो ॥६७॥
निक्कसायस्स दंतस्स, सूरस्स ववसाइणो ।
संसारपरिभीअस्स, पच्चक्खाणं सुहं भवे ॥६८॥
एयं पच्चक्खाणं, जो काही मरणदेसकालम्मि ।
धीरो अमूढसन्नो, सो गच्छइ उत्तमं ठाणं ॥६९॥
धीरो जरमरणविऊ, धीरो विन्नाणनाणसंपन्नो ।
लोगस्सुज्जोअगरो, दिसउ खयं सव्वदुक्खाणं ॥७०॥

प्रभुस्तुति

प्रभु माहरा प्रेमथी नमुं, मूर्त्ति ताहरी जोइने ठरुं ।
अरर ओ प्रभु पाप में कर्यां, शुं थशे हवे माहरी दशा ।
माटे प्रभुजी तमने वीनवुं, तारजो हवे जिनजीने स्तवुं ॥१॥
दीनानाथजी दुःख कापजो, भविकजीवने सुख आपजो ।
पार्श्वनाथजी स्वामि माहरा, गुण गाउं हुं नित्य ताहरा ॥२॥

*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आवा उभा छुं द्वारे प्रभु दर्शन देशो क्यारे ।
अंतरनी अभिलाषा प्रभु पूरी करशो क्यारे ? ॥ आवी० ॥१॥
सळगी रह्यो छुं आजे संसार केरा तापे ।
शीतळ तमारी छाया प्रभु मुजने धरशो क्यारे ? ॥ आवी० ॥२॥
भक्ति करुं न भावे शक्ति वृथा गुमावुं ।
युक्ति न कोइ फावे प्रभु संकट हरशो क्यारे ? ॥ आवी० ॥३॥
दृष्टि न दूर पहोंचे सृष्टि आ शून्य भासे ।
अंधारघेरा उरमां प्रभु उज्ज्वल करशो क्यारे ? ॥ आवी० ॥४॥
भवोभव भमीने आव्यो तुमारे शरणे ।
सूना सूना जीवनमां प्रभु आवी मळशो क्यारे ? ॥ आवी० ॥५॥

श्रीगौडीपार्श्वजिनवृद्धस्तवन ।

(दोहा)

वाणी ब्रह्मावादिनी, जागै जगविख्यात ।
पास तणा गुण गावतां, मुज मुख वसज्यो मात ॥१॥
नारंगै अणहिलपुरै, अहमदाबादै पास ।
गौडीनो धणी जागतो, सहुनी पूरे आस ॥२॥
शुभ वेला शुभ दिन घडी, महुरत एक मंडाण ।
प्रतिमा ते इहां पासनी थई प्रतिष्ठा जाण ॥३॥

(ढाल)

गुणहिं विशाला मंगलिक माला, वामानो सुत साचो जी ।
धण कण कंचण मणि माणक दे, गौडीनो धणी जाचो जी ॥गु०॥४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणहिलपुर पाटण मांहे प्रतिमा, तुरकतणें घर हुंती जी ।
अश्वनी भूमि अश्वनी पीडा, अश्वनी वालि विगूती जी ॥गु०॥५॥
जागंतो जक्ष जेहने कहियै, सुहणौ तुरकनै आपे जी ।
पास जिनेसर केरी प्रतिमा, सेवक तुझ संतापै जी ॥गु०॥६॥
प्रह ऊठीने परगट करजे, मेघा गोठीने देजे जी ।
अधिको म लेजे ओछो म लेजे, टका पांच सै लेजे जी ॥गु०॥७॥
नहीं आपिस तो मारिस मुरडिस, मोरबंध बंधास्ये जी ।
पुत्र कलत्र धन हय हाथी तुझ, लच्छि घगी घर जास्ये जी ॥गु०॥८॥
मारग पहिलो तुझने मिलस्यै, सारथवाह जे गोठी जी ।
निलवट टीलो चोखा चोढ्या, वस्तु वहै तसु पोठी जी ॥गु०॥९॥

(दोहा)

मनसुं बीहनो तुरकडो, माने वचन प्रमाण ।
बीबी ने सुहणा तणो, संभलावे सहिनाण ॥१०॥
बीबी बोले तुरकने, बड़ा देव है कोय ।
अब संताव परगट करो, नहींतर मारे सोय ॥११॥
पाछली रात परोढीयै, पहली बांधै पाज ।
सुहणा माहें सेठने, संभलावै जक्षराज ॥१२॥

(ढाल)

एम कही यक्ष आयो राते, सारथवाहने सुहणें जी ।
पास तणी प्रतिमा तुं लेजे, लेतां सिर मत धूणे जी ॥ए०॥१३॥
पांच सै टका तेहने आपे, अधिको म आपीस वारे जी ।
जतन करी पहुँचाडे थानिक, प्रतिमा गुण संभारे जी ॥ए०॥१४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुझने होसी बहुफलदायक, भाई गोठी ते सुणजे जी ।
पूजीस प्रणमीस तेहना पाया, प्रह ऊठीने थुणजे जी ॥ए०॥१५॥
सुहणो देईने सुर चाल्यो, आपणे थानक पहुंतो जी ।
पाटण मांहे सारथवाहु, हींडे तुरकने जोतो जी ॥ए०॥१६॥
तुरकै जातां दीठो गोठी, चोखा तिलक लिलाडै जी ।
संकेत पहुतो साचो जाणि, बोलावै बहु लाडे जी ॥ए०॥१७॥
मुझ घर प्रतिमा तुझने आपुं, पास जिणेसर केरी जी ।
पांच सै टक्का जो मुझ आपै, मोल न मागुं फेरी जी ॥ए०॥१८॥
नाणो देई प्रतिसा लेई, थानक पहुंतो रंगै जी ।
केसर चंदन मृगमद घोली, विधिसुं पूजे चंगै जी ॥ए०॥१९॥
गादी रूडी रूनी कीधी, ते मांहे प्रतिमा राखै जी ।
अनुक्रम आव्या परिकर मांहे, श्री संघ ने सुर साखै जी ॥ए०॥२०॥
उच्छव दिन दिन आधिका थाये, सत्तर भेद सनात्रो जी ।
ठाम ठाम ना दरसण करवा, आवै लोक प्रभातो जी ॥ए०॥२१॥

(दोहा)

इकदिन देखे अवधिसुं, परिकरपुरनो भङ्ग ।
जतन करूं प्रतिमा तणो, तीरथ अछे अभंग ॥२२॥
सुहणो आपै सेठने, थल अटवी ऊजाड ।
महिमा थास्यै अति घणी, प्रतिमा तिहां पहुँचाड ॥२३॥
कुशल क्षेम तिहां अछै, तुझने मुझने जाण ।
संका छोडी काम कर, करतो म करीस कांण ॥२४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(ढाल)

पास मनोरथ पूरा करे, वाहण एक वृषभ जोतरे ।
परिकरथी परियाणो करे, एक थल चढि बीजे ऊतरे ॥२५॥
बारै कोस आव्या जेतलै, प्रतिमा नवि चालै तेतलै ।
गोठी मनह विमासण थई, पासभुवन मंडावू सही ॥२६॥
आ अटवी किम करूं प्रयाण, कटको कोई न दिसे पाहाण ।
देवल पास जिनेसर तणो, मंडावुं किम गरथै विणो ॥२७॥
जल बिन श्री संघ रहस्यै किहां, सिलावटो किम आवै इहाँ ।
चिंतातुर थयो निद्रा लहे, यक्षराज आवीने कहे ॥२८॥
गुंहली ऊपर नाणो जिहां, गरथ घणो जाणीजे तिहां ।
स्वस्तिक सोपारी सहिनाण, पाहण तणी ऊलटस्यै खाण ॥२९॥
श्रीफल सजल तिहां किल जूओ, अमृतजल नीसरसी कूओ ।
खारा कूवा नो इह सहिनाण, भूमि पडयो छै नीलो झाण ॥३०॥
सिलावटो सीरोही वसै, कोढपराभवियो किस मिसै ।
तिहां थकी तूं इहां आणजे, सत्य वचन माहरो मानजे ॥३१॥
गोठीनो मन थिर थापियो, सिलावटने सुहणो दियो ।
रोग गमाऊं ने पूरूं आस, पास तणो मंडे आवास ॥३२॥
सुपन मांहे मान्यो ते वेण, हेमवरण देखाडयो नेण ।
गोठी मनह मनोरथ हुआ, सिलावटने गया तेडवा ॥३३॥
सिलावटो आवै सूरमो, जिमें खीर खांड घृत चूरमो ।
घडै घाट करे कोरणी, लगन भले पाया रोपणी ॥३४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थंभ थंभ कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली ।
रंगमंडप रलियामणो रचै, जोतां मानवनो मन वसै ॥३५॥
नीपायो पूरो प्रासाद, स्वर्ग समो मंडे आवास ।
दिवस विचारी इण्डो घडचो, ततखिण देवल ऊपर चडचो ॥३६॥
शुभ लगन शुभ वेला वास, पव्वासण बैठा श्रीपास ।
महिमा मोटी मेरुसमान, एकलमल वगडे रहैवान ॥३७॥
वात पुराणी मैं सांभली, तवन मांहि सूधी सांकली ।
गोठी तणा गोतरिया अछै, यात्रा करीने परणे पछै ॥३८॥

(दोहा)

विघनविडारन यक्ष जग, तेहनो अकल सरूप ।
प्रीत करै श्रीसंघने, देखाडे निज रूप ॥३९॥
गिरुओ गौडी पास जिन, आपै अरथभंडार ।
सानिध करै श्रीसंघने, आशा पूरणहार ॥४०॥
नील पलाणै नील हय, नीलो थइ असवार ।
मारग चूका मानवी, वाट दिखावणहार ॥४१॥

(ढाल)

वरण अढार तणो लहै भोग, विघन निवारै टालै रोग ।
पवित्र थई समरे जे जाप, टालै सगला पाप संताप ॥४२॥
निरधनने घर धननो सूत, आपै अपुत्रीयाने पुत्र ।
कायरने सूरापण धरै, पार उतारे लच्छी वरै ॥४३॥
दोभागीने दै सोभाग, पग विहूणाने आपै पग ।
ठाम नहीं तेहने दै ठाम, मन वञ्छित पूरे अभिराम ॥४४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निराधारने वै आधार, भवसागर ऊतारै पार ।
आरतियानी आरतभंग, धरै ध्यान ते लहै सुरंग ॥४५॥
समर्या सहाय दीयै यक्षराज, तेहना मोटा अछै दिवाज ।
बुद्धि हीणने बुद्धि प्रकाश, गूंगाने वै वचनविलास ॥४६॥
दुखियाने सुखनो दातार, भयभंजण रंजण अवतार ।
बंधन तूटै बेडी तणा, श्रीपार्श्वनाम अक्षर समरणा ॥४७॥

(दोहा)

श्रीपार्श्वनाम अक्षर जपै, विश्वानर विकराल ।
हस्तियूथ दूरे टलै, दुर्द्धर सिंह सियाल ॥४८॥
चोरतणा भय चूकवे, विष अमृत उडकार ।
विषधरनो विष ऊतरै, संग्रामे जयजयकार ॥४९॥
रोग सोग दालिद्र दुख, दोहग दूर पुलाय ।
परमेसर श्रीपासनो, महिमा मन्त्र जपाय ॥५०॥

(कडखानी चाल)

ॐ जि तुं ॐ जि तुं ॐ जि उपशम धरी, ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्व अक्षर जपंतै ।
भूत ने प्रेत झोटिंग व्यंतरसुरा, उभसमै वार इकवीस गुणंतै ॥ॐ०॥५१
दुर्द्धरा रोग सोगा जरा जंतु ने, ताव एकांतरा दुत्तपंतै ।
गर्भबंधन व्रणं सर्प विच्छू विषं, बालिका बाल मेवा झखंते ॥ॐ०॥५२।
साइणी डाइणी रोहिणी रंधणी, फोटका मोटका दोष हुंते ।
दाढं ऊंदरतणी कोल नोला तणी, स्वान सीयाल विकराल दंते ॥ॐ०॥५३॥
धरणेंद्र पद्मावती समर शोभावती, वाट आघाट अटवी अटंतै ।
लक्ष्मी-लीला मिलै सुजस वेला वलै, सयल आशा फलै मन हसंते॥ॐ०॥५४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अष्ट महामय हरै कानपीडा टलै, ऊतरे सूल सीसग भणंतै।
वदतावरप्रीतसुं प्रीतिविमल प्रभु, श्रीपासजिन नाम अभिराम मन्तै॥ॐ०॥५५

(कलश)

तपगच्छ नायक शिवसुख दायक श्रीहीरविजय सूरीश्वरो,
तसु पट्ट उदयाचले उदयो श्री विजयसेनसुगणधरो।
इम स्तव्यो गौडी पास जिनवर प्रीतिविमल प्रीतै भणै,
जे भणै भावे लहे सम्पत शाश्वता सुख तेह लहे ॥१॥

श्रीसीताजीनी सज्झाय।

ढाल - पहेली।

कहुं रे मानो एला कंथजी, सीता शीदने लइ आव्या।
रे वारे राजा रामजी, घणुं रोशे भराशे ॥कहुं०॥१॥
रामा ते रज ऊडे घणी, महोल दीसे छे झांखा।
आप सवारथ साधतां, वेर कीधां छे मोटां ॥कहुं०॥२॥
पट चोळी पीडा करी, मंदिर महेलमां हेर्या।
सीताजीने लइने सामा जाओ, शाने थया छो घेला ॥कहुं०॥३॥
निमित्तिआए जोश ते जोइआ, दर प्रथमथी ज एवा।
सीताना हरणथी मरण पामशे, ते दिन आवीने मळियो ॥कहुं०॥४॥
चोथाव्रतनी आखडी, परस्त्रीना पच्चक्खाण।
देवगुरुनी साखे कर्यां, व्रत लेइ मत भांजो ॥कहुं०॥५॥
पाणीमां पाळ बांधी करी, रामचंद्रजी आव्या।
लश्कर तो दीसे घणुं, घगा राय नमाव्या ॥कहुं०॥६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रामचंद्रजीना दळ थकी, नगरी थइ छे बेरी ।
चउदिशे लश्कर विस्तर्युं, लंका लीधी छे घेरी ॥कहुं०॥७॥
स्वामी मने स्वप्नुं लाधीयुं, जाणे लंका प्रजाळी ।
रामचंद्रजीए बाण सांधीयुं, त्यारे हुं तो झबकीने जागी ॥कहुं०॥८॥
ढूंढ्यां ते मंदिर माळीयां, ढूंटी सारी बजार ।
महेल ढूंढ्या रावण तणा, ढूंटी मंदोदरी राणी ॥कहुं०॥९॥
स्वामी आपणुं ते कोइ नहीं, नहीं ऊगरवानो आरो ।
राणीजीनां वचन सुणी करी, बीभीषण राय उदासी ॥कहुं०॥१०॥
हनुमंत सुग्रीवराय वीरा हता, रामचंद्रजी राजा ।
अनंता बहु जोरा थयां, कर्म कीधां छे काचां ॥कहुं०॥११॥
बिभीषणे कहुं सुणो राजवी, सीता जगतनी माता ।
शियल थकी चूके नहीं, क्रोड होशे रे वातां ॥कहुं०॥१२॥
स्वामी हुं तो कहुं छुं तुम भणी, सीता आपोने पाछी ।
जस रे कीर्ति वाधे घणी, वात होशे ज आछी ॥कहुं०॥१३॥
रावण कहे सुण मंदोदरी, आपणे सहुथी अहंकारी ।
कुंभकर्ण सरीखो बांधवो, शुं करशे दशरथनो छैयो ॥कहुं०॥१४॥
कहुं न माने लंकापति, एना कर्म कठोर ।
पण कोइनुं माने नहीं, शुं कहे वारंवार ॥कहुं०॥१५॥
दळ लश्कर लेइ करी, राजा रावण आव्यो ।
लक्ष्मणे रावणने मारीओ, पहोंच्यो नरक मोझार
धन धन लक्ष्मण बंधवा ॥१६॥
बिभीषणने राज्य सोंपी करी, सीता लेइ घर आव्या ।
अयोध्यामां हर्ष वधामणी, घेर घेर मंगळमाळा ॥धन०॥१७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जसडंको देइ करी, रामचंद्रजी आव्या।
अयोध्यामां हर्ष वधामणां, मोतीडे वधाव्या ॥धन०॥१८॥
सासुजीने पाय लागी करी, सासुजीए दीधी आशिष।
दोय पुत्र जणजो पदमणी, कुळना हितकारी ॥धन०॥१९॥
छोड्यां ते मंदिर माळीयां, छोड्या गरथ भंडार।
सीताजीए संयम आदर्यो, पहोंच्यां बारमे देवलोक ॥धन०॥२०॥
नव गाथा पूरवे हती, बार कीधी रे बीजी।
कर जोडी पद्मविजय वीनवे, प्रभु मने पार ऊतार ॥धन०॥२१॥

ढाल - बीजी।

(सुण गोवालणी—राग)

अहो राणाजी कह्युं मानो तो अभिमान सर्व टाळीए।
अहो राणाजी रघुपति केरा चरण कमळ धोइ पीजीए।
अहो राणाजी नाना छे पण ते नर मोटा कहेवाय छे।
अहो राणाजी एना दर्शनथी कांइ मनोरथ सर्व पूराय छे।
एना दशरथ सरखा पिता छे, एनी कौशल्याजी माता छे।
एना लक्ष्मण सरीखा भ्राता छे, अहो राणाजी०॥
एना भरत शत्रुघ्न भाई छे, एने सुग्रीव तो सखाई छे।
एने हनुमान सदा सुखदाई छे, अहो राणाजी०॥

ढाल - त्रीजी।

सुणि मंदोदरी नारायण नमवाने मारे नेम छे,
सुणि मंदोदरी आदिने अंते ते मारे नेम छे,
मारे कुंभकर्ण सरीखा भाई छे, मारे गढने फरती खाई छे,
मारे सवालाख जमाई छे, सुणि०॥१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मारे गढ कांगरा बहु भारी छे, मारे बेठक तो बहु सारी छे,
मारे अक्षौहिणी लश्कर भारी छे, सुणि०॥२॥
मारे ऐरावण आकाश वसे, मारे बलभद्र पाताल वसे,
मारे नितनित राक्षसिणी खबर करे, सुणि०॥३॥
मारे वा वासीदुं काढे छे, मारे जम तो पाणी ताणे छे,
मारे चंद्र सूर्य दोय छत्र धरे, सुणि०॥४॥
विद्याधरनी बातो जाणीने, में नवग्रह बांध्या ताणीने,
हरी लाव्यो राघवराणीने, सुणि०॥५॥

ढाल - बोथी ।

रावण कहे सुणो मंदोदरी, मत हैडुं हार ।
सोनाना गढने कोट छे, नहीं जीते दशरथनो छइयो ।
राणीजी दृढ मन राखीए ।
कुंभकर्ण सरीखा बांधवा, ईन्द्रजीत सरीखा पुत्र ।
समरथ सेना मारे घणी, नहीं जीते दशरथनो पुत्र ॥१॥
रावण कहे सुण मंदोदरी, हुं युद्ध करुं तुं जोजे ।
ए छे वनना भीलडा, मारी झपाट न झीले ॥२॥
रावण कहे सुण मंदोदरी, आपणे अभिमानी छीए ।
लीधी वात नवि मूकीए, पग पाछा नवी दइए ॥३॥
मंदोदरी कहे अहंकारथी, चक्रवर्ती वासुदेव जेवा ।
पस्तावो करी नरके गया, जुओ दुःख पाम्या केवा ॥४॥
सुतो सिंह जगाडीयो, छंछेड्यो काळो नाग ।
सीताने लेइ घेर आवीया, प्रगटयां पूर्वनां पाप ॥५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मदोदरी कहे आपनो, ऊगरवानो आरो कांई ।
एवी वाणी राणी कहे, आव्या बिभीषण भाई ॥६॥
भाई सीताने दीजीए, बेन करीने पाछी ।
रामचंद्रजीसुं हेते रहीए, जगमां वात लागे आछी ॥७॥
बिभीषण कहे सुणो तातजी, सीता जगतनी माता ।
सत्य शीयलथी चूके नहीं, जो करो कोडी ज वाता ॥८॥
हनुमंतवीर विरोधीया, सुग्रीव हता बहु सारा ।
ते पण तारी अनीतिथी, तें कर्म कर्यां बहु कारा ॥९॥
तें कुळने कलंक लगाडीयो, तारे मारी छे छांय ।
हजीय कहुं छुं बे कर जोडीने, मानी ल्यो मुज भाई ॥१०॥
कह्युं रे न माने लंकापति, लेख लख्या विधाता ।
कर्मगति एनी बांकडी, घणुं कह्युं शिरनामी ॥११॥
हाक मारीने ऊठीयो, जा तुं नजरथी दूर ।
नहीं तो तुजने हाथे हणुं, जा तुं रामने हजूर ॥१२॥
त्यांथी बिभीषण चालीया, चाल्या रामनी पास ।
विगत सर्वे संभळावीने, रह्या रामनी पास ॥१३॥
किष्किधाथी लश्कर ऊपडचुं, पछी कीधुं लंकामां एलाण ।
षटूमासे लगे जूझीया, पछे गया रावणना प्राण ॥१४॥
लडतां लक्ष्मण जीतीया, वर्त्यो जयजयकार ।
सीताजीने घेर लेइ आवीया, अयोध्या नगरी मोझार ॥१५॥
धन्य धन्य सती सीताने, धीरज धरी संजम लीधो ।
बारमे देवलोके ईन्द्र थया, राम ज्ञानीए कीधो ॥
धन्य धन्य सती सीताने ॥१६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिन दिवाळीनो गाजीयो, अयोध्या नगरी मोझार ।
धोळाजीमां जूठो एम कहे, गुण गाय श्रीरामचंद्रजीना
धन्य धन्य धन्य श्रीरामने ॥१७॥

प्रभातमां भाववानी भावना ।

आबु अष्टापद गढ गिरनार, समेतशिखर शेत्रुंजो सार ।
पंच तीरथ उत्तम ठाम, सिद्धि वर्या तेन करु प्रणाम ॥१॥

श्री सिद्धाचलने विषे आदीश्वर भगवान पूर्व नवाणुं वार समोसर्या, तेने मारी क्रोडक्रोडवार वंदना होजोजी ॥१॥

पुंडरिकस्वामि पांच क्रोड मुनि साथे सिद्धिपदने वर्या तेने मारी क्रोड०॥२॥

राम भरत त्रण क्रोड साथे सिद्धि वर्या तेने मारी क्रोड०॥३॥

नारदजी एकाणुं लाख साथे सिद्धि वर्या तेने मारी क्रोड०॥४॥

वसुदेवनी पांत्रीस हजार स्त्री सिद्धि वरी तेने मारी क्रोड०॥५॥

ए गिरिराजने विषे शांतिनाथ प्रभुए मुनिराज साथे चोमासुं कीधुं तेने मारी क्रोड०॥६॥

थावच्चा पुत्र एक हजार साथे सिद्धि वर्या तेने मारी क्रोड०॥७॥

सुभद्र मुनि सातसें साथे सिद्धि वर्या तेने मारी क्रोड०॥८॥

नमि विनमि विद्याधर बे क्रोड मुनि साथे सिद्धि वर्या तेने मारी क्रोड०॥९॥

द्राविड अने वारिखिल्लजी, दश क्रोडी साथे सिद्धि वर्या तेने मारी क्रोड०॥१०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शांब प्रद्युम्न साडा आठ क्रोडि साथे सिद्धि वर्या तेने मारी क्रोड०॥११॥

देवकीना षट् पुत्रो साथे सिद्धि वर्या तेने मारी क्रोड०॥१२॥

वली ए गिरिराजने विषे अनंता सिद्धि पदने वर्या तेने मारी क्रोड०॥१३॥

गिरनारजीने विषे श्री नेमिनाथ भगवान बालब्रह्मचारीपणे आ संसार, दुख रुप, दुखे भरेलो, दुखनी खाण, हलाहल विष जेवो जाणीने, राजीमती ने छोडी सहेसावन जइ दीक्षा लेइ केवलज्ञान पामी मोक्षपदने पाम्या तेने मारी क्रोड०॥१४॥

वली गिरनारजीने विषे मूलनायक श्री नेमिनाथजी आदि जिनेश्वर भगवाननी अनेक प्रतिमाओ छे तेने मारी क्रोड०॥१५॥

आबुजी उपर आदीश्वर भगवानना तथा नेमिनाथजीना देरां घणा ज सुंदर छे तेमां कोरणी कारीगरीए घणी ज उत्तम करेली छे तथा देराणी जेठाणीना करावेला गोखला छे जेमां घणी ज नाना कदनी प्रतिमाओ छे तेने मारी क्रोड०॥१६॥

तथा अचलगढ उपर चौदसो ने चुंमालीस मणनी सोनानी चौद प्रतिमा छे तेने मारी क्रोड०॥१७॥

समेतशिखरजीने विषे वीस तीर्थंकर मोक्षपदने पाम्या ते वीसे जिनेश्वरभगवानना पगलां छे तेने तथा तेमां रहेली जिनेश्वर भगवाननी प्रतिमाजीने मारी क्रोड०॥१८॥

अष्टपदजी उपर आदीश्वर भगवान दशहजार मुनियो साथे सिद्धि वर्या तेने मारी क्रोड०॥१९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भरत राजाए सोनानो प्रासाद कराव्यो तेमां रत्नमयी प्रतिमा चोवीस तीर्थंकरोनी भरावी तेने मारी क्रोड०॥२०॥

गौतमस्वामिए प्रभुनी आज्ञा लेइ पोतानी लब्धिए करी अष्टापदनी यात्रा करी तथा तिर्यग्जृंभक देवताने प्रतिबोध करीने पंदरसें तापसोने खीरनां पारणां कराव्यां, ते पण फक्त एक ज पात्रामां थोडी खीर वहोरी लाव्या, पण ते पात्रामां पोतानो अंगुठो राख्यो तेथी तेनी लब्धिए करीने एटला बधा तापसोने खीरथी तृप्त कर्या अने ते तापसोने एवुं आश्चर्य जोई खीर भोजन करतां तेमांना पांचसोने केवलज्ञान थयुं, तथा प्रभु पासे आवतां रस्तामां भावना भावतां बाकीना पांचसोने केवलज्ञान थयुं, बाकीना तापसोने प्रभुनुं समवसरण जोतां ज केवलज्ञान थयुं. माटे एवा लब्धिवंत गौतमस्वामि तथा पंदरसे तापसोने मारी क्रोड०॥२१॥

गोखले गभारे जालीए मालीए जलमां मोतीमां माणिकमां पानामां पुस्तकमां धातुमां काष्ठमां चित्रामणमां परवालामां भोंयमां, भंडारमां ऊर्ध्व अधो तिर्च्छा लोकने विषे अंगुठाथी मांडी पांचसें धनुष्य-प्रमाण जे कोइ जिनेश्वर भगवाननी नानी मोटी प्रतिमा होय तेने मारी क्रोड०॥२२॥

चोसठ इंद्रना पूजनीक, बार गुण सहित, चोत्रीस अतिशयें करी विराजमान, पांत्रीस गुणयुक्त, वाणीए करी भविक जीवोने प्रतिबोधे, सर्वत्र सर्व वस्तुना देखणहार, त्रिभुवनमां मांगलिकदायक, कल्पवृक्ष-समान सात भयथी रहित, त्रिभुवन गुरु, परम ठाकुर, दयावंत, जगतना बांधव, संसार समुद्रमां द्वीप समान, त्रणे भुवनमां दीपक समान, जगतमां चिंतामणिरत्नसरिखा, त्रिभुवनमां मुगट सरिखा जिनराज, मोक्षमार्गने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषे रथसमान, अशरणना शरणभूत, भवसंसारना भयटालक, भाविक लोकोने प्रीति भोजन समान, आठ कर्मरूप अगाधसमुद्रतारण वहाण-समान, समग्र क्रिया अनुष्ठानादिक गुणनी मंजूषासमान, जयवंता, विषम जे कदर्प तेना जे बाण तेने वारवाने सन्नाहसमान, एवा जे श्री अरिहंत भगवान तेने मारी क्रोड०॥२३॥

हुं धन्य, हुं पुण्यवंत पवित्र थयो, मारो मनुष्य भव सफल थयो, जे कारणे, श्री वीतरागना चरण कमलनी भेट थई ए दिवस धन्य कृतार्थ, ए प्रहर सुमुहूर्त सुपवित्र जाणवो जे वेला जगद्गुरु जिनराजने हुं भेटचो, आज मारे रत्नचिंतामणि कल्पवृक्ष कामधेनु कामकुंभ ए सर्व सुलभ थयां, आजे मने अपूर्व वस्तु मली, मारा मोटा भाग्यनो उदय थयो, अढारदोषरहित होय तेने तीर्थंकर कहिए, आठ कर्मना मंथनहार, मोक्ष नगरना सार्थवाह, कर्मपीडारहित, एवा जगन्नाथने स्तवुं छुं, भरतक्षेत्रे अतीत चोवीशीमां प्रथम तीर्थंकर अने केवलज्ञानी निर्वाणी आदि तथा वर्तमान चोविशीमां, प्रथम ऋषभदेव प्रमुख चोवीश तीर्थंकरने तथा अनागत चोविशीमां श्रीपद्मनाभ श्रीश्रेणीक राजानो जीव आदि, त्रण चोवीशीनां बहोंतेर तीर्थंकर वीस विहरमान चार शाश्वता तीर्थंकर मली छत्रु जिन ए सर्वेने मारी क्रोड०॥२४॥

श्री अरिहंत भगवान तथा श्री सिद्ध भगवान, तथा श्री आचार्यजी, तथा श्री उपाध्यायजी तथा श्री साधु मुनिराज, ए पंच परमेष्ठिने मारी क्रोड०॥२५॥

॥ इति भावना संपूर्ण ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सीमंधरजिनआलोयणस्तवन ।

आलोयण हो बोलुं बे कर जोडी ने, सुणो श्रीसीमंधर देव जगजीवना।
प्रभु साखे हो मिच्छामि दुक्कड तेह जो,
वली होजो तुम पाय सेव जगजीवना ॥१॥
भव मांहे भमतां इणे जीवे, कीधां करम अनंत जगजीवना ।
जीभे करी हो कहेतां पार न पामहीं, ते तुं जाणे भगवंत जगजीवना ॥२॥
प्रभु आगे हो कपट कीसुं राखीए, कपटे न छूटे करम जगजीवना।
कीधां पातक पंचेन्द्री तणे वसे, तुं जाणे ते मर्म जगजीवना ॥३॥
षुढवी अप तेउ वाउ वनस्पति, वली छट्ठी त्रसकाय जगजीवना ।
भवोभव हो तेहनी कीधी विराधना, लाख चोरासी मांहि जगजीवना ॥४॥
क्रोध लोभे हो भये तथा हसवे करी, में बोल्या मृषावाद जगजीवना ।
अदत्तादान हो लीधां में लोभे करी, वली मैथुन ने उन्माद जगजीवना ॥५॥
नवविधनो परिग्रह मेलो कारमो, जिहां पाप तणो नहिं पार जगजीवना ।
मनरंगे हो रात्रिभोजन में कार्यां,
वली अभक्ष्य भख्यां बहु वार जगजीवना ॥६॥
ज्ञान दर्शन चारित्र जे में विराधियां, वली कीधा व्रतभंग जगजीवना ।
द्वेष धरी धर्मनी निंदा करी, सात व्यसन सेव्यां मनरंग जगजीवना ॥७॥
सुवावडे रांधण लिंपणे, बोल्या बहु आरंभ जगजीवना ।
करमे करी ने हो गुरुमुखे आलोयां नहीं,
मन मांहि राख्यो दंभ जगजीवना ॥८॥
विषये करी कपटकला केलवी, ते कहेतां आवे लाज जगजीवना ।
चोथे व्रत दूषण लाग्यां जे मुने, ते तो जाणो छो जिनराज जगजीवना ॥९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहु वधना हा करम उपायां जे जिहां,
में तो जाणे अजाणे तेह जगजीवना ।
में सेव्यां पापस्थान अढार जे, प्रभु आलोउं छुं तेह जगजीवना ॥१०॥
में मलीने हो मित्रसुं कीधी वंचना, वली कीधा विश्वास जगजीवना ।
में परनो हो द्वेषपणे द्रोह चिंतव्यो,
एम केता कहुं अवदात जगजीवना ॥११॥
छाना छपना हो करम करसे करी, में तो मूढपणे महाराज जगजीवना ।
तुम साखे हो सांभरे न सांभरे,
ते तो आलोउं छुं आज जगजीवना ॥१२॥
मातपिता पुत्र कलत्र तणे मोहे, वली सगपण ने संबंध जगजीवना ।
साधारण हो करम कीधां बहुभातिनां,
निबिड जेहना दृढ बंध जगजीवना ॥१३॥
जिम कसतां हो कुंदन अधिक शोभा लहे,
जेम ओखद जाये रोग जगजीवना ।
साबुजले जेम वस्त्र उज्ज्वल होवे, तिम पाप टले गुरुयोग जगजीवना ॥१४॥
मनशुद्धे हो मेली मननो आंतरो, गुरुसाखे सुविचार जगजीवना ।
आलोतां हो उदयरत्न कहे आतमा, निर्मल होय निरधार जगजीवना ॥१५॥

॥ इति उदयरत्नकृतं श्रीसीमंधरजिनआलोयणस्तवन ॥

खामणां सज्झाय ।

(झुमखडानी देशी)

पंचपरमेष्ठि ध्याईए रे गुण तेहना संभार करो भवि खामणां ।
सीस नामीने खामणा रे साधवी पण गुणधार करो भवि खामणां ॥१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे गुणि जीवने ऊपरे रे कीधो जेह कषाय करो भवि खामणां ।
विनय करी तस भक्तिथी रे दोष सवि ते खमाय करो भवि खामणां ॥२॥
गुणद्वेषे मत्सर धर्यो रे आ भव परभव जेह करो भवि खामणां ।
पाय लागी त्रिविधे करी रे तास खमावुं तेह करो भवि खामणां ॥३॥
चोरासीलाख योनिमां रे वसीयो वार अनंत करो भवि खामणां ।
वैर विरोध कर्या तिहां रे खामुं ते थइ शांत करो भवि खामणां ॥४॥
सर्व जीव खमजो तुमे रे मारो जे अपराध करो भवि खामणां ।
मैत्री करुं सवि जीवसुं रे तरुं संसार अगाध करो भवि खामणां ॥५॥
क्रोध करी खामे नहीं रे नरक निगोद आवास करो भवि खामणां ।
चोखे चित्ते खामतां रे स्वर्ग मुक्तिमां वास करो भवि खामणां ॥६॥
जेह खमे खामे वली रे ते आराधक थाय करो भवि खामणां ।
जेह खमे नहीं खामतां रे आराधना तस जाय करो भवि खामणां ॥७॥
कूरगडू चउ तप करी रे खामतां केवलनाण करो भवि खामणां ।
चंदनबाला तिम वली रे मृगावती सुजाण करो भवि खामणां ॥८॥
चंडप्रद्योतने दीधलो रे राज्य लीधो जे तास करो भवि खामणां ।
पडिकमणुं उदायीए रे त्यार पछे कर्युं खास करो भवि खामणां ॥९॥
तेणे खमजो खमावजो रे चित्त करी निरमाय करो भवि खामणां ।
म करो कुंभारनी परे रे, वैर विरोध खमाय करो भवि खामणां ॥१०॥
समवसरणमां जिनवरे रे उत्तम पर्षदा मांय करो भवि खामणां ।
पद्मविजय कहे भाषीयो रे सद्दहयो भवि उच्छाहि करो भवि खामणां ॥११॥

॥ इति खामणां सज्झाय ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चार शरणां

(१)

मुजने चार शरण हजो, अरिहंत सिद्ध सुसाधु जी ।
केवलीधर्म प्रकाशीयो, रत्न त्रण अमुलख लाधो जी ॥मु०॥१॥
चउगतितणां दुःख छेदवा, समर्थ शरणां एहो जी ।
पूर्वे मुनिवर जे हुआ, तेणे कीधां शरणां तेहो जी ॥मु०॥२॥
संसारमांही जीवने, समरथ शरणां चारो जी ।
गणी समयसुंदर एम कहे, कल्याण मंगलकारो जी ॥मु०॥३॥

(२)

लाख चोरासी जीव खमावीए, मन धरी परम विवेक जी ।
मिच्छामि दुक्कडं दीजीए, जिनवचने लहीए टेक जी ॥ला०॥१॥
सात लाख क्षुद्र गति तेउ वाउना, दश चौदे वनना भेदो जी ।
खट विगल सुर तिरी नारकी, चउ चउ चउदे भेदो नरना जी ॥ला०॥२॥
जीवाजोनी ए जाणीने, सउसुं मित्र संभावो जी ।
गणी समयसुंदर एम कहे, पामीये पुन्य प्रभावोजी ॥ला०॥३॥

(३)

पाप अढारे जीव परिहरो, अरिहंत-सिद्धनी साखे जी ।
आलोव्यां पाप छूटीअे, भगवंत एणी पेरे भाखे जी ॥पा०॥१॥
आश्रव कषाय दो य बंधना, वळी कलह अभ्याख्यान जी ।
रति अरति पैशुन निंदना, माया मोह मिथ्यात जी ॥पा०॥२॥
मन वच कायाए जे कर्यां, मिच्छामि दुक्कडं तेहो जी ।
गणी समयसुंदर एम कहे, जैन धर्मनो मर्म एहो जी ॥पा०॥३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धन धन ते दिन मुज कदी होस्ये, हुं पामीश संजम सुद्धो जी ।
पूर्वऋषिपंथे चालशुं, गुरु वचने प्रतिबुद्धो जी ॥धन०॥१॥
अंत पंत भिक्षा गोचरी, रणवणे काउस्सग्ग करशुं जी ।
समता शत्रु मित्र भावसुं, संवेग सूधो धरशुं जी ॥धन०॥२॥
संसारना संकट थकी, हुं छूटीश अवतारो जी ।
धन धन समयसुंदर ते घडी, तो हुं पामीश भवनो पारो जी ॥धन०॥३॥

पद्मावती आराधना ।

हवे राणी पद्मावती, जीवराशी खमावे ।
जाणपणुं जगते भलुं, इण वेळा आवे ते मुज मिच्छामि दुक्कडं॥१॥
ते मुज मिच्छामि दुक्कडं, अरिहंतनी शाख ।
जे में जीव विराधीया, चउराशी लाख ॥ते मुज०॥२॥
सात लाख पृथ्वीतणा, साते अपकाय ।
सात लाख तेउ कायना, साते वळी वाय ॥ते मुज०॥३॥
देश प्रत्येक वनस्पति, चउदह साधारण ।
बि त्रि चउरिंद्रि जीवना, बे बे लाख विचार ॥ते मुज०॥४॥
देवता तिर्यंच नारकी, चार चार प्रकाशी ।
चहुदह लाख मनुष्यना, ए लाख चोराशी ॥ते मुज०॥५॥
इण भव परभवे सेवीया, जे पाप अढार ।
त्रिविध त्रिविध करी परिहरुं, दुर्गतिना दातार ॥ते मुज०॥६॥
हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद ।
दोष अदत्तादानना, मैथुन उन्माद ॥ते मुज०॥७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिग्रह मेल्यो कारमो, कीधो क्रोध विशेष ।
मान माया लोभ में कीधां, वळी रागने द्वेष ॥ते मुज०॥८॥
कलह करी जीव दूहव्या, कीधां कूड कलंक ।
निंदा कीधी पारकी, रति अरति निःशंक ॥ते मुज०॥९॥
चाडी कीधी चोतरे, कीधो थापण मोसो ।
कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो आण्यो भरोसो ॥ते मुज०
खाटकीने भवे में कीया, जीव नाना विध घात ।
चीडीमारभवे चरकलां, मार्यां दिन रात ॥ते मुज०॥११॥
काजी मुल्लांने भवे, पढी मंत्र कठोर ।
जीव अनेक जम्भे कीया, कीधां पाप अघोर ॥ते मुज०॥१२॥
माछीने भवे माछलां, झाल्यां जळ वास ।
धीवर भील कोळी भवे, मृग पाड्या पास ॥ते मुज०॥१३॥
कोटवाळने भवे में कीया, आकरा कर दंड ।
बंदीवान मरावीया, कोरडा छडी दंड ॥ते मुज०॥१४॥
परमाधामीने भवे, कीधां नारकी दुःख ।
छेदन भेदन वेदना, ताडन अति तिक्ख ॥ते मुज०॥१५॥
कुंभारने भवे में कीया, नीमाह पचाव्या ।
तेलीभवे तिल पीलीया, पापे पिंड भराव्या ॥ते मुज०॥१६॥
हालीभवे हळ खेडीयां, फाड्यां पृथ्वीनां पेट ।
सुड निंदण घणां कीधां, दीधां बळद चपेट ॥ते मुज०॥१७॥
माळीने भवे रोपीयां, नानाविध वृक्ष ।
मूळ पत्र फल फूलनां, लाग्यां पाप ते लक्ष ॥ते मुज०॥१८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अधोवाइआने भवे, भर्या अधिक भार ।
पोठी पुंठे कीडा पड्या, दया नाणी लगार ॥ते मुज०॥१९॥
छीपाने भवे छेतर्या, कीधा रंगण पास ।
अग्नि आरंभ कीधा घणा, धातुर्वाद अभ्यास ॥ते मुज०॥२०॥
शूरपणे रण जूझतां, मार्यां माणसवृंद ।
मदिरामांस माखण भख्यां, खाधां मूळ ने कंद ॥ते मुज०॥२१॥
खाण खणावी धातुनो, पाणी ऊलेच्यां ।
आरंभ कीधा अति घणा, पोते पाप ज संच्या ॥ते मुज०॥२२॥
कर्म अंगार कीया वळी, घरमें दव दीधा ।
सम खाधा वीतरागना, कुडा कोस ज कीधा ॥ते मुज०॥२३॥
बिल्लीभवे उंदर लीया, गीरोली हत्यारी ।
मूढ गमार तणे भवे, में जू लीख मारी ॥ते मुज०॥२४॥
भाडभुंजा तणे भवे, एकेंद्रिय जीव ।
ज्वारी चणा गहुं शेकीया, पाडंता रीव ॥ते मुज०॥२५॥
खांडण पीसण गारना, आरंभ अनेक ।
रांधण इंधण अग्निनां, कीधां पाप उदेक ॥ते मुज०॥२६॥
विकथा चार कीधी वळी, सेव्या पांच प्रमाद ।
इष्ट वियोग पाडचा कीया, रुदन विषवाद ॥ते मुज०॥२७॥
साधु अने श्रावकतणां, वृत लहीने भांग्यां ।
मूळ अने उत्तर तणां, मुज दूषण लाग्यां ॥ते मुज०॥२८॥
साप वींछी सिंह चीबरा, शकरा ने समळी ।
हिंसक जीव तणे भवे, हिंसा कीधी सबळी ॥ते मुज०॥२९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुवावडी दूषण घणां, वळी गर्भ गळाव्या ।
जीवाणी घोळ्यां घणां, शीळ व्रत भंजाव्यां ॥ते मुज०॥३०॥
भव अनंत भमतां थकां, कीधा देह संबंध ।
त्रिविध त्रिविध करी वोसीरुं, तीणशुं प्रतिबंध ॥ते मुज०॥३१॥
भव अनंत भमतां थकां, कीधां परिग्रह संबंध ।
त्रिविध त्रिविध करी वोसीरु, तीणशुं प्रतिबंध ॥ते मुज०॥३२॥
भव अनंत भमतां थकां, कीधां कुटुंब संबंध ।
त्रिविध त्रिविध करी वोसीरुं, तीणशुं प्रतिबंध ॥ते मुज०॥३३॥
इणि परे इह भव परभवे, कीधां पाप अखत्र ।
त्रिविध त्रिविध करी वोसीरुं, करुं जन्म पवित्र ॥ते मुज०॥३४॥
एणि विधे ए आराधना, भवि करशे छेह ।
समयसुंदर कहे पापथी, वळी छूटशे तेह ॥ते मुज०॥३५॥
राग वेराडी जे सुणे, एह त्रीजी ढाल ।
समयसुंदर कहे पापथी, छूटे तत्काळ ॥ते मुज०॥३६॥

पुण्यप्रकाशनुं स्तवन ।

(दोहा)

सकळ सिद्धिदायक सदा, चोवीसे जिनराय ।
सद्गुरु स्वामिनी सरसती, प्रेमे प्रणमुं पाय ॥१॥
त्रिभुवनपति त्रिसला तणो, नंदन गुणगंभीर ।
शासन नायक जग जयो, वर्धमान वडवीर ॥२॥
एक दिन वीर जिणंदने, चरणे करी प्रणाम ।
भाविक जीवना हित भणी, पूछे गौतम स्वाम ॥३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुक्ति मारग आराधीए, कहो किण परे अरिहंत ।
सुधासरस तव वचन रस, भाखे श्री भगवंत ॥४॥
१ अतिचार आलोइए, २ व्रत धरीए गुरुशाख ।
३ जीव खमावो सयल जे, योनि चोराशी लाख ॥५॥
४ विधिशुं वळी वोसरावि‌ए, पापस्थानक अढार ।
५ चार शरण नित्य अनुसरो, ६ निंदो दुरित आचार ॥६॥
७ शुभकरणी अनुमोदिए, ८ भाव भलो मन आण ।
९ अणसण अवसर आदरी, १० नवपद जपो सुजाण ॥७॥
शुभ गति आराधन तणा, ए छे दस अधिकार ।
चित्त आणिने आदरो, जेम पामो भव पार ॥८॥

ढाल १ ली

(कुमतीए छेडी कीहां राखी—ए देशी)

ज्ञान दरिसण चारित्र तप वीरज, ए पांचे आचार ।
एह तणा एह भव परभवना, आलोइए अतिचार रे
प्राणी ज्ञान भणो गुणखाणी ।
वीर वदे एम वाणी रे प्राणी ज्ञान भणो गुणखाणी॥१॥ (ए आंकणी)
गुरु ओळवीए नहीं गुरु विनय, काळे धरी बहु मान ।
सूत्र अरथ तदुभय करी सुधां, भणिए वही उपधान रे ॥
प्रा० ज्ञा० ॥२॥
ज्ञानोपगरण पांटी पोथी, ठवणी नोकारवाली ।
तेह तणी कीधी आशातना, ज्ञानभक्ति न संभाली रे ।
प्रा० ज्ञा० ॥३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ।
आ भव परभव वळी रे भवोभव, मिच्छा मि दुक्कडं तेह रे ॥
प्राणी समकित ल्यो शुद्ध जाणी ॥४॥
वीर वदे एम वाणी रे प्राणी समकित ल्यो शुद्ध जाणी ॥
जिनवचने शंका नवि कीजे, नवि परमत अभिलाख ।
साधु तणी निंदा परिहरजो, फल संदेह म राख रे ॥
प्रा० स० ॥५॥
मूढपणुं छंडो परशंसा, गुणवंतने आदरिए ।
साहंमिने धर्मे करी थिरता, भक्ति प्रभावना करिए रे ॥
प्रा० स० ॥६॥
संघ चैत्य प्रासाद तणो जे, अवर्णवाद मन लेख्यो ।
द्रव्य देवको जे विणसाड्यो, विणसंतो ऊवेख्यो रे ॥
प्रा० स० ॥७॥
इत्यादिक विपरीतपणाथी, समकित खंड्युं जेह ।
आ भव परभव वळी रे भवोभव, मिच्छा मि दुक्कडं तेह रे ॥
प्राणी चारित्र ल्यो चित्त आणी ॥८॥
वीर वदे एम वाणी रे प्राणी चारित्र ल्यो चित आणी ॥
पंच समिति त्रण गुप्ति विराधी, आठे प्रवचन माय ।
साधु तणे धरमे परमादे, अशुद्ध वचन मन काय रे ॥
प्रा० चा० ॥९॥
श्रावकने धर्मे सामायिक, पोसहमां मन वाळी ।
जे जयणापूर्वक ए आठे, प्रवचन माय न पाळी रे ॥
प्रा० चा० ॥१०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र डोहोळ्युं जेह ।
आ भव परभव वळी रे भवोभव, मिच्छा मि दुक्कडं तेह रे ॥
प्रा० चा० ॥११॥

बारे भेदे तप नवि कीधो, छते जोगे निज शक्ते ।
धर्मे मन वच काया वीरज, नवि फोरविउं भगते रे ॥
प्रा० चा० ॥१२॥

तप वीरज आचार एणी परे, विविध विराध्या जेह ।
आ भव परभव वळी रे भवोभव, मिच्छा मि दुक्कडं तेह रे ॥
प्रा० चा० ॥१३॥

वळी य विशेषे चारित्र केरा, अतिचार आलोइए ।
वीरजिणेसरवयण सुणीने, पाप मेलां सवि धोइए रे ॥
प्रा० चा० ॥१४॥

ढाल २ जी

(पामी सुगुरु पसाय. ए देशी)

पृथ्वी पाणी तेउ, वायु वनस्पती; ए पांचे थावर कह्यां ए ॥१॥
करी करसण आरंभ, खेत्र जे खेडीयां; कुवा तळाव खणावीयां ए ॥२॥
घर आरंभ अनेक, टांकां भोंयरां; मेडी माळ चणावीआं ए ॥३॥
लींपण गुंपण काज, एणी परे परे परे; पृथ्वीकाय विराधीया ए ॥४॥
धोयण नाहण पाणी, झीलण अपकाय, छोति धोति करी दूहव्या ए ॥५॥
भाठीगर कुंभार, लोह सुवनगरा; भाडभुंजा लीहालागरा ए ॥६॥
तापण शेकण काज, वस्त्र निखारण; रंगण रांधण रसवती ए ॥७॥
एणी परे कर्मादान, परे परे केलवी; तेउ वायु विराधीया ए ॥८॥
वाडी वन आराम, वावी वनस्पती; पान फूल फळ चुंटीयां ए ॥९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पोहोंक पापडी शाक, सेक्यां सूकव्यां; छेद्यां छुंद्यां आथीयां ए ॥१०॥
अळशीने एरंडा, घाणी घालीने, घणा तिलादिक पीलीया ए ॥११॥
घाली कोलु मांहे, पीली सेलडी; कंदमूल फल वेचीयां ए ॥१२॥
एम एकेंद्री जीव, हण्या हणावीया; हणतां जे अनुमोदिया ए ॥१३॥
आ भव परभव जेह, वळी य भवोभवे; ते मुज मिच्छा मि दुक्कडं ए॥१४॥
कृमि चरमीया कीडा, गाडर गंडोला; इअळ पुरा ने अलसीयां ए ॥१५॥
वाळा जळो चुडेल, विचलित रस तणा; वळी अथाणां प्रमुखनां ए ॥१६॥
एम बेइंद्री जीव, जेह में दूहव्या; ते मुज मिच्छा मि दुक्कडं ए ॥१७॥
उधेही जू लीख, मांकड मंकोडा; चांचड कीडी कुंथुआ ए ॥१८॥
गद्दहिआं घीमेल, कानखजूरीआ, गींगोडा धनेरीयां ए ॥१९॥
एम तेइंद्री जीव, जेह में दूहव्या; ते मुज मिच्छा मि दुक्कडं ए ॥२०॥
माखी मच्छर डांस, मसा पतंगीया; कंसारी कोलियावडा ए ॥२१॥
ढींकण वींछु तीड, भमरा भमरीयो; कोतांबग खडमांकडी ए ॥२२॥
एम चउरिंद्री जीव, जेह में दूहव्या; ते मुज मिच्छा मि दुक्कडं ए ॥२३॥
जळमां नांखी जाळ, जळचर दूहव्या; वनमां मृग संतापीया ए ॥२४॥
पीडया पंखी जीव, पाडी पासमां; पोपट घाल्या पांजरे ए ॥२५॥
एम पंचेंद्री जीव, जे में दूहव्या; ते मुज मिच्छा मि दुक्कडं ए ॥२६॥

ढाल ३ जी

(वाणी वाणी हितकारीजी. ए देशी)

क्रोध लोभ भय हास्यथी जी, बोल्यां वचन असत्य ।
कूड करी धन पारकां जी, लीधां जेह अदत्त रे जिनजी
मिच्छा मि दुक्कडं आज ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुम साखे महाराज रे जिनजी, देई सारुं काज रे जिनजी
मिच्छा मि दुक्कडं आज ॥ ए आंकणी ॥१॥
देव मनुष्य तिर्यंचनां जी, मैथुन सेव्यां जेह ।
विषयारस लंपटपणे जी, घणुं विडंब्यो देह रे जिनजी० ॥२॥
परिग्रहनी ममता करी जी, भवे भवे मेली आथ ।
जे जिहां ते तिहां रह्युं जी, कोई न आवे साथ रे जिनजी० ॥३॥
रयणीभोजन जे कर्यां जी, कीधां भक्ष अभक्ष ।
रसनारसनी लालचे जी, पाप कर्यां प्रत्यक्ष रे जिनजी० ॥४॥
व्रत लेई वीसारीयां जी, वळी भाग्यां पच्चखाण ।
कपट हेतु किरिया करी जी, कीधां आप वखाण रे जिनजी० ॥५॥
त्रण ढाळे आठे दुहे जी, आलोया अतिचार ।
शिवगतिआराधन तणो जी, ए पहेलो अधिकार रे जिनजी
मिच्छा मि दुक्कडं आज ॥६॥

ढाल ४ थी

(साहेलडीनी देशी)

पंच महाव्रत आदरो साहेलडी रे, अथवा ल्यो व्रत बार तो ।
यथाशक्ति व्रत आदरी साहेलडी रे, पाळो निरतिचार तो ॥१॥
व्रत लीधां संभारीए सा०, हैडे धरीए विचार तो ।
शिवगतिआराधन तणो सा०, ए बीजो अधिकार तो ॥२॥
जीव सवी खमावीए सा०, योनि चोराशी लाख तो ।
मन शुद्धे करि खामणां सा०, कोइशुं रोष न राख तो ॥३॥
सर्व मित्र करि चिंतवो सा०, कोई न जाणो शत्रु तो ।
राग द्वेष एम परिहरो सा०, कीजे जन्म पवित्र तो ॥४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वामि संघ खमाविए सा०, जे उपनी अप्रीत तो ।
सज्जन कुटुंब करि खामणां सा०, ए जिनशासनरीत तो ॥५॥
खमिए ने खमाविए सा०, एह ज धर्मनो सार तो ।
शिवगतिआराधन तणो सा०, ए त्रीजो अधिकार तो ॥६॥
मृषावाद हिंसा चोरी सा०, धनमूर्छा मैथुन तो ।
क्रोध मान माया तृष्णा सा०, प्रेम द्वेष पैशुन्य तो ॥७॥
निंदा कलह न कीजिए सा०, कूडां न दीजे आळ तो ।
रति अरति मिथ्या तजो सा०, माया मोह जंजाळ तो ॥८॥
त्रिविध त्रिविध वोसराविए सा०, पापस्थान अढार तो ।
शिवगतिआराधन तणो सा०, ए चोथो अधिकार तो ॥९॥

ढाल ५ मी

(हवे निसुणो इहां आवीया. ए देशी)

जनम जरा मरणे करी ए, आ संसार असार तो ।
कर्यां कर्म सहु अनुभवे ए, कोइ न राखणहार तो ॥१॥
शरण एक अरिहंतनुं ए, शरण सिद्ध भगवंत तो ।
शरण धर्म श्री जैननो ए, साधु शरण गुणवंत तो ॥२॥
अवर मोह सवि परिहरी ए, चार शरण चित्त धार तो ।
शिवगति आराधन तणो ए, ए पांचमो अधिकार तो ॥३॥
आ भव परभव जे कर्यां ए, पाप कर्म केइ लाख तो ।
आतमसाखे ते निंदिए ए, पडिक्कमिए गुरुसाख तो ॥४॥
मिथ्यामति वर्ताविया ए, जे भाख्यां उत्सूत्र तो ।
कुमति कदाग्रहने वशे ए, जे उत्थाप्यां सूत्र तो ॥५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घडचां घडाव्यां जे घणां ए, घरटी हळ हथिआर तो ।
भव भव मेली मूकियां ए, करतां जीवसंहार तो ॥६॥
पाप करीने पोषिया ए, जनम जनम परिवार तो ।
जनमांतर पोहोत्या पछी ए, कोणे न कीधी सार तो ॥७॥
आ भव परभव जे कर्यां ए, एम अधिकरण अनेक तो ।
त्रिविध त्रिविध वोसराविए ए, आणि हृदय विवेक तो ॥८॥
दुष्कृत निंदा एम करी ए, पाप करो परिहार तो ।
शिवगतिआराधन तणो ए, ए छट्ठो अधिकार तो ॥९॥

ढाल ६ ट्ठी

(आघे तुं जोयने जीवडा. ए देशी.)

धन धन ते दिन माहरो, जीहां कीधो धर्म ।
दान शीयळ तप भावना, टाळ्यां दुष्कृत कर्म ॥ धन० ॥१॥
शे त्रुं जा दि क तीर्थ नी, जे कीधी जात्र ।
जुगते जिनवर पूजीया, वळी पोष्यां पात्र ॥ धन० ॥२॥
पुस्तक ज्ञान लखावीयां, जिणहर जिनचैत्य ।
संघ चतुर्विध साचव्या, ए साते खेत्र ॥ धन० ॥३॥
पडिक्कमणां सुपरे कर्यां, अनुकंपा दान ।
साधु सूरि उवझायने, दीधां बहु मान ॥ धन० ॥४॥
धर्म काज अनुमोदिए, एम वारोवार ।
शिवगति आराधन तणो, ए सातमो अधिकार ॥ धन० ॥५॥
भाव भलो मन आणीए, चित्त आणी ठाम ।
समताभावे भाविए, ए आतमराम ॥ धन० ॥६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुख दुःख कारण जीवने, कोइ अवर न होय ।
कर्म आप जे आचर्यां, भोगवीए सोय ॥ धन० ॥७॥
समता विण जे अनुसरे प्राणी पुण्यनुं काम ।
छार ऊपर ते लींपणुं, झांखर चित्राम ॥ धन० ॥८॥
भाव भली परे भावीए, ए धर्मनो सार ।
शिवगति आराधन तणो, ए आठमो अधिकार ॥ धन० ॥९॥

ढाल ७ मां

(रैवतगिरि हुआ, प्रभुना त्रण कल्याण. ए देशी.)

हवे अवसर जाणी, करी संलेखण सार;
अणसण आदरिये, पच्चखी चारे आहार ।
ललुता सवि मूकी छांडी ममता अंग;
ए आतम खेले, समताज्ञानतरंग ॥१॥
गति चारे कीधा, आहार अनंत निशंक;
पण तृप्ति न पाम्यो, जीव लालचिओ रंक ।
दुल्हो ए वळी वळी, अणसणनो परिणाम;
एहथी पामीजे, शिवपद सुरपद ठाम ॥२॥
धन धना शालिभद्र, खंधो मेघकुमार;
अणसण आराधी, पाम्या भवनो पार ।
शिवमंदिर जाशे, करी एक अवतार;
आराधन केरो, ए नवमो अधिकार ॥३॥
दशमे अधिकारे, महामंत्र नवकार;
मनथी नवि मूको, शिवसुखफलसहकार ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एह जपतां जाये, दुर्गतिदोषविकार;
सुपरे ए समरो, चौदपुरवनो सार ॥४॥
जनमांतर जातां, जो पामे नवकार;
तो पातिक गाळी, पामे सुरअवतार ।
ए नवपद सरिखो, मंत्र न कोई सार;
इहभव ने परभवे, सुख संपत्ति दातार ॥५॥
ज्युं भील भीलडी, राजा राणी थाय;
नवपदमहिमाथी, राजसिंह महाराय ।
राणी रतनवती बेहु, पाम्यां छे सुरभोग;
एक भव पछी लेशे, शिववधू वर संजोग ॥६॥
श्रीमतीने ए वली, मंत्र फल्यो तत्काल;
फणिधर फीटीने, प्रगट थई फुलमाळ ।
शिवकुमरे जोगी, सोवनपुरिसो कीध;
एम एणे मंत्रे, काज घणांनां सिद्ध ॥७॥
ए दश अधिकारे, वीर जिणेसर भाख्यो;
आराधन केरो विधि, जेणे चित्त मांहि राख्यो ।
तेणे पाप पखाळी, भवभय दूरे नांख्यो;
जिनविनय करंतां, सुमति अमृतरस चाख्यो ॥८॥

ढाल ८ मी

(नमो भावे भावशुं ए देशी.)

सिद्धारथरायकुळतिलो ए, त्रिसला मात मल्हार तो ।
अवनितले तमे अवतर्या ए, करवा अम उपकार
जयो जिन वीरजी ए ॥१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मैं अपराध घणा कर्या ए, कहेतां न लहुं पार तो ।
तुम चरणे आव्या भणी ए, जो तारे तो तार जयो० ॥२॥
आश करीने आवीयो ए, तुम चरणे महाराज तो ।
आव्याने ऊवेखशो ए, तो केम रहेशे लाज जयो० ॥३॥
करम अलूजण आकरां ए, जन्म मरण जंजाल तो ।
हुं छुं एहथी ऊभगो ए, छोडव देव दयाल जयो० ॥४॥
आज मनोरथ मुज फळ्या ए, नाठां दुःखदंदोल तो ।
तूठो जिन चोवीसमो ए, प्रगट्या पुण्यकल्लोल जयो० ॥५॥
भवे भवे विनय तुमारडो ए, भाव भक्ति तुम पाय तो ।
देव दया करि दीजिए ए, बोधिबीज सुपसाय जयो० ॥६॥

कळश

इह तरण तारण सुगतिकारण, दुखनिवारण जग जयो ।
श्रीवीरजिनवर चरण थुणतां, अधिक मन उल्लट थयो ॥१॥
श्रीविजयदेवसुरिंदपटधर, तिरथ जंगम एणि जगे ।
तपगच्छपति श्रीविजयप्रभसूरि, सूरितेजे झगमगे ॥२॥
श्रीहीरविजयसूरिशिष्य वाचक, कीर्तिविजय सुरगुरुसमो ।
तस शिष्य वाचक विनयविजये, थुण्यो जिन चोवीसमो ॥३॥
सय सतर संवत ओगणत्रीशे, रही रांदेर चोमास ए ।
विजयदशमी विजयकारण, कियो गुणअभ्यास ए ॥४॥
नरभव आराधन सिद्धिसाधन, सुकृत लील विलास ए ।
निर्जराहेते स्तवन रचियुं, नामे पुन्यप्रकाश ए ॥५॥

पुन्यप्रकाशनुं स्तवन संपूर्ण ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीगौतमस्वामिनो रास ।

(भाषा)

वीरजिणेसरचरणकमलकमलाकयवासो,
पणमवि पभणिशुं सामिसाल गोयमगुरुरासो ।
मण तणु वयण एकंत करवि निसुणो भो भविया,
जिम निवसे तुम देहगेह गुणगणगहगहिया ॥१॥
जंबूदीव सिरिभरहखित्त खोणीतलमंडण,
मगध देस सेणिय नरेस रिउदलबलखंडण ।
धणवर गुब्बर गाम नाम जिहां गुणगणसज्जा,
विप्प वसे वसुभूइ तत्थ जसु पुहवी भज्जा ॥२॥
ताण पुत्त सिरि इंदभूइ भूवलय पसिद्धो,
चउदह विज्जा विविहरूव नारी रस विद्धो (लुद्धो) ।
विनय विवेक विचार सार गुणगणह मनोहर,
सात हाथ सुप्रमाण देह रूपे रंभावर ॥३॥
नयण वयण कर चरण जिणवि पंकज जळे पाडिय,
तेजे तारा चंद सूर आकाश भमाडिय ।
रूवे मयण अनंग करवि मेल्हिओ निरधाडिय,
धीरिम मेरु गंभीर सिंधु चंगमचयचाडिय ॥४॥
पेखवि निरुवम रूव जास जण जंपे किंचिय,
एकाकी कलि भीत इत्थ गुण मेहल्या संचिय ।
अहवा निश्चय पुव्वजम्म जिणवर इणे अंचिय,
रंभा पउमा गोरी गंग रति हा ! विधि वंचिय ॥५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवि बुध नवि गुरु कवि न कोइ जसु आगळ रहियो,
पंचसया गुणपात्र छात्र हींडे परवरियो ।
करे निरंतर यज्ञकर्म मिथ्यामति मोहिय,
इण छळ होशे चरण नाण दंसणह विसोहिय ॥६॥

(वस्तु छंद)

जंबूदीवह जंबूदीवह, भरहवासंमि,
खोणीतलमंडन मगधदेस सेणिय नरेसर,
वर गुब्बर गाम तिहां, विप्प वसे वसुभुइ सुंदर ।
तसु भज्जा पुहवि सयल, गुणगणरूवनिहाण ।
ताण पुत्त विज्जानिलओ, गोयम अतिहि सुजाण ॥७॥

(भाषा)

चरम जिणेसर केवलनाणी, चउविह संघ पइट्ठा जाणी ।
पावापुरी स्वामी संपत्तो, चउविह देवनिकाये जुत्तो ॥८॥
देव समवसरण तिहां कीजे, जिण दीठे मिथ्यामति खीजे ।
त्रिभुवनगुरु सिंहासण बइट्ठा, ततखिण मोह दिगंते पइट्ठा ॥९॥
क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा जिम दिन चोरा ।
देवदुंदुहि आकाशे वाजे, धर्म नरेसर आव्या गाजे ॥१०॥
कुसुम वृष्टि विरचे तिहां देवा, चोसठ इंद्र जसु मागे सेवा ।
चामर छत्र शिरोवरि सोहे, रूपहि जिणवर जग सहु मोहे ॥११॥
उवसमरसभरभरी वरसंता, जोजन वाणी वखाण करंता ।
जाणवि वर्धमान जिण पाया, सुर नर किन्नर आवे राया ॥१२॥
कांतिसमूहे झलझलकंता, गयण विमाणे रणरणकंता ।
पेखवि इंदभूइ मन चिंते, सुर आवे अम्ह यज्ञ होवंते ॥१३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तीर तरंडक जिम ते वहता, समवसरण पुहता गहगहता ।
तो अभिमाने गोयम जंपे, इणि अवसरे कोपे तणु कंपे ॥१४॥
मूढ लोक अजाणियुं बोले, सुर जाणंता इम कांइ डोले ।
मू आगळ को जाण भणीजे, मेरु अवर किम उपमा दीजे ॥१५॥

(वस्तु छंद)

वीर जिणवर वीर जिणवर, नाणसंपन्न,
पावापुरी सुरमहिय, पत्त नाह संसार तारण,
तहिं देवेहिं निम्मविय, समवसरण बहुसुखकारण ।
जिणवर जगउज्जोयकर, तेजे करि दिनकार ।
सिंहासणे सामिय ठव्यो, हुओ सुजयजयकार ॥१६॥

(भाषा)

तो चढियो घण मानगजे, इंदभूइ भूदेव तो,
हुंकारो करि संचरीयो, कवण सु जिणवर देव तो ।
जोजन भूमि समोसरण, पेखवी प्रथमारंभ तो,
दह दिसि देखे विबुधवधू, आवंती सुररंभ तो ॥१७॥
मणिमय तोरण दंड धजा, कोसीसे नव घाट तो,
वैरविवर्जित जंतुगण, प्रातिहारज आठ तो ।
सुरनर किन्नर असुरवर, इंद्र इंद्राणी राय तो,
चित्ते चमक्किय चिंतवे ए, सेवंता प्रभु पाय तो ॥१८॥
सहसकिरण सम वीरजिण, पेखवी रूप विसाळ तो,
एह असंभव संभवे ए, साचो ए इंद्रजाळ तो ।
तो बोलावे त्रिजगगुरु, इंदभूइ नामेण तो,
श्रीमुख संशय सामि सवे, फेडे वेदपएण तो ॥१९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मान म्हेली मद ठेली करी, भगते नामे सीस तो,
पंचसयासुं व्रत लीयो ए, गोयम पहेलो सीस तो ।
बंधव संजम सुणवि करी, अगनिभूइ आवेइ तो,
नाम लेइ आभास करे, ते पण प्रतिबोधेइ तो ॥२०॥

इणि अनुक्रमे गणहर रयण, थाप्या वीर अग्यार तो,
तो उपदेशे भुवनगुरु, संजमशुं व्रत बार तो ।
बिहुं उपवासे पारणुं ए, आपणपे विहरंत तो,
गोयम संजम जग सयल, जयजयकार करंत तो ॥२१॥

(वस्तु छंद)

इंदभूई इंदभूई, चढीय बहुमान,
हुंकारो करी संचरीयो, समवसरण पुहतो तुरंत,
अह संसा सामी सवे, चरम नाह फेडे फुरंत ।
बोधिबीज संजाय मने, गोयम भवह विरत्त ।
दिक्ख लेइ सिक्खा सहिय, गणहर पय संपत्त ॥२२॥

(भाषा)

आज हुओ सुविहाण, आज पचेलिम पुण्य भरो,
दीठा गोयमसामी, जो नियनयणे अमियभरो ।
सिरि गोयम गणहार, पंच सया मुनि परिवरिय,
भूमिय करीय विहार, भवियण जण पडिबोह करे ।
समवसरण मझार, जे जे संसा उपजे ए,
ते ते पर उपगार, कारण पूछे मुनिपवरो ॥२३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिहां जिहां दीजे दिक्ख, तिहां तिहां केवल उपजे ए,
आप कन्हे अणहुंत, गोयम दीजे दान इम ।
गुरु उपर गुरुभत्ति, सामिय गोयम उपनीय,
इण छळ केवळ नाण, राग ज राखे रंग भरे ॥२४॥
जो अष्टापद शैल, वंदे चढी चउवीस जिण,
आतमलब्धिवसेण चरमसरीरी सोइ मुनि ।
इअ देसण निसुणेवि, गोयम गणहर संचलियो,
तापस पनरसएण, तो मुनि दीठो आवतो ए ॥२५॥
तवसोसिअ निय अंग, अम्ह शक्ति नवि उपजे ए,
किम चढशे दृढकाय, गज जिम दीसे गाजतो ए ।
गिरुए एणे अभिमान, तापस जां मन चिंतवे ए,
तां मुनि चढियो वेग, आलंबवि दिनकरकिरण ॥२६॥
कंचण मणि निप्फन्न दंड, कलस धजवड सहिय,
पेखवि परमाणंद, जिणहर भरहेसरविहिय ।
निय निय काय प्रमाण, चउदिसि संठिय जिणह बिंब,
पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥२७॥
वयरसामिनो जीव, तिर्यग्जृंभक देव तिहां,
प्रतिबोधे पुंडरीक-कंडरीक अध्ययन भणी ।
वळता गोयमसामी, सवि तापस प्रतिबोध करे,
लेइ आपणे साथ, चाले जेम यूथाधिपति ॥२८॥
खीर खांड घृत आणी, अमिअवूठ अंगुठ ठवे,
गोयम एकण पात्र, करावे पारणुं सवे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचसया शुभ भाव, उज्ज्वळ भरियो खीर मिसे,
साचा गुरु संजोग, कवळ ते केवळ रूप हुआ ॥२९॥
पंचसया जिणनाह, समवसरण प्राकार त्रय,
पेखवि केवळनाण, उप्पन्नो उज्जोयकर ।
जाणे जिणवि पीयूष गाजंती घण मेघ जिम,
जिणवाणी निसुणेइ, नाणी हुआ पंच सया ॥३०॥

(वस्तु छंद)

इणे अनुक्रमे इणे अनुक्रमे, नाणसंपन्न,
पन्नरह सय परवरिय, हरिय दुरिय जिणनाह वंदइ,
जाणवि जगगुरु वयण, तिह नाण अप्पाण निंदइ ।
चरम जिणेसर इम भणइ, गोयम म करीस खेउ ।
छेही जइ आपण सही, होसुं तुल्ला बेउ ॥३१॥

(भाषा)

सामीओ ए वीरजिणंद, पूनिम चंद जिम उल्लसिअ,
विहरिओ ए भरहवासंमि, वरिस बहोंतेर संवसिअ ।
ठवतो ए कणय पउमेसु, पाय कमळ संघहि सहिअ,
आवीओ ए नयणाणंद, नयर पावापुरी सुरमहिय ॥३२॥
पेखियो ए गोयम सामी, देवशर्मा प्रतिबोध करे,
आपणो ए त्रिशलादेवी-नंदन पहोतो परमपए ।
वळतां ए देव आकास, पेखवि जाणीय जिण समे ए,
तो मुनि ए मन विखवाद, नादभेद जिम उपनो ए ॥३३॥
कुण समे ए सामिय देखी, आप कन्हें हुं टालिओ ए,
जाणतो ए तिहुअणनाह, लोकविवहार न पालिओ ए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अति भलुं ए कीधलुं सामी, जाणिउं केवळ मागशे ए,
चिंतविउं ए बाळक जिम, अहवा केडे लागशे ए ॥३४॥
हुं किम ए वीरजिणंद, भगते भोळो भोळव्यो ए,
आपणो ए अविहड नेह, नाह न संपे साचव्यो ए ।
साचो ए तुंही वीतराग, नेह न जेने लालिओ ए,
इण समे ए गोयम चित्त, राग वैरागे वाळिओ ए ॥३५॥
आवतुं ए जे उलट्ट, रहेतुं रागे साहिउं ए,
केवळुं ए नाण उप्पन्न, गोयम सहेजे उम्माहिओ ए ।
तिहुअण ए जय जयकार, केवळमहिमा सुर करे ए,
गणहर ए करिय वखाण, भवियण भव जिम निस्तरे ए ॥३६॥

(वस्तु छंद)

पढम गणहर पढम गणहर, वरस पचास,
गिहिवासे संवसिय, तीस वरिस संजम विभूसिय,
सिरि केवळनाण पुण, बार वरिस तिहुयण नमंसिअ ।
रायगिहि नयरीहिं ठविअ, बाणु वय वरिसाओ ।
सामी गोयम गुणनिलो, होशे शिवपुर ठाओ ॥३७॥

(भाषा)

जिम सहकारे कोयल टहुके, जिम कुसुमह वने परिमल महके,
जिम चंदन सुगंध निधि ।
जिम गंगाजळ लहेरे लहके, जिम कणयाचल तेजे झळके,
तिम गोयम सौभाग्यनिधि ॥३८॥
जिम मानससर निवसे हंसा, जिम सुरवरसिरि कणयवतंसा,
जिम महुयर राजीववने ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिम रयणायर रयणे विलसे, जिम अंबर तारागण विकस,
तिम गोयम गुणकेलिवने ॥३९॥
पूनिमनिसि जिम ससहर सोहे, सुरतरुमहिमा जिम जग मोहे,
पूरव दिसि जिम सहसकरो ।
पंचानन जिम गिरिवर राजे, नरवइघर जिम मयगल गाजे,
तिम जिनशासन मुनिपवरो ॥४०॥
जिम सुरतरुवर सोहे शाखा, जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा,
जिम वन केतकी महमहे ए ।
जिम भूमिपति भुयबल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके,
तिम गोयम लब्धे गहगहे ए ॥४१॥
चिंतामणि कर चढियो आज, सुरतरु सारे वंछित काज,
कामकुंभ सवि वश हुओ ए ।
कामगवी पूरे मन कामिय, अष्ट महासिद्धि आवे धामि य,
सामिय गोयम अणुसरो ए ॥४२॥
पणवक्खर पहेलो पभणीजे, मायाबीज श्रवण निसुणीजे,
श्रीमती शोभा संभवे ए ।
देवह धुरि अरिहंत नमीजे, विनयप्पह उवज्झाय थुणीजे,
इण मंत्रे गोयम नमो ए ॥४३॥
पुर पुर वसतां कांइ करीजे, देश देशांतर कांइ भमीजे,
कवण काज आयास करो ।
प्रह ऊठी गोयम समरीजे, काज समग्गह ततखण सीझे,
नव निधि विलसे तास घरे ॥४४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउदह सय बारोत्तर वरसे, गोयम गणहर केवळ दिवसे,
किउं कवित्त उपगार परो ।
आदिहि मंगल एह भणीजे, परम महोच्छव पहिलो लीजे,
ऋद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥४५॥
धन्य माता जिणे उदरे धरिया, धन्य पिता जिण कुल अवतरिया,
धन्य सहगुरु जिणे दिक्खिया ए ।
विनयवंत विद्याभंडार, जस गुण कोइ न लब्भे पार,
विद्यावंत गुरु वीनवे ए ॥४६॥
गौतमस्वामितणो ए रास, भणतां सुणतां लीलविलास,
सासय सुखनिधि संपजे ए ।
गौतम स्वामिनो रास भणीजे, चउविह संघ रलियायत कीजे,
ऋद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥४७॥

क्षेमवर्धनकृत मंगलपचीशी ।

चोपाई

सरसती माता सारज करो, अमृत वचन मुझ हियडे धरो ।
पंच परमेष्ठिने करो प्रणाम, वळि संभारो सहगुरुनाम ॥१॥
मंगलिक चार कह्यां जिनराय, तस समरण कीजे चित्त लाय ।
अतीत अनागत ने वर्तमान, बहोतेर जिननुं धरजो ध्यान ॥२॥
विहरमान विचरे जिन वीश, तस नामे सवि फळे जगीस ।
शाश्वता जिन समरो चार, सरवाळे छनुं निरधार ॥३॥
ए चउवीश जिनवर गुणग्राम, प्रभात समे नित्य लीजे नाम ।
हवे बीजो मंगलिक ए सार, पुंडरीक आदे गणधार ॥४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चरम तिर्थंकर ए प्रधान, श्रीगोयम वरलब्धिनिधान ।
सूत्र सिद्धांतमां संख्या एह, चौदसे बावन गुणगेह ॥५॥
त्रीजो मंगलिकमां निर्गंथ, धर्म तणा जे साधे पंथ ।
सत्तर भेद संयमना पाल, परिषह सहे थई उजमाल ॥६॥
ज्ञानसहित किरिया करे रंग, सत्तावीस गुण धरिया अंग ।
विषय कषाय तणो परिहार, दोषरहित लिए शुद्ध आहार ॥७॥
बेसी कनककमल विचाल, आगम वयण वदे कृपाल ।
जंगम तीरथ कहीए एह, पर उपगारी रविशशिमेह ॥८॥
एवा गुरु सेवो थई सावधान, तारण तरण जहाज समान ।
अढी द्वीपमां जे अणगार, थूलभद्र आदे तेह संभार ॥९॥
मंगलिक चोथो श्री जैनधर्म, तेथी क्षय थाये अष्ट कर्म ।
धर्मतणा जे चार प्रकार, दान शियळ तप भावना सार ॥१०॥
जैनधर्मनो महीमा घणो, संक्षेपे कहिस्युं ते भवि सुणो ।
धर्मथकी होय नवे निधान धर्मथकी लहीए बहुमान ॥११॥
धर्मथकी सज्जनसंयोग, धर्मथकी लहीए बहु भोग ।
धर्मथकी सवि आरति टले, धर्मथकी मनवंछित फले ॥१२॥
धर्मथकी लखमी अपार, धर्मथकी घर रुडी नार ।
धर्मथकी सघळे जय वरे, धर्मथकी चिंते ते करे ॥१३॥
धर्मथकी कीर्ति विस्तरे, धर्मथकी आठे भय हरे ।
धर्मथकी वैरी वश होय, धर्मथकी सुखिया सौ होय ॥१४॥
धर्मथकी सुरनर करे सेव, धर्मथकी मंगल नित्यमेव ।
धर्मथकी सेना चतुरंग, धर्मथकी मंदिर उत्तंग ॥१५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धर्मथकी मानव अवतार, धर्मथकी उत्तम कुल सार ।
धर्मथकी काया नीरोग, धर्मथकी सद्गुरुसंयोग ॥१६॥
धर्मथकी लहे लीलविलास, धर्मथकी शिवसुख होय खास ।
धर्मथकी तिर्थंकर होय, श्रीसिद्धांत संभाळी सोय ॥१७॥
दुलहो दशदृष्टांते सार, श्रावककुल पाम्यो अवतार ।
हवे अहिलेइ म हारिस भाय, करो धरम भवदुख मिट जाय ॥१८॥
मंगलिक चार तणां ए नाम, चित्तमां धरमां तीरथठाम ।
श्रीसिद्धाचलने गिरनार, आबू तारंगो मनोहार ॥१९॥
समेतशिखर वंदु जिन वीश, अष्टापद समरो निशदीश ।
पारकरमां गोडी जिनराय, वरण अढारे सेवे पाय ॥२०॥
वढीयारे शंखेश्वर धणी, तस कीर्ति छे जगमां घणी ।
ए आदी तीरथ विशाल, ते संभारो थई उजमाल ॥२१॥
शाश्वती अशाश्वती प्रतिमा जेह, स्वर्ग मृत्यु पाताले तेह ।
नानी मोटी प्रतिमा कही, भवियण भावे प्रणमो सही ॥२२॥
शासननायक वीरजिणंद, मुख सोहे पूनम जिम चंद ।
करजोडीने मागुं एह, मुजने कहीई म देस्यो छेह ॥२३॥
सिद्धि-वेद-नाग-शशिसहि(१८४८), संवत्सर ए संख्या कही ।
इंद्रभूतिकेवलदिन जाण, मंगलपचीशी थई परमाण ॥२४॥
भणसे गणसे जे प्रभात, मंगलमाला लहे सुखसात ।
हीरवर्धन सुगुरु पसाय, खेमवर्धन नित्य नित्य गुण गाय ॥२५॥

॥ इति मंगलपचीशी ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

તા.	સૂર્યોદય ક. મિ.	સૂર્યાસ્ત ક. મિ.	નવકારસી ક. મિ.	પોરિસી ક. મિ.	સાઢપોરિસી ક. મિ.	પુરિમઢ્ઢ ક. મિ.	અવઢ્ઢ ક. મિ.
૧	૭–૨૨	૧૮—૫	૮–૧૦	૧૦–૩	૧૧–૨૪	૧૨–૪૪	૧૫–૨૫
૨	૭–૨૨	૧૮—૫	૮–૧૦	૧૦–૩	૧૧–૨૪	૧૨–૪૪	૧૫–૨૫
૩	૭–૨૩	૧૮—૬	૮–૧૧	૧૦–૪	૧૧–૨૫	૧૨–૪૫	૧૫–૨૬
૪	૭–૨૩	૧૮—૭	૮–૧૧	૧૦–૪	૧૧–૨૫	૧૨–૪૫	૧૫–૨૬
૫	૭–૨૩	૧૮—૭	૮–૧૧	૧૦–૪	૧૧–૨૫	૧૨–૪૫	૧૫–૨૬
૬	૭–૨૩	૧૮—૮	૮–૧૧	૧૦–૫	૧૧–૨૬	૧૨–૪૬	૧૫–૨૭
૭	૭–૨૪	૧૮—૯	૮–૧૨	૧૦–૬	૧૧–૨૭	૧૨–૪૭	૧૫–૨૮
૮	૭–૨૪	૧૮—૯	૮–૧૨	૧૦–૬	૧૧–૨૭	૧૨–૪૭	૧૫–૨૮
૯	૭–૨૪	૧૮–૧૦	૮–૧૨	૧૦–૬	૧૧–૨૭	૧૨–૪૭	૧૫–૨૯
૧૦	૭–૨૪	૧૮–૧૧	૮–૧૨	૧૦–૬	૧૧–૨૭	૧૨–૪૮	૧૫–૩૦
૧૧	૭–૨૪	૧૮–૧૧	૮–૧૨	૧૦–૬	૧૧–૨૭	૧૨–૪૮	૧૫–૩૦
૧૨	૭–૨૫	૧૮–૧૨	૮–૧૩	૧૦–૭	૧૧–૨૮	૧૨–૪૯	૧૫–૩૧
૧૩	૭–૨૫	૧૮–૧૩	૮–૧૩	૧૦–૭	૧૧–૨૮	૧૨–૪૯	૧૫–૩૧
૧૪	૭–૨૫	૧૮–૧૩	૮–૧૩	૧૦–૭	૧૧–૨૮	૧૨–૪૯	૧૫–૩૧
૧૫	૭–૨૫	૧૮–૧૪	૮–૧૩	૧૦–૮	૧૧–૨૯	૧૨–૫૦	૧૫–૩૨
૧૬	૭–૨૫	૧૮–૧૫	૮–૧૩	૧૦–૮	૧૧–૩૦	૧૨–૫૦	૧૫–૩૩
૧૭	૭–૨૫	૧૮–૧૬	૮–૧૩	૧૦–૮	૧૧–૩૦	૧૨–૫૧	૧૫–૩૪
૧૮	૭–૨૪	૧૮–૧૭	૮–૧૨	૧૦–૮	૧૧–૩૦	૧૨–૫૧	૧૫–૩૪
૧૯	૭–૨૪	૧૮–૧૮	૮–૧૨	૧૦–૮	૧૧–૩૦	૧૨–૫૧	૧૫–૩૫
૨૦	૭–૨૪	૧૮–૧૮	૮–૧૨	૧૦–૮	૧૧–૩૦	૧૨–૫૧	૧૫–૩૬
૨૧	૭–૨૪	૧૮–૧૯	૮–૧૨	૧૦–૮	૧૧–૩૦	૧૨–૫૨	૧૫–૩૬
૨૨	૭–૨૪	૧૮–૧૯	૮–૧૨	૧૦–૮	૧૧–૩૦	૧૨–૫૨	૧૫–૩૬
૨૩	૭–૨૪	૧૮–૨૦	૮–૧૨	૧૦–૮	૧૧–૩૦	૧૨–૫૨	૧૫–૩૬
૨૪	૭–૨૪	૧૮–૨૧	૮–૧૨	૧૦–૯	૧૧–૩૧	૧૨–૫૩	૧૫–૩૭
૨૫	૭–૨૪	૧૮–૨૧	૮–૧૨	૧૦–૯	૧૧–૩૧	૧૨–૫૩	૧૫–૩૭
૨૬	૭–૨૩	૧૮–૨૨	૮–૧૧	૧૦–૮	૧૧–૩૧	૧૨–૫૩	૧૫–૩૮
૨૭	૭–૨૩	૧૮–૨૩	૮–૧૧	૧૦–૮	૧૧–૩૧	૧૨–૫૩	૧૫–૩૮
૨૮	૭–૨૩	૧૮–૨૩	૮–૧૧	૧૦–૮	૧૧–૩૧	૧૨–૫૩	૧૫–૩૮
૨૯	૭–૨૩	૧૮–૨૪	૮–૧૧	૧૦–૮	૧૧–૩૧	૧૨–૫૪	૧૫–૩૯
૩૦	૭–૨૨	૧૮–૨૫	૮–૧૦	૧૦–૮	૧૧–૩૧	૧૨–૫૪	૧૫–૪૦
૩૧	૭–૨૨	૧૮–૨૬	૮–૧૦	૧૦–૮	૧૧–૩૧	૧૨–૫૪	૧૫–૪૦

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

સૂર્યોદય સૂર્યાસ્ત નવકારસી પોરિસી સાઢપોરિસી પુરિમઢ્ઢ અવઢ્ઢ

તા.	ક. મિ.	ક. મિ.	ક. મિ.	ક. મિ.	ક. મિ.	ક. મિ.	ક. મિ.
૧	૭–૨૧	૧૮–૨૭	૮—૯	૧૦—૮	૧૧–૩૧	૧૨–૫૪	૧૫–૪૧
૨	૭–૨૧	૧૮–૨૭	૮—૯	૧૦—૮	૧૧–૩૧	૧૨–૫૪	૧૫–૪૧
૩	૭–૨૦	૧૮–૨૮	૮—૮	૧૦—૭	૧૧–૩૧	૧૨–૫૫	૧૫–૪૨
૪	૭–૨૦	૧૮–૨૮	૮—૮	૧૦—૭	૧૧–૩૧	૧૨–૫૫	૧૫-૪૨
૫	૭–૧૯	૧૮–૨૯	૮—૭	૧૦—૭	૧૧–૩૧	૧૨–૫૫	૧૫–૪૨
૬	૭–૧૯	૧૮–૨૯	૮—૭	૧૦—૭	૧૧–૩૧	૧૨–૫૫	૧૫–૪૨
૭	૭–૧૯	૧૮–૩૦	૮—૭	૧૦—૭	૧૧–૩૧	૧૨–૫૫	૧૫–૪૩
૮	૭–૧૮	૧૮–૩૧	૮—૬	૧૦—૭	૧૧–૩૧	૧૨–૫૬	૧૫–૪૩
૯	૭–૧૮	૧૮–૩૧	૮—૬	૧૦—૭	૧૧–૩૧	૧૨–૫૬	૧૫–૪૩
૧૦	૭–૧૭	૧૮–૩૧	૮—૫	૧૦—૬	૧૧–૩૧	૧૨–૫૬	૧૫–૪૪
૧૧	૭–૧૭	૧૮–૩૨	૮—૫	૧૦—૬	૧૧–૩૧	૧૨–૫૬	૧૫–૪૪
૧૨	૭–૧૬	૧૮–૩૩	૮—૪	૧૦—૫	૧૧–૩૧	૧૨–૫૫	૧૫–૪૫
૧૩	૭–૧૫	૧૮–૩૩	૮—૩	૧૦—૫	૧૧–૩૦	૧૨–૫૫	૧૫–૪૫
૧૪	૭–૧૪	૧૮–૩૪	૮—૨	૧૦—૫	૧૧–૩૦	૧૨–૫૫	૧૫–૪૫
૧૫	૭–૧૪	૧૮–૩૫	૮—૨	૧૦—૫	૧૧–૩૦	૧૨–૫૫	૧૫–૪૫
૧૬	૭–૧૩	૧૮–૩૬	૮—૧	૧૦—૪	૧૧–૩૦	૧૨–૫૫	૧૫–૪૬
૧૭	૭–૧૩	૧૮–૩૬	૮—૧	૧૦—૪	૧૧–૩૦	૧૨–૫૪	૧૫–૪૬
૧૮	૭–૧૨	૧૮–૩૬	૮—૦	૧૦—૩	૧૧–૨૯	૧૨–૫૪	૧૫–૪૬
૧૯	૭–૧૧	૧૮–૩૭	૭–૫૯	૧૦—૩	૧૧–૨૯	૧૨–૫૪	૧૫–૪૬
૨૦	૭–૧૧	૧૮–૩૭	૭–૫૯	૧૦—૩	૧૧–૨૯	૧૨–૫૪	૧૫–૪૬
૨૧	૭–૧૦	૧૮–૩૮	૭–૫૮	૧૦—૨	૧૧–૨૮	૧૨–૫૪	૧૫–૪૬
૨૨	૭—૯	૧૮–૩૮	૭–૫૭	૧૦—૨	૧૧–૨૮	૧૨–૫૪	૧૫–૪૮
૨૩	૭—૮	૧૮–૩૯	૭–૫૬	૧૦—૧	૧૧–૨૮	૧૨–૫૪	૧૫–૪૮
૨૪	૭—૭	૧૮–૪૦	૭–૫૫	૧૦—૧	૧૧–૨૮	૧૨–૫૪	૧૫–૪૮
૨૫	૭—૭	૧૮–૪૦	૭–૫૫	૧૦—૧	૧૧–૨૮	૧૨–૫૪	૧૫–૪૮
૨૬	૭—૬	૧૮–૪૧	૭–૫૪	૧૦—૦	૧૧–૨૭	૧૨–૫૪	૧૫–૪૮
૨૭	૭—૫	૧૮–૪૧	૭–૫૩	૯–૫૯	૧૧–૨૭	૧૨–૫૪	૧૫–૪૮
૨૮	૭—૪	૧૮–૪૧	૭–૫૨	૯–૫૯	૧૧–૨૬	૧૨–૫૩	૧૫–૪૮
૨૯	૭—૪	૧૮–૪૧	૭–૫૨	૯–૫૯	૧૧–૨૬	૧૨–૫૩	૧૫–૪૮

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

તા.	સૂર્યોદય ક. મિ.	સૂર્યાસ્ત ક. મિ.	નવકારસી ક. મિ.	પોરિસી ક. મિ.	સાઢપોરિસી ક. મિ.	પુરિમઢ્ઢ ક. મિ.	અવઢ્ઢ ક. મિ.
૧	૭–૪	૧૮–૪૨	૭–૫૨	૯–૫૯	૧૧–૨૬	૧૨–૫૩	૧૫–૪૮
૨	૭–૩	૧૮–૪૨	૭–૫૧	૯–૫૮	૧૧–૨૬	૧૨–૫૩	૧૫–૪૮
૩	૭–૨	૧૮–૪૩	૭–૫૦	૯–૫૮	૧૧–૨૫	૧૨–૫૩	૧૫–૪૯
૪	૭–૧	૧૮–૪૪	૭–૪૯	૯–૫૭	૧૧–૨૫	૧૨–૫૩	૧૫–૪૯
૫	૭–૦	૧૮–૪૪	૭–૪૮	૯–૫૬	૧૧–૨૪	૧૨–૫૨	૧૫–૪૯
૬	૬–૫૯	૧૮–૪૫	૭–૪૭	૯–૫૫	૧૧–૨૪	૧૨–૫૨	૧૫–૪૯
૭	૬–૫૮	૧૮–૪૫	૭–૪૬	૯–૫૫	૧૧–૨૩	૧૨–૫૨	૧૫–૪૯
૮	૬–૫૭	૧૮–૪૫	૭–૪૫	૯–૫૪	૧૧–૨૩	૧૨–૫૨	૧૫–૪૯
૯	૬–૫૬	૧૮–૪૫	૭–૪૪	૯–૫૪	૧૧–૨૩	૧૨–૫૨	૧૫–૪૯
૧૦	૬–૫૬	૧૮–૪૬	૭–૪૪	૯–૫૪	૧૧–૨૩	૧૨–૫૨	૧૫–૪૯
૧૧	૬–૫૫	૧૮–૪૬	૭–૪૩	૯–૫૩	૧૧–૨૨	૧૨–૫૧	૧૫–૪૯
૧૨	૬–૫૪	૧૮–૪૭	૭–૪૨	૯–૫૩	૧૧–૨૨	૧૨–૫૧	૧૫–૪૯
૧૩	૬–૫૩	૧૮–૪૭	૭–૪૧	૯–૫૨	૧૧–૨૧	૧૨–૫૧	૧૫–૪૯
૧૪	૬–૫૨	૧૮–૪૭	૭–૪૦	૯–૫૧	૧૧–૨૧	૧૨–૫૧	૧૫–૪૯
૧૫	૬–૫૧	૧૮–૪૮	૭–૩૯	૯–૫૧	૧૧–૨૧	૧૨–૫૦	૧૫–૪૯
૧૬	૬–૫૦	૧૮–૪૮	૭–૩૮	૯–૫૦	૧૧–૨૦	૧૨–૫૦	૧૫–૪૯
૧૭	૬–૪૯	૧૮–૪૯	૭–૩૭	૯–૪૯	૧૧–૧૯	૧૨–૪૯	૧૫–૪૯
૧૮	૬–૪૮	૧૮–૪૯	૭–૩૬	૯–૪૯	૧૧–૧૯	૧૨–૪૯	૧૫–૪૯
૧૯	૬–૪૭	૧૮–૫૦	૭–૩૫	૯–૪૮	૧૧–૧૯	૧૨–૪૯	૧૫–૪૯
૨૦	૬–૪૬	૧૮–૫૦	૭–૩૪	૯–૪૭	૧૧–૧૮	૧૨–૪૯	૧૫–૪૯
૨૧	૬–૪૫	૧૮–૫૦	૭–૩૩	૯–૪૭	૧૧–૧૮	૧૨–૪૮	૧૫–૪૯
૨૨	૬–૪૪	૧૮–૫૧	૭–૩૨	૯–૪૬	૧૧–૧૭	૧૨–૪૮	૧૫–૪૯
૨૩	૬–૪૩	૧૮–૫૧	૭–૩૧	૯–૪૫	૧૧–૧૬	૧૨–૪૭	૧૫–૪૯
૨૪	૬–૪૨	૧૮–૫૧	૭–૩૦	૯–૪૫	૧૧–૧૬	૧૨–૪૭	૧૫–૪૯
૨૫	૬–૪૧	૧૮–૫૧	૭–૨૯	૯–૪૪	૧૧–૧૬	૧૨–૪૭	૧૫–૪૯
૨૬	૬–૪૦	૧૮–૫૧	૭–૨૮	૯–૪૩	૧૧–૧૫	૧૨–૪૭	૧૫–૪૯
૨૭	૬–૩૯	૧૮–૫૨	૭–૨૭	૯–૪૩	૧૧–૧૫	૧૨–૪૬	૧૫–૪૯
૨૮	૬–૩૮	૧૮–૫૨	૭–૨૬	૯–૪૨	૧૧–૧૪	૧૨–૪૬	૧૫–૪૯
૨૯	૬–૩૭	૧૮–૫૨	૭–૨૫	૯–૪૧	૧૧–૧૩	૧૨–૪૫	૧૫–૪૯
૩૦	૬–૩૬	૧૮–૫૩	૭–૨૪	૯–૪૧	૧૧–૧૩	૧૨–૪૫	૧૫–૪૯
૩૧	૬–૩૫	૧૮–૫૩	૭–૨૩	૯–૪૦	૧૧–૧૩	૧૨–૪૫	૧૫–૪૯

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

સૂર્યોદય સૂર્યાસ્ત નવકારસી પોરિસી સાઢપોરિસી પુરિમઢ્ઢ અવઢ્ઢ

તા.	ક. મિ.	ક. મિ.	ક. મિ.	ક. મિ.	ક. મિ.	ક. મિ.	ક. મિ.
૧	૬–૩૪	૧૮–૫૪	૭–૨૨	૯–૩૯	૧૧–૧૨	૧૨–૪૪	૧૫–૪૯
૨	૬–૩૩	૧૮–૫૪	૭–૨૧	૯–૩૯	૧૧–૧૨	૧૨–૪૪	૧૫–૪૯
૩	૬–૩૨	૧૮–૫૫	૭–૨૦	૯–૩૮	૧૧–૧૧	૧૨–૪૪	૧૫–૫૦
૪	૬–૩૧	૧૮–૫૫	૭–૧૯	૯–૩૭	૧૧–૧૦	૧૨–૪૪	૧૫–૫૦
૫	૬–૩૦	૧૮–૫૬	૭–૧૮	૯–૩૭	૧૧–૧૦	૧૨–૪૩	૧૫–૫૦
૬	૬–૨૯	૧૮–૫૬	૭–૧૭	૯–૩૬	૧૧–૧૦	૧૨–૪૩	૧૫–૫૦
૭	૬–૨૮	૧૮–૫૭	૭–૧૬	૯–૩૬	૧૧–૧૦	૧૨–૪૩	૧૫–૫૦
૮	૬–૨૭	૧૮–૫૭	૭–૧૫	૯–૩૫	૧૧–૯	૧૨–૪૩	૧૫–૫૦
૯	૬–૨૭	૧૮–૫૭	૭–૧૫	૯–૩૫	૧૧–૯	૧૨–૪૩	૧૫–૫૦
૧૦	૬–૨૬	૧૮–૫૭	૭–૧૪	૯–૩૪	૧૧–૮	૧૨–૪૨	૧૫–૫૦
૧૧	૬–૨૫	૧૮–૫૮	૭–૧૩	૯–૩૪	૧૧–૮	૧૨–૪૨	૧૫–૫૦
૧૨	૬–૨૪	૧૮–૫૮	૭–૧૨	૯–૩૩	૧૧–૮	૧૨–૪૨	૧૫–૫૦
૧૩	૬–૨૩	૧૮–૫૮	૭–૧૧	૯–૩૨	૧૧–૭	૧૨–૪૧	૧૫–૫૦
૧૪	૬–૨૨	૧૮–૫૯	૭–૧૦	૯–૩૨	૧૧–૭	૧૨–૪૧	૧૫–૫૦
૧૫	૬–૨૧	૧૯–૦	૭–૯	૯–૩૧	૧૧–૬	૧૨–૪૧	૧૫–૫૦
૧૬	૬–૨૦	૧૯–૦	૭–૮	૯–૩૦	૧૧–૫	૧૨–૪૦	૧૫–૫૦
૧૭	૬–૧૯	૧૯–૧	૭–૭	૯–૩૦	૧૧–૫	૧૨–૪૦	૧૫–૫૧
૧૮	૬–૧૮	૧૯–૧	૭–૬	૯–૨૯	૧૧–૫	૧૨–૪૦	૧૫–૫૧
૧૯	૬–૧૮	૧૯–૧	૭–૬	૯–૨૯	૧૧–૫	૧૨–૪૦	૧૫–૫૧
૨૦	૬–૧૭	૧૯–૨	૭–૫	૯–૨૯	૧૧–૫	૧૨–૪૦	૧૫–૫૧
૨૧	૬–૧૬	૧૯–૨	૭–૪	૯–૨૮	૧૧–૪	૧૨–૪૦	૧૫–૫૧
૨૨	૬–૧૫	૧૯–૨	૭–૩	૯–૨૭	૧૧–૩	૧૨–૩૯	૧૫–૫૧
૨૩	૬–૧૫	૧૯–૩	૭–૩	૯–૨૭	૧૧–૩	૧૨–૩૯	૧૫–૫૧
૨૪	૬–૧૪	૧૯–૪	૭–૨	૯–૨૭	૧૧–૩	૧૨–૩૯	૧૫–૫૧
૨૫	૬–૧૩	૧૯–૪	૭–૧	૯–૨૬	૧૧–૩	૧૨–૩૯	૧૫–૫૧
૨૬	૬–૧૨	૧૯–૪	૭–૦	૯–૨૫	૧૧–૨	૧૨–૩૮	૧૫–૫૧
૨૭	૬–૧૧	૧૯–૫	૬–૫૯	૯–૨૫	૧૧–૨	૧૨–૩૮	૧૫–૫૧
૨૮	૬–૧૦	૧૯–૫	૬–૫૮	૯–૨૪	૧૧–૧	૧૨–૩૮	૧૫–૫૧
૨૯	૬–૯	૧૯–૫	૬–૫૭	૯–૨૩	૧૧–૦	૧૨–૩૭	૧૫–૫૧
૩૦	૬–૯	૧૯–૬	૬–૫૭	૯–૨૩	૧૧–૦	૧૨–૩૭	૧૫–૫૨

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

તા.	સૂર્યોદય ક. મિ.	સૂર્યાસ્ત ક. મિ.	નવકારસી ક. મિ.	પોરિસી ક. મિ.	સાઢપોરિસી ક. મિ.	પુરિમઢ્ઢ ક. મિ.	અવઢ્ઢ ક. મિ.
૧	૬–૮	૧૬–૬	૬–૫૬	૯–૨૩	૧૧–૦	૧૨–૩૭	૧૫–૫૨
૨	૬–૮	૧૬–૬	૬–૫૬	૯–૨૩	૧૧–૦	૧૨–૩૭	૧૫–૫૨
૩	૬–૭	૧૬–૭	૬–૫૫	૯–૨૨	૧૧–૦	૧૨–૩૭	૧૫–૫૨
૪	૬–૭	૧૬–૭	૬–૫૫	૯–૨૨	૧૧–૦	૧૨–૩૭	૧૫–૫૨
૫	૬–૬	૧૬–૮	૬–૫૪	૯–૨૨	૧૧–૦	૧૨–૩૭	૧૫–૫૩
૬	૬–૫	૧૬–૮	૬–૫૩	૯–૨૧	૧૦–૫૯	૧૨–૩૭	૧૫–૫૩
૭	૬–૫	૧૬–૯	૬–૫૩	૯–૨૧	૧૦–૫૯	૧૨–૩૭	૧૫–૫૩
૮	૬–૪	૧૬–૧૦	૬–૫૨	૯–૨૧	૧૦–૫૯	૧૨–૩૭	૧૫–૫૪
૯	૬–૩	૧૬–૧૦	૬–૫૧	૯–૨૦	૧૦–૫૯	૧૨–૩૭	૧૫–૫૪
૧૦	૬–૨	૧૬–૧૧	૬–૫૦	૯–૧૯	૧૦–૫૮	૧૨–૩૭	૧૫–૫૪
૧૧	૬–૨	૧૬–૧૧	૬–૫૦	૯–૧૯	૧૦–૫૮	૧૨–૩૭	૧૫–૫૪
૧૨	૬–૧	૧૬–૧૧	૬–૪૯	૯–૧૯	૧૦–૫૮	૧૨–૩૭	૧૫–૫૪
૧૩	૬–૧	૧૬–૧૨	૬–૪૯	૯–૧૯	૧૦–૫૮	૧૨–૩૭	૧૫–૫૫
૧૪	૬–૧	૧૬–૧૨	૬–૪૯	૯–૧૮	૧૦–૫૮	૧૨–૩૭	૧૫–૫૫
૧૫	૬–૦	૧૬–૧૨	૬–૪૮	૯–૧૮	૧૦–૫૮	૧૨–૩૭	૧૫–૫૫
૧૬	૬–૦	૧૬–૧૩	૬–૪૮	૯–૧૮	૧૦–૫૮	૧૨–૩૭	૧૫–૫૫
૧૭	૫–૫૯	૧૬–૧૩	૬–૪૭	૯–૧૮	૧૦–૫૮	૧૨–૩૭	૧૫–૫૫
૧૮	૫–૫૯	૧૬–૧૪	૬–૪૭	૯–૧૮	૧૦–૫૮	૧૨–૩૭	૧૫–૫૫
૧૯	૫–૫૯	૧૬–૧૪	૬–૪૭	૯–૧૮	૧૦–૫૮	૧૨–૩૭	૧૫–૫૬
૨૦	૫–૫૮	૧૬–૧૫	૬–૪૬	૯–૧૮	૧૦–૫૮	૧૨–૩૭	૧૫–૫૬
૨૧	૫–૫૮	૧૬–૧૬	૬–૪૬	૯–૧૮	૧૦–૫૮	૧૨–૩૭	૧૫–૫૬
૨૨	૫–૫૭	૧૬–૧૬	૬–૪૫	૯–૧૭	૧૦–૫૮	૧૨–૩૭	૧૫–૫૬
૨૩	૫–૫૭	૧૬–૧૭	૬–૪૫	૯–૧૭	૧૦–૫૮	૧૨–૩૭	૧૫–૫૭
૨૪	૫–૫૬	૧૬–૧૭	૬–૪૪	૯–૧૭	૧૦–૫૮	૧૨–૩૭	૧૫–૫૭
૨૫	૫–૫૬	૧૬–૧૭	૬–૪૪	૯–૧૭	૧૦–૫૭	૧૨–૩૭	૧૫–૫૭
૨૬	૫–૫૬	૧૬–૧૮	૬–૪૪	૯–૧૭	૧૦–૫૭	૧૨–૩૭	૧૫–૫૮
૨૭	૫–૫૬	૧૬–૧૮	૬–૪૪	૯–૧૭	૧૦–૫૭	૧૨–૩૭	૧૫–૫૮
૨૮	૫–૫૫	૧૬–૧૯	૬–૪૩	૯–૧૭	૧૦–૫૭	૧૨–૩૭	૧૫–૫૮
૨૯	૫–૫૫	૧૬–૧૯	૬–૪૩	૯–૧૭	૧૦–૫૭	૧૨–૩૭	૧૫–૫૮
૩૦	૫–૫૫	૧૬–૨૦	૬–૪૩	૯–૧૭	૧૦–૫૮	૧૨–૩૮	૧૫–૫૯
૩૧	૫–૫૫	૧૬–૨૦	૬–૪૩	૯–૧૭	૧૦–૫૮	૧૨–૩૮	૧૫–૫૯

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

તા.	સૂર્યોદય ક. મિ.	સૂર્યાસ્ત ક. મિ.	નવકારસી ક. મિ.	પોરિસી ક. મિ.	સાઢપોરિસી ક. મિ.	પરિમઢ્ઢ ક. મિ.	અવઢ્ઢ ક. મિ.
૧	૫—૫૫	૧૯—૨૦	૬—૪૩	૯—૧૭	૧૦—૫૮	૧૨—૩૮	૧૫—૫૯
૨	૫—૫૫	૧૯—૨૧	૬—૪૩	૯—૧૭	૧૦—૫૮	૧૨—૩૮	૧૬—૦
૩	૫—૫૫	૧૯—૨૧	૬—૪૩	૯—૧૭	૧૦—૫૮	૧૨—૩૮	૧૬—૦
૪	૫—૫૫	૧૯—૨૧	૬—૪૩	૯—૧૭	૧૦—૫૮	૧૨—૩૮	૧૬—૦
૫	૫—૫૪	૧૯—૨૨	૬—૪૨	૯—૧૭	૧૦—૫૮	૧૨—૩૯	૧૬—૧
૬	૫—૫૪	૧૯—૨૨	૬—૪૨	૯—૧૭	૧૦—૫૮	૧૨—૩૯	૧૬—૧
૭	૫—૫૪	૧૯—૨૩	૬—૪૨	૯—૧૭	૧૦—૫૯	૧૨—૪૦	૧૬—૨
૮	૫—૫૪	૧૯—૨૩	૬—૪૨	૯—૧૭	૧૦—૫૯	૧૨—૪૦	૧૬—૨
૯	૫—૫૪	૧૯—૨૪	૬—૪૨	૯—૧૭	૧૦—૫૯	૧૨—૪૦	૧૬—૨
૧૦	૫—૫૪	૧૯—૨૫	૬—૪૨	૯—૧૭	૧૦—૫૯	૧૨—૪૦	૧૬—૨
૧૧	૫—૫૪	૧૯—૨૫	૬—૪૨	૯—૧૭	૧૦—૫૯	૧૨—૪૦	૧૬—૨
૧૨	૫—૫૪	૧૯—૨૫	૬—૪૨	૯—૧૭	૧૦—૫૯	૧૨—૪૦	૧૬—૨
૧૩	૫—૫૪	૧૯—૨૬	૬—૪૨	૯—૧૭	૧૦—૫૯	૧૨—૪૦	૧૬—૩
૧૪	૫—૫૪	૧૯—૨૬	૬—૪૨	૯—૧૭	૧૦—૫૯	૧૨—૪૦	૧૬—૩
૧૫	૫—૫૪	૧૯—૨૬	૬—૪૨	૯—૧૭	૧૦—૫૯	૧૨—૪૦	૧૬—૩
૧૬	૫—૫૪	૧૯—૨૬	૬—૪૨	૯—૧૭	૧૦—૫૯	૧૨—૪૦	૧૬—૩
૧૭	૫—૫૪	૧૯—૨૭	૬—૪૨	૯—૧૮	૧૧—૦	૧૨—૪૧	૧૬—૪
૧૮	૫—૫૪	૧૯—૨૭	૬—૪૨	૯—૧૮	૧૧—૦	૧૨—૪૧	૧૬—૪
૧૯	૫—૫૫	૧૯—૨૭	૬—૪૩	૯—૧૮	૧૧—૦	૧૨—૪૧	૧૬—૪
૨૦	૫—૫૫	૧૯—૨૭	૬—૪૩	૯—૧૮	૧૧—૦	૧૨—૪૧	૧૬—૪
૨૧	૫—૫૫	૧૯—૨૮	૬—૪૩	૯—૧૯	૧૧—૧	૧૨—૪૨	૧૬—૫
૨૨	૫—૫૫	૧૯—૨૮	૬—૪૩	૯—૧૯	૧૧—૧	૧૨—૪૨	૧૬—૫
૨૩	૫—૫૬	૧૯—૨૮	૬—૪૪	૯—૧૯	૧૧—૧	૧૨—૪૨	૧૬—૫
૨૪	૫—૫૬	૧૯—૨૮	૬—૪૪	૯—૧૯	૧૧—૧	૧૨—૪૨	૧૬—૫
૨૫	૫—૫૬	૧૯—૨૮	૬—૪૪	૯—૧૯	૧૧—૧	૧૨—૪૨	૧૬—૫
૨૬	૫—૫૬	૧૯—૨૯	૬—૪૪	૯—૨૦	૧૧—૧	૧૨—૪૩	૧૬—૬
૨૭	૫—૫૭	૧૯—૨૯	૬—૪૫	૯—૨૦	૧૧—૧	૧૨—૪૩	૧૬—૬
૨૮	૫—૫૭	૧૯—૨૯	૬—૪૫	૯—૨૦	૧૧—૧	૧૨—૪૩	૧૬—૬
૨૯	૫—૫૭	૧૯—૨૯	૬—૪૫	૯—૨૦	૧૧—૧	૧૨ ૪૩	૧૬—૬
૩૦	૫—૫૭	૧૯—૨૯	૬—૪૫	૯—૨૦	૧૧—૧	૧૨—૪૩	૧૬—૬

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

તા.	સૂર્યોદય ક. મિ.	સૂર્યાસ્ત ક. મિ.	નવકારસી ક. મિ.	પોરિસી ક. મિ.	સાઢપોરિસી ક. મિ.	પુરિમઙ્ ક. મિ.	અવઢ્ઢ ક. મિ.
૧	૫–૫૮	૧૯–૨૯	૬—૪૬	૯ - ૨૧	૧૧—૨	૧૨—૪૩	૧૬–૬
૨	૫–૫૮	૧૯–૨૯	૬—૪૬	૯—૨૧	૧૧—૩	૧૨—૪૪	૧૬–૭
૩	૫–૫૮	૧૯–૨૯	૬—૪૬	૯—૨૧	૧૧—૩	૧૨—૪૪	૧૬–૭
૪	૫–૫૯	૧૯–૨૯	૬—૪૭	૯—૨૨	૧૧—૩	૧૨—૪૪	૧૬–૭
૫	૫–૫૯	૧૯–૨૯	૬—૪૭	૯—૨૨	૧૧—૩	૧૨—૪૪	૧૬–૭
૬	૫–૫૯	૧૯–૨૯	૬—૪૭	૯—૨૨	૧૧—૩	૧૨—૪૪	૧૬–૭
૭	૬–૦	૧૯–૨૯	૬—૪૮	૯—૨૩	૧૧—૪	૧૨—૪૫	૧૬–૭
૮	૬–૧	૧૯–૨૮	૬—૪૯	૯—૨૩	૧૧—૪	૧૨—૪૫	૧૬–૭
૯	૬–૧	૧૯–૨૮	૬—૪૯	૯ — ૨૩	૧૧ — ૪	૧૨—૪૫	૧૬–૭
૧૦	૬–૨	૧૯–૨૮	૬—૫૦	૯—૨૪	૧૧—૫	૧૨ – ૪૫	૧૬–૭
૧૧	૬–૨	૧૯–૨૮	૬—૫૦	૯ – ૨૪	૧૧—૫	૧૨ — ૪૫	૧૬–૭
૧૨	૬–૨	૧૯–૨૮	૬—૫૦	૯—૨૪	૧૧ — ૫	૧૨ – ૪૫	૧૬–૭
૧૩	૬–૩	૧૯–૨૮	૬ — ૫૧	૯—૨૫	૧૧ — ૬	૧૨—૪૬	૧૬–૭
૧૪	૬–૩	૧૯–૨૮	૬—૫૧	૯—૨૫	૧૧ — ૬	૧૨—૪૬	૧૬–૭
૧૫	૬–૪	૧૯–૨૮	૬—૫૨	૯—૨૫	૧૧ - ૬	૧૨ — ૪૬	૧૬–૭
૧૬	૬–૪	૧૯–૨૭	૬—૫૨	૯—૨૫	૧૧ - ૬	૧૨—૪૬	૧૬–૭
૧૭	૬–૪	૧૯–૨૭	૬—૫૨	૯—૨૫	૧૧—૬	૧૨—૪૬	૧૬-૭
૧૮	૬–૫	૧૯–૨૭	૬ — ૫૩	૯ — ૨૬	૧૧—૬	૧૨—૪૬	૧૬–૭
૧૯	૬–૫	૧૯–૨૭	૬—૫૩	૯—૨૬	૧૧—૬	૧૨—૪૬	૧૬–૭
૨૦	૬–૫	૧૯–૨૭	૬—૫૩	૯—૨૬	૧૧—૬	૧૨—૪૬	૧૬–૭
૨૧	૬–૬	૧૯–૨૬	૬—૫૪	૯ — ૨૬	૧૧—૬	૧૨ — ૪૬	૧૬–૬
૨૨	૬–૬	૧૯–૨૬	૬—૫૪	૯—૨૬	૧૧—૬	૧૨ — ૪૬	૧૬–૬
૨૩	૬–૭	૧૯–૨૫	૬—૫૫	૯—૨૭	૧૧—૭	૧૨—૪૬	૧૬–૬
૨૪	૬–૭	૧૯–૨૪	૬—૫૫	૯—૨૭	૧૧—૭	૧૨ — ૪૬	૧૬–૫
૨૫	૬–૮	૧૦–૨૪	૬—૫૬	૯—૨૭	૧૧—૭	૧૨—૪૬	૧૬–૫
૨૬	૬–૯	૧૯–૨૪	૬—૫૭	૯—૨૮	૧૧—૮	૧૨—૪૬	૧૬–૫
૨૭	૬–૯	૧૯–૨૩	૬—૫૭	૯—૨૮	૧૧—૮	૧૨—૪૬	૧૬–૫
૨૮	૬–૯	૧૯–૨૩	૬—૫૭	૯—૨૮	૧૧—૮	૧૨—૪૬	૧૬–૫
૨૯	૬–૧૦	૧૯–૨૩	૬—૫૮	૯—૨૮	૧૧—૮	૧૨—૪૬	૧૬–૫
૩૦	૬–૧૦	૧૯–૨૨	૬—૫૮	૯—૨૮	૧૧—૮	૧૨—૪૬	૧૬–૪
૩૧	૬–૧૦	૧૯–૨૨	૬—૫૮	૯—૨૮	૧૧—૮	૧૨—૪૬	૧૬–૪

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

તા.	સૂર્યોદય	સૂર્યાસ્ત	નવકારસી	પોરિસી	સાઢપોરિસી	પુરિમઢ્ઢ	અવઢ્ઢ
	ક. મિ.	ક. મિ.	ક. મિ.	ક. મિ.	ક. મિ.	ક. મિ.	ક. મિ.
૧	૬—૧૧	૧૯—૨૧	૬--૫૯	૯-૨૯	૧૧-૮	૧૨-૪૬	૧૬-૪
૨	૬—૧૧	૧૯—૨૧	૬--૫૯	૯-૨૯	૧૧-૮	૧૨-૪૬	૧૬-૪
૩	૬—૧૨	૧૯—૨૦	૭--૦	૯-૨૯	૧૧-૮	૧૨-૪૬	૧૬-૩
૪	૬—૧૨	૧૯—૨૦	૭--૦	૯-૨૯	૧૧-૮	૧૨-૪૬	૧૬-૩
૫	૬—૧૩	૧૯—૧૯	૭--૧	૯-૩૦	૧૧-૮	૧૨-૪૬	૧૬-૩
૬	૬—૧૩	૧૯ ૧૮	૭--૧	૯-૩૦	૧૧-૮	૧૨-૪૬	૧૬-૨
૭	૬—૧૪	૧૯—૧૭	૭--૨	૯ ૩૦	૧૧-૮	૧૨-૪૬	૧૬-૨
૮	૬—૧૪	૧૯—૧૭	૭—૨	૯-૩૦	૧૧-૮	૧૨-૪૬	૧૬-૨
૯	૬—૧૫	૧૯—૧૬	૭—૩	૯-૩૧	૧૧-૮	૧૨-૪૬	૧૬-૧
૧૦	૬—૧૫	૧૯—૧૫	૭—૩	૯-૩૧	૧૧-૮	૧૨-૪૫	૧૬-૦
૧૧	૬—૧૫	૧૯—૧૫	૭—૩	૯-૩૧	૧૧-૮	૧૨-૪૫	૧૬-૦
૧૨	૬—૧૬	૧૯—૧૪	૭—૪	૯-૩૧	૧૧-૮	૧૨-૪૫	૧૬-૦
૧૩	૬—૧૬	૧૯—૧૩	૭—૪	૯-૩૧	૧૧-૮	૧૨-૪૫	૧૫-૫૯
૧૪	૬—૧૬	૧૯—૧૩	૭—૪	૯-૩૧	૧૧-૮	૧૨-૪૫	૧૫-૫૯
૧૫	૬—૧૭	૧૯—૧૨	૭—૫	૯-૩૧	૧૧-૮	૧૨-૪૫	૧૫-૫૯
૧૬	૬—૧૭	૧૯—૧૧	૭—૫	૯-૩૧	૧૧-૮	૧૨-૪૪	૧૫-૫૮
૧૭	૬—૧૭	૧૯—૧૧	૭—૫	૯-૩૧	૧૧-૮	૧૨-૪૪	૧૫-૫૮
૧૮	૬—૧૮	૧૯—૧૦	૭—૬	૯-૩૧	૧૧-૮	૧૨-૪૪	૧૫-૫૭
૧૯	૬—૧૮	૧૯— ૯	૭—૬	૯-૩૧	૧૧-૭	૧૨-૪૪	૧૫-૫૬
૨૦	૬—૧૮	૧૯— ૮	૭—૬	૯-૩૧	૧૧-૭	૧૨-૪૩	૧૫-૫૬
૨૧	૬—૧૯	૧૯— ૭	૭—૭	૯-૩૧	૧૧-૭	૧૨-૪૩	૧૫-૫૫
૨૨	૬—૧૯	૧૯— ૬	૭—૭	૯-૩૧	૧૧-૭	૧૨-૪૩	૧૫-૫૫
૨૩	૬—૨૦	૧૯— ૫	૭—૮	૯-૩૨	૧૧-૭	૧૨-૪૩	૧૫-૫૪
૨૪	૬—૨૦	૧૯— ૪	૭—૮	૯-૩૨	૧૧-૭	૧૨-૪૨	૧૫-૫૩
૨૫	૬—૨૧	૧૯— ૪	૭—૮	૯-૩૨	૧૧-૭	૧૨-૪૨	૧૫-૫૩
૨૬	૬—૨૧	૧૯— ૩	૭—૯	૯-૩૨	૧૧-૭	૧૨-૪૨	૧૫-૫૩
૨૭	૬—૨૧	૧૯— ૨	૭—૯	૯-૩૨	૧૧-૭	૧૨-૪૨	૧૫-૫૨
૨૮	૬—૨૨	૧૯— ૧	૭—૯	૯-૩૨	૧૧-૭	૧૨-૪૧	૧૫-૫૧
૨૯	૬—૨૨	૧૯— ૦	૭—૧૦	૯-૩૨	૧૧-૭	૧૨-૪૧	૧૫-૫૧
૩૦	૬—૨૩	૧૯—૫૯	૭—૧૧	૯-૩૨	૧૧-૭	૧૨-૪૧	૧૫-૫૦
૩૧	૬—૨૩	૧૯—૫૮	૭—૧૧	૯-૩૨	૧૧-૭	૧૨-૪૧	૧૫-૫૦

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

સૂર્યોદય	સૂર્યાસ્ત	નવકારસી	પોરિસી	સાઢપોરિસી	પુરિમઢ્ઢ	અવઢ્ઢ
ક. મિ.	ક. મિ.	ક. મિ.	ક. મિ.	ક. મિ.	ક. મિ.	ક. મિ.
૬—૨૩	૧૮—૫૭	૭—૧૧	૯—૩૨	૧૧—૬	૧૨—૪૦	૧૫—૪૯
૬—૨૩	૧૮—૫૬	૭—૧૧	૯—૩૨	૧૧—૬	૧૨—૪૦	૧૫—૪૮
૬—૨૩	૧૮—૫૫	૭—૧૧	૯—૩૨	૧૧—૫	૧૨—૩૯	૧૫—૪૭
૬—૨૪	૧૮—૫૪	૭—૧૨	૯—૩૨	૧૧—૫	૧૨—૩૯	૧૫—૪૭
૬—૨૪	૧૮—૫૩	૭—૧૨	૯—૩૨	૧૧—૫	૧૨—૩૯	૧૫—૪૬
૬—૨૪	૧૮—૫૨	૭—૧૨	૯—૩૨	૧૧—૫	૧૨—૩૮	૧૫—૪૫
૬—૨૫	૧૮—૫૧	૭—૧૩	૯—૩૨	૧૧—૫	૧૨—૩૮	૧૫—૪૫
૬—૨૬	૧૮—૫૦	૭—૧૪	૯—૩૨	૧૧—૫	૧૨—૩૮	૧૫—૪૪
૬—૨૬	૧૮—૪૯	૭—૧૪	૯—૩૨	૧૧—૫	૧૨—૩૮	૧૫—૪૪
૬—૨૬	૧૮—૪૮	૭—૧૪	૯—૩૨	૧૧—૫	૧૨—૩૭	૧૫—૪૩
૬—૨૬	૧૮—૪૭	૭—૧૪	૯—૩૨	૧૧—૪	૧૨—૩૭	૧૫—૪૨
૬—૨૬	૧૮—૪૬	૭—૧૪	૯—૩૨	૧૧—૪	૧૨—૩૬	૧૫—૪૧
૬—૨૭	૧૮—૪૫	૭—૧૫	૯—૩૨	૧૧—૪	૧૨—૩૬	૧૫—૪૧
૬—૨૭	૧૮—૪૪	૭—૧૫	૯—૩૨	૧૧—૪	૧૨—૩૬	૧૫—૪૦
૬—૨૭	૧૮—૪૩	૭—૧૫	૯—૩૨	૧૧—૩	૧૨—૩૫	૧૫—૩૯
૬—૨૭	૧૮—૪૨	૭—૧૫	૯—૩૨	૧૧—૩	૧૨—૩૫	૧૫—૩૯
૬—૨૮	૧૮—૪૧	૭—૧૬	૯—૩૨	૧૧—૩	૧૨—૩૫	૧૫—૩૮
૬—૨૮	૧૮—૪૦	૭—૧૬	૯—૩૨	૧૧—૩	૧૨—૩૪	૧૫—૩૭
૬—૨૮	૧૮—૩૯	૭—૧૬	૯—૩૨	૧૧—૩	૧૨—૩૪	૧૫—૩૭
૬—૨૯	૧૮—૩૮	૭—૧૭	૯—૩૨	૧૧—૩	૧૨—૩૪	૧૫—૩૬
૬—૨૯	૧૮—૩૭	૭—૧૭	૯—૩૨	૧૧—૩	૧૨—૩૩	૧૫—૩૫
૬—૩૦	૧૮—૩૬	૭—૧૮	૯—૩૨	૧૧—૩	૧૨—૩૩	૧૫—૩૫
૬—૩૦	૧૮—૩૫	૭—૧૮	૯—૩૨	૧૧—૨	૧૨—૩૩	૧૫—૩૪
૬—૩૦	૧૮—૩૪	૭—૧૮	૯—૩૨	૧૧—૨	૧૨—૩૨	૧૫—૩૩
૬—૩૦	૧૮—૩૩	૭—૧૮	૯—૩૨	૧૧—૨	૧૨—૩૨	૧૫—૩૩
૬—૩૧	૧૮—૩૨	૭—૧૯	૯—૩૨	૧૧—૨	૧૨—૩૨	૧૫—૩૨
૬—૩૧	૧૮—૩૧	૭—૧૯	૯—૩૨	૧૧—૧	૧૨—૩૧	૧૫—૩૧
૬—૩૧	૧૮—૩૦	૭—૧૯	૯—૩૨	૧૧—૧	૧૨—૩૧	૧૫—૩૧
૬—૩૨	૧૮—૨૯	૭—૨૦	૯—૩૨	૧૧—૧	૧૨—૩૧	૧૫—૩૦
૬—૩૨	૧૮—૨૮	૭—૨૦	૯—૩૧	૧૧—૧	૧૨—૩૦	૧૫—૨૯

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

તા.	સૂર્યોદય ક. મિ.	સૂર્યાસ્ત ક. મિ.	નવકારસી ક. મિ.	પોરિસી ક. મિ.	સાઢપોરિસી ક. મિ.	પુરિમઢ્ઢ ક. મિ.	અવઢ્ઢ ક. મિ.
૧	૬–૩૩	૧૮–૨૭	૭–૨૧	૯–૩૨	૧૧–૧	૧૨–૩૦	૧૫–૨૯
૨	૬–૩૩	૧૮–૨૬	૭–૨૧	૯–૩૨	૧૧–૧	૧૨–૩૦	૧૫–૨૮
૩	૬–૩૩	૧૮–૨૫	૭–૨૧	૯–૩૨	૧૧–૦	૧૨–૨૯	૧૫–૨૭
૪	૬–૩૩	૧૮–૨૪	૭–૨૧	૯–૩૨	૧૧–૦	૧૨–૨૯	૧૫–૨૭
૫	૬–૩૪	૧૮–૨૩	૭–૨૨	૯–૩૨	૧૧–૦	૧૨–૨૯	૧૫–૨૬
૬	૬–૩૪	૧૮–૨૨	૭–૨૨	૯–૩૨	૧૧–૦	૧૨–૨૮	૧૫–૨૫
૭	૬–૩૪	૧૮–૨૨	૭–૨૨	૯–૩૨	૧૧–૦	૧૨–૨૮	૧૫–૨૫
૮	૬–૩૪	૧૮–૨૧	૭–૨૨	૯–૩૨	૧૧–૦	૧૨–૨૮	૧૫–૨૫
૯	૬–૩૫	૧૮–૨૦	૭–૨૩	૯–૩૨	૧૧–૦	૧૨–૨૮	૧૫–૨૪
૧૦	૬–૩૫	૧૮–૧૯	૭–૨૩	૯–૩૨	૧૧–૦	૧૨–૨૭	૧૫–૨૩
૧૧	૬–૩૬	૧૮–૧૮	૭–૨૪	૯–૩૨	૧૧–૦	૧૨–૨૭	૧૫–૨૩
૧૨	૬–૩૬	૧૮–૧૭	૭–૨૪	૯–૩૨	૧૧–૦	૧૨–૨૭	૧૫–૨૨
૧૩	૬–૩૭	૧૮–૧૬	૭–૨૫	૯–૩૨	૧૧–૦	૧૨–૨૭	૧૫–૨૨
૧૪	૬–૩૭	૧૮–૧૫	૭–૨૫	૯–૩૨	૧૦–૫૯	૧૨–૨૬	૧૫–૨૧
૧૫	૬–૩૭	૧૮–૧૪	૭–૨૫	૯–૩૨	૧૦–૫૯	૧૨–૨૬	૧૫–૨૧
૧૬	૬–૩૮	૧૮–૧૩	૭–૨૬	૯–૩૨	૧૦–૫૯	૧૨–૨૬	૧૫–૨
૧૭	૬–૩૮	૧૮–૧૩	૭–૨૬	૯–૩૨	૧૦–૫૯	૧૨–૨૬	૧૫–૨
૧૮	૬–૩૯	૧૮–૧૨	૭–૨૭	૯–૩૩	૧૦–૫૯	૧૨–૨૬	૧૫–૧
૧૯	૬–૩૯	૧૮–૧૧	૭–૨૭	૯–૩૩	૧૦–૫૯	૧૨–૨૫	૧૫–૧
૨૦	૬–૩૯	૧૮–૧૦	૭–૨૭	૯–૩૩	૧૦–૫૯	૧૨–૨૫	૧૫–૧
૨૧	૬–૪૦	૧૮–૯	૭–૨૮	૯–૩૩	૧૦–૫૯	૧૨–૨૫	૧૫–૧
૨૨	૬–૪૧	૧૮–૮	૭–૨૯	૯–૩૩	૧૦–૫૯	૧૨–૨૫	૧૫–
૨૩	૬–૪૧	૧૮–૭	૭–૨૯	૯–૩૩	૧૦–૫૯	૧૨–૨૫	૧૫–
૨૪	૬–૪૨	૧૮–૭	૭–૩૦	૯–૩૪	૧૦–૫૯	૧૨–૨૫	૧૫–
૨૫	૬–૪૨	૧૮–૬	૭–૩૦	૯–૩૪	૧૦–૫૯	૧૨–૨૪	૧૫–
૨૬	૬–૪૩	૧૮–૫	૭–૩૧	૯–૩૪	૧૦–૫૯	૧૨–૨૪	૧૫–
૨૭	૬–૪૩	૧૮–૫	૭–૩૧	૯–૩૪	૧૦–૫૯	૧૨–૨૪	૧૫–
૨૮	૬–૪૩	૧૮–૪	૭–૩૧	૯–૩૪	૧૦–૫૯	૧૨–૨૪	૧૫·
૨૯	૬–૪૪	૧૮–૩	૭–૩૨	૯–૩૪	૧૦–૫૯	૧૨–૨૪	૧૫·
૩૦	૬–૪૫	૧૮–૨	૭–૩૩	૯–૩૫	૧૦–૫૯	૧૨–૨૪	૧૫
૩૧	૬–૪૫	૧૮–૨	૭–૩૩	૯–૩૫	૧૦–૫૯	૧૨–૨૪	૧૫

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

તા.	સૂર્યોદય ક. મિ.	સૂર્યાસ્ત ક. મિ.	નવકારસી ક. મિ.	પોરિસી ક. મિ.	સાઢપોરિસી ક. મિ.	પુરિમઢ્ઢ ક. મિ.	અવઢ્ઢ ક. મિ.
૧	૬—૪૬	૧૮—૧	૭—૩૪	૯—૩૫	૧૧—૦	૧૨—૨૪	૧૫—૧૩
૨	૬—૪૭	૧૮—૧	૭—૩૫	૯—૩૬	૧૧—૦	૧૨—૨૪	૧૫—૧૩
૩	૬—૪૭	૧૮—૦	૭—૩૫	૯—૩૬	૧૧—૦	૧૨—૨૪	૧૫—૧૨
૪	૬—૪૮	૧૮—૦	૭—૩૬	૯—૩૬	૧૧—૦	૧૨—૨૪	૧૫—૧૨
૫	૬—૪૮	૧૭—૫૯	૭—૩૬	૯—૩૬	૧૧—૦	૧૨—૨૪	૧૫—૧૨
૬	૬—૪૯	૧૭—૫૯	૭—૩૭	૯—૩૭	૧૧—૧	૧૨—૨૪	૧૫—૧૨
૭	૬—૪૯	૧૭—૫૮	૭—૩૭	૯—૩૭	૧૧—૧	૧૨—૨૪	૧૫—૧૧
૮	૬—૫૦	૧૭—૫૮	૭—૩૮	૯—૩૭	૧૧—૧	૧૨—૨૪	૧૫—૧૧
૯	૬—૫૦	૧૭—૫૭	૭—૩૮	૯—૩૭	૧૧—૧	૧૨—૨૪	૧૫—૧૧
૧૦	૬—૫૧	૧૭—૫૭	૭—૩૯	૯—૩૮	૧૧—૧	૧૨—૨૪	૧૫—૧૧
૧૧	૬—૫૧	૧૭—૫૭	૭—૩૯	૯—૩૮	૧૧—૧	૧૨—૨૪	૧૫—૧૧
૧૨	૬—૫૨	૧૭—૫૬	૭—૪૦	૯—૩૮	૧૧—૧	૧૨—૨૪	૧૫—૧૧
૧૩	૬—૫૩	૧૭—૫૬	૭—૪૧	૯—૩૯	૧૧—૨	૧૨—૨૫	૧૫—૧૧
૧૪	૬—૫૪	૧૭—૫૬	૭—૪૨	૯—૪૦	૧૧—૩	૧૨—૨૫	૧૫—૧૧
૧૫	૬—૫૫	૧૭—૫૫	૭—૪૩	૯—૪૦	૧૧—૩	૧૨—૨૫	૧૫—૧૦
૧૬	૬—૫૫	૧૭—૫૫	૭—૪૩	૯—૪૦	૧૧—૩	૧૨—૨૫	૧૫—૧૦
૧૭	૬—૫૬	૧૭—૫૪	૭—૪૪	૯—૪૧	૧૧—૩	૧૨—૨૫	૧૫—૧૦
૧૮	૬—૫૬	૧૭—૫૪	૭—૪૪	૯—૪૧	૧૧—૩	૧૨—૨૫	૧૫—૧૦
૧૯	૬—૫૭	૧૭—૫૪	૭—૪૫	૯—૪૨	૧૧—૪	૧૨—૨૬	૧૫—૧૦
૨૦	૬—૫૮	૧૭—૫૪	૭—૪૬	૯—૪૨	૧૧—૪	૧૨—૨૬	૧૫—૧૦
૨૧	૬—૫૮	૧૭—૫૩	૭—૪૬	૯—૪૨	૧૧—૪	૧૨—૨૬	૧૫—૧૦
૨૨	૬—૫૯	૧૭—૫૩	૭—૪૭	૯—૪૩	૧૧—૫	૧૨—૨૬	૧૫—૧૦
૨૩	૬—૫૯	૧૭—૫૩	૭—૪૭	૯—૪૩	૧૧—૫	૧૨—૨૬	૧૫—૧૦
૨૪	૭—૦	૧૭—૫૩	૭—૪૮	૯—૪૪	૧૧—૫	૧૨—૨૭	૧૫—૧૦
૨૫	૭—૧	૧૭—૫૩	૭—૪૯	૯—૪૪	૧૧—૬	૧૨—૨૭	૧૫—૧૦
૨૬	૭—૨	૧૭—૫૩	૭—૫૦	૯—૪૫	૧૧—૭	૧૨—૨૮	૧૫—૧૦
૨૭	૭—૩	૧૭—૫૨	૭—૫૧	૯—૪૬	૧૧—૭	૧૨—૨૮	૧૫—૧૦
૨૮	૭—૩	૧૭—૫૨	૭—૫૧	૯—૪૬	૧૧—૭	૧૨—૨૮	૧૫—૧૦
૨૯	૭—૪	૧૭—૫૨	૭—૫૨	૯—૪૬	૧૧—૭	૧૨—૨૮	૧૫—૧૦
૩૦	૭—૫	૧૭—૫૨	૭—૫૩	૯—૪૭	૧૧—૮	૧૨—૨૯	૧૫—૧૧

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

સૂર્યોદય સૂર્યાસ્ત નવકારસી પોરિસી સાઢપોરિસી પુરિમઢ્ઢ અવઢ્ઢ

તા.	ક. મિ.	ક. મિ.	ક. મિ.	ક. મિ.	ક. મિ.	ક. મિ.	ક. મિ
૧	૭–૫	૧૭–૫૨	૭–૫૩	૯–૪૭	૧૧–૮	૧૨–૨૯	૧૫–૧૧
૨	૭–૬	૧૭–૫૩	૭–૫૪	૯–૪૮	૧૧–૯	૧૨–૩૦	૧૫–૧૨
૩	૭–૭	૧૭–૫૩	૭–૫૫	૯–૪૯	૧૧–૧૦	૧૨–૩૦	૧૫–૧૨
૪	૭–૭	૧૭–૫૩	૭–૫૫	૯–૪૯	૧૧–૧૦	૧૨–૩૦	૧૫–૧૨
૫	૭–૮	૧૭–૫૩	૭–૫૬	૯–૫૦	૧૧–૧૦	૧૨–૩૧	૧૫–૧૨
૬	૭–૯	૧૭–૫૩	૭–૫૭	૯–૫૦	૧૧–૧૧	૧૨–૩૧	૧૫–૧૨
૭	૭–૯	૧૭–૫૩	૭–૫૭	૯–૫૦	૧૧–૧૧	૧૨–૩૧	૧૫–૧૨
૮	૭–૧૦	૧૭–૫૪	૭–૫૮	૯–૫૧	૧૧–૧૨	૧૨–૩૨	૧૫–૧૩
૯	૭–૧૦	૧૭–૫૪	૭–૫૮	૯–૫૧	૧૧–૧૨	૧૨–૩૨	૧૫–૧૩
૧૦	૭–૧૧	૧૭–૫૪	૭–૫૯	૯–૫૨	૧૧–૧૩	૧૨–૩૩	૧૫–૧૪
૧૧	૭–૧૨	૧૭–૫૫	૮–૦	૯–૫૩	૧૧–૧૪	૧૨–૩૪	૧૫–૧૫
૧૨	૭–૧૨	૧૭–૫૫	૮–૦	૯–૫૩	૧૧–૧૪	૧૨–૩૪	૧૫–૧૫
૧૩	૭–૧૩	૧૭–૫૫	૮–૧	૯–૫૪	૧૧–૧૪	૧૨–૩૪	૧૫–૧૫
૧૪	૭–૧૩	૧૭–૫૬	૮–૧	૯–૫૪	૧૧–૧૫	૧૨–૩૫	૧૫–૧૬
૧૫	૭–૧૪	૧૭–૫૬	૮–૨	૯–૫૫	૧૧–૧૫	૧૨–૩૫	૧૫–૧૬
૧૬	૭–૧૫	૧૭–૫૬	૮–૩	૯–૫૬	૧૧–૧૬	૧૨–૩૬	૧૫–૧૬
૧૭	૭–૧૫	૧૭–૫૭	૮–૩	૯–૫૬	૧૧–૧૬	૧૨–૩૬	૧૫–૧૭
૧૮	૭–૧૬	૧૭–૫૭	૮–૪	૯–૫૭	૧૧–૧૭	૧૨–૩૭	૧૫–૧૭
૧૯	૭–૧૬	૧૭–૫૮	૮–૪	૯–૫૭	૧૧–૧૭	૧૨–૩૭	૧૫–૧૮
૨૦	૭–૧૭	૧૭–૫૮	૮–૫	૯–૫૮	૧૧–૧૮	૧૨–૩૭	૧૫–૧૮
૨૧	૭–૧૭	૧૭–૫૯	૮–૫	૯–૫૮	૧૧–૧૮	૧૨–૩૮	૧૫–૧૯
૨૨	૭–૧૮	૧૭–૫૯	૮–૬	૯–૫૯	૧૧–૧૯	૧૨–૩૯	૧૫–૧૯
૨૩	૭–૧૯	૧૮–૦	૮–૭	૧૦–૦	૧૧–૨૦	૧૨–૪૦	૧૫–૨૦
૨૪	૭–૧૯	૧૮–૦	૮–૭	૧૦–૦	૧૧–૨૦	૧૨–૪૦	૧૫–૨૦
૨૫	૭–૨૦	૧૮–૧	૮–૮	૧૦–૧	૧૧–૨૧	૧૨–૪૧	૧૫–૨૧
૨૬	૭–૨૧	૧૮–૧	૮–૯	૧૦–૧	૧૧–૨૧	૧૨–૪૧	૧૫–૨૧
૨૭	૭–૨૧	૧૮–૨	૮–૯	૧૦–૨	૧૧–૨૨	૧૨–૪૨	૧૫–૨૨
૨૮	૭–૨૨	૧૮–૨	૮–૧૦	૧૦–૨	૧૧–૨૨	૧૨–૪૨	૧૫–૨૨
૨૯	૭–૨૨	૧૮–૩	૮–૧૦	૧૦–૩	૧૧–૨૩	૧૨–૪૩	૧૫–૨૩
૩૦	૭–૨૨	૧૮–૩	૮–૧૦	૧૦–૩	૧૧–૨૩	૧૨–૪૩	૧૫–૨૩
૩૧	૭–૨૨	૧૮–૪	૮–૧૦	૧૦–૩	૧૧–૨૩	૧૨–૪૩	૧૫–૨૩

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org